बिहार सरकार

जीविका

सुपौल जिला में जीविका के बढ़ते कदम

नई सुबह

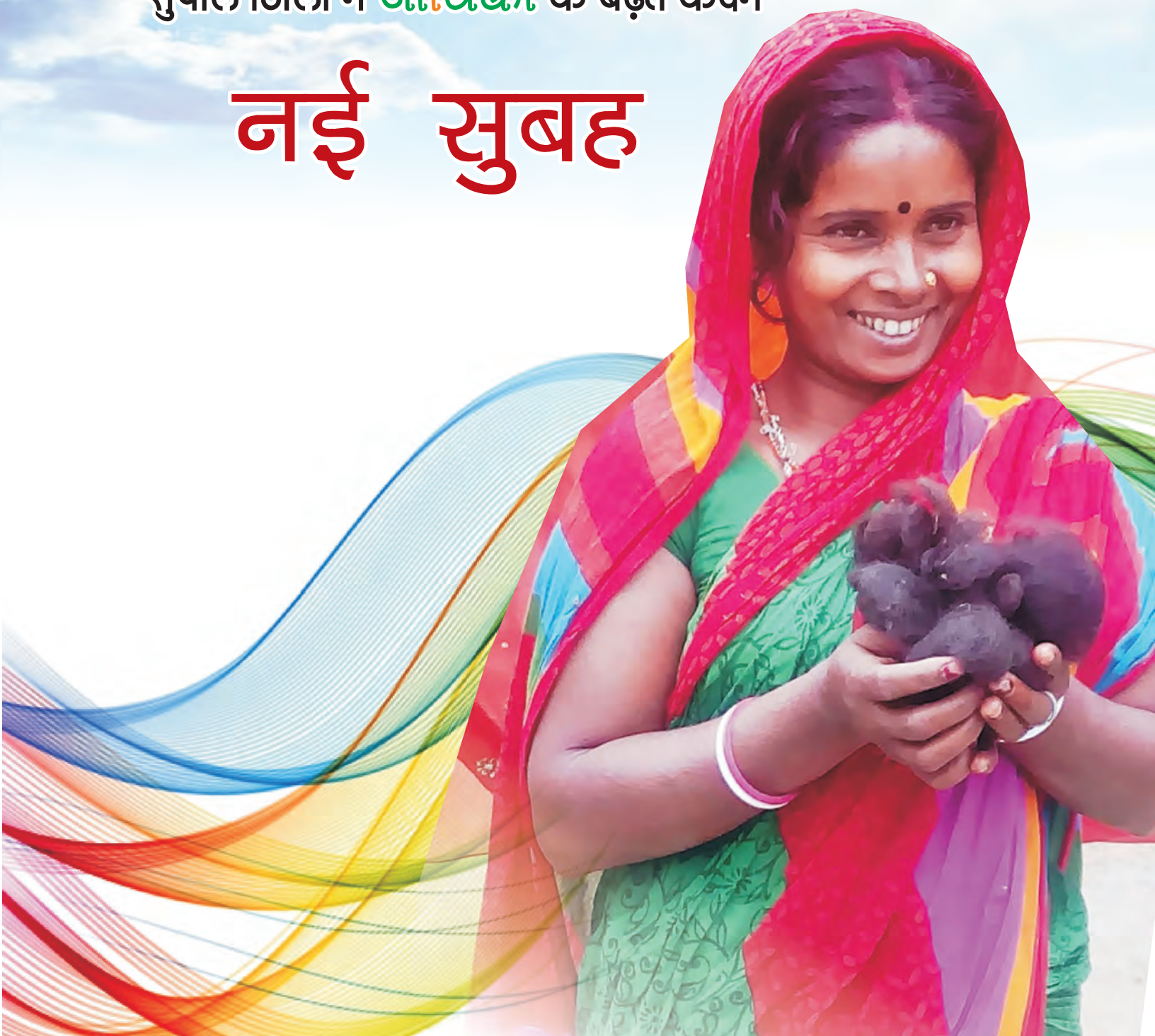

सुपौल जिला में जीविका के बढ़ते कदम

नई सुबह

जीविका

(गरीबी निवारण हेतु बिहार सरकार की पहल)

बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति

मार्गदर्शन	:	श्री बालामुरूगन डी., मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी
निर्देशन	:	श्रीमति महुआ राय चौधरी (परियोजना समन्वयक – गवर्नेंस एवं नॉलेज मैनेजमेंट)
		श्री अमर शेखर पाठक (जिला परियोजना प्रबंधक –सुपौल)
संकलन एवं संपादन	:	श्री पवन कुमार प्रियदर्शी (परियोजना प्रबंधक–संचार)
		श्री विकास कुमार राव (प्रबंधक – संचार)
रूपरेखा	:	श्रीमति प्रिया प्रियदर्शी, डी.टी.पी. ऑपरेटर–सह–डिजाइनर
प्रकाशक	:	जीविका जिला परियोजना समन्वयन इकाई – सुपौल, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, बिहार

श्री बालामुरुगन डी.
मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी, जीविका
सह राज्य मिशन निदेशक

संदेश

'सुपौल जिला में जीविका के बढ़ते कदम' नामक पुस्तिका सुपौल जिला जीविका टीम के समन्वित प्रयास का परिणाम है। पुस्तिका में उपलब्ध सामग्री का अवलोकन करने से यह स्पष्ट है कि आँकड़ों एवं तथ्यों के संकलन में पर्याप्त सावधानी बरती गयी है और यह संकलन इस जिला में जीविका की अबतक की यात्रा का प्रामाणिक दस्तावेज है। जीविका से सम्बद्ध महिलाओं के उत्साह एवं उनकी उपलब्धि को रेखांकित करती हुई कुछ वास्तविक कहानियाँ प्रेरणाप्रद हैं जो विश्वास दिलाती हैं कि संकल्प के प्रति समर्पण लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में सबसे बड़ा संबल है।

जन जीवन में खुशहाली लाने की दिशा में जीविका का अभियान सतत् गतिशील रहे– यही हमारी कामना है।

(बालामुरुगन डी0)

श्री बैद्यनाथ यादव
जिला पदाधिकारी,
सुपौल

संदेश

'सुपौल जिले में जीविका का व्यापक प्रसार हो रहा है। जिले की करीब डेढ़ लाख महिलाएँ आज जीविका समूह से जुड़ चुकी हैं। समूहों के माध्यम से गाँव की गरीब महिलाओं में सामाजिक जागरूकता आई है और इससे सरकार की सामाजिक योजनाओं को आखिरी पायदान पर बैठे लोगों तक पहुँचाने में मदद मिल रही है। वे अब गरीबी और अन्य बाधाओं को पार करते हुए विकास की राह पर अग्रसर हैं। इन्हीं में से कुछ चुनिंदा महिलाओं की सफलता की कहानी पर आधारित किताब का प्रस्तुतिकरण किया जा रहा है। इस अवसर पर 'जीविका सुपौल' को हमारी शुभकामनायें। हमें विश्वास है कि इस पुस्तक में शामिल सफल महिलाओं की कहानी सुपौल की अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणास्रोत साबित होगी।

शुभकामना सहित

(बैधनाथ यादव)

श्री अमर शेखर पाठक
जिला परियोजना प्रबंधक
जीविका

संदेश

'सुपौल की गरीब दीदियों ने जीविका से जुड़कर अपनी आय को बढ़ाया और अपनी आर्थिक एवं सामाजिक हैसियत को हर तरह से संवारा है, यह अपने आप में एक अद्‌भुत उदाहरण है। हमने उनके द्वारा किय गये प्रयासों को इस पुस्तक के माध्यम से आपके समझ प्रस्तुत किया है। इसमें सभी क्षेत्रों में दीदियों द्वारा किये गये जीवन–यापन संबंधी आर्थिक गतिविधियों में से कुछ चुनिंदा उदाहरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इससे आपको वस्तुस्थिति का सहज अनुमान लग सकता है कि कितनी दीदियों को फायदा हो रहा होगा।

जीविका को इस मुकाम तक पहुँचाने में सचिव, ग्रामीण विकास विभाग एवं जीविका के पूर्व मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी, श्री अरविन्द कुमार चौधरी सर का अविस्मरणीय योगदान रहा है। वहीं जीविका के वर्त्तमान मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी, श्री बालामुरुगन डी. सर इसे और तीव्र गति से आगे बढ़ा रहे है।

इस पुस्तक को वर्त्तमान स्वरूप में लाने के लिए विशेष कार्य पदाधिकारी, श्री ब्रज किशोर पाठक सर का मैं अनुगृहीत हूँ, जिन्होंने समय–समय पर यथोचित दिशा–निर्देश दिया एवं अंतिम रूप से इसे संपादित करने का श्रमसाध्य कार्य किया। इस पुस्तक में तथ्यों के संकलन एवं प्रस्तुति में सुपौल के संचार प्रबंधक श्री विकास कुमार राव का योगदान प्रशसनीय एवं अनुकरणीय है।

अमर शेखर पाठक

(अमर शेखर पाठक)

विषय सूची

विषय	पेज संख्या
सुपौल : एक संक्षिप्त इतिहास	01
जीविका : एक परिचय	02
सुपौल में जीविका की उपलब्धि	06
सामुदायिक संसाधसेवी	08
उन्नत विधि से खेती	12
पशुपालन : सही मायने में महिलाओं का आर्थिक स्वाबलंबन	20
गाँव की नारी बन गयी कारोबारी	24
आजीविका का नया द्वार	40
मुख्यमंत्री कोसी मलवरी योजना के तहत खेती	47
मुर्गी पालन हेतु 11 मदर यूनिट की स्थापना	53
युवाओं का कौशल विकास	56
रोजगार आपके द्वार	58
बचत से महिलाओं में आयी आर्थिक आत्मनिर्भरता	59
समूह की महिलाएँ कर रहीं खातों का लेखांकन	62
सामुदायिक स्वास्थ्य एवं पोषण सेवा केन्द्र	66
खुले में शौच मुक्त अभियान	67
हमारा गाँव हमारी योजना	68

सुपौल : एक सांस्कृतिक परिचय

ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण से सुपौल का स्वर्णिम इतिहास रहा है। प्राचीन मिथिला का यह क्षेत्र वैदिक काल से लेकर आजतक चर्चित रहा है। महाभारत काल में मत्स्य क्षेत्र कहलाने वाला यह क्षेत्र बौद्ध युग में दो प्रसिद्ध गणतंत्र अंगुत्तराप एवं आपणनिगम की स्थापना के लिए प्रसिद्ध है। बौद्ध ग्रंथ 'मज्झिम निकाय' तथा 'थेरगाथा' में इन दोनों क्षेत्रों का वर्णन है। सैकड़ों बाजारों सहित यह क्षेत्र सिमरी बख्तियारपुर से सुपौल तक फैला हुआ था, जहाँ महात्मा बुद्ध करीब एक महीने तक ठहरे थे। पालवंश के समय इस क्षेत्र में करीब 200 वर्षों तक बौद्ध धर्म का प्रचार–प्रसार हुआ, जिसके स्मृति चिह्न मंदिरों की मूर्तियों और लोकगाथाओं में आज भी बिखरे पड़े हैं। यहाँ सैकड़ों वर्षों तक पालवंश का शासन रहा, अतः इस राज्य का नाम 'सु–पाल' पड़ा, जो कि आगे चलकर ''सुपौल'' के नाम से चर्चित हुआ। कहा जाता है कि इस क्षेत्र से कभी भगवान महावीर भी गुजरे थे। 484 ई. पूर्व बिम्बिसार के पुत्र अजात शत्रु द्वारा वैशाली पर कब्जा जमाने के बावजूद सुपौल का स्वतंत्र अस्तित्व बना रहा। हालांकि बाद में सुपौल जिला क्षेत्र सहित पूरा उत्तर बिहार नंद, मौर्य, शुंग और मिथिला राजाओं के अधीन रहा और उसके पतन के बाद मुस्लिम तथा मुगल शासकों और फिर बाद में अंग्रेजी साम्राज्य का अंग बन गया।

अंग्रेजों द्वारा बंगाल पर आधिपत्य जमाने के उपरान्त इस क्षेत्र में कई परिवर्त्तन हुए। 1793 ई. में तिरहुत के कुछ गाँवों को भागलपुर में मिलाया गया। 1838 ई. में नारेदिगर, मल्हनी गोपाल तथा निःशंकरपुर कूढ़ा– इन तीनों परगनाओं को तिरहुत से काटकर भागलपुर से जोड़ा गया। सुपौल के प्रशासनिक एवं सामरिक महत्त्व को देखते हुए अंग्रेजों ने सन 1870 ई. में इसे अनुमंडल बनाया। वहीं तकरीबन 121 वर्षों तक अनुमंडल रहने के बाद इसे 14 मार्च 1991 को जिला का स्वरूप दे दिया गया। निर्मली से तीन मील पूरब एकडारा गाँव में फिरोजशाह तुगलक का बुर्ज था, जिसे अभी बुर्जा कहा जाता है। सुपौल से सटे हरदी गाँव से ही पालवंशी राजा गोपाल ने कुछ वर्षों तक समस्त मिथिला पर शासन किया था। संभव है कि हरदी गाँव पालवंशी राजाओं की उप राजधानी रही हो। इस प्रकार कोसी के इस क्षेत्र का इतिहास अत्यन्त समृद्ध रहा है। यहाँ की जनता सरल, सबल एवं उदारवादी भावनाओं से युक्त है। प्रकृति ने भी इसे अत्यंत समृद्ध बनाया है। कोसी नदी की असीम जलधारा यहाँ की जमीन के भीतर प्रवाहित हो रही है।

सुपौल की वर्तमान प्रशासनिक स्थिति

अनुमंडल	04 – सुपौल सदर, वीरपुर, निर्मली तथा त्रिवेणीगंज
प्रखण्ड	11 – सुपौल, किसनपुर, पिपरा, त्रिवेणीगंज, छातापुर, राघोपुर, बसंतपुर, निर्मली, मरौना, सरायगढ़ भपटियाही एवं प्रतापगंज
क्षेत्रफल	2,37,400.82 हैक्टेयर
जनसंख्या	2011 की जनगणना के अनुसार 22,28,076, इसमें पुरुषों की आबादी –11,55,283 एवं महिलाओं की आबादी 10,73,793

कुल आबादी का 95.26 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में और महज 4.74 प्रतिशत लोग शहरी क्षेत्रों में निवास करते हैं।

जीविका : एक परिचय

बिहार के उत्तर पूर्व में स्थित कोसी क्षेत्र लगातार प्राकृतिक आपदाओं की मार झेलता रहा है। इस वजह से यहाँ बुनियादी सुविधाएं और जीविकोपार्जन से जुड़ी गतिविधियाँ सुचारू रूप से कार्यान्वित नहीं हो पा रही थी। वर्ष 2008 में भी कुशहा बांध टूटने के कारण पूरा कोसी क्षेत्र प्रलयकारी बाढ़ की चपेट में आ गया था। इससे यहाँ जान–माल की भारी क्षति हुई, जिसका असर खेतो एवं पशुओं पर भी दिखा। पहले से ही गरीबी की मार झेल रहे कोसीवासियों के लिए जीवनयापन कर पाना बहुत कठिन था। ऐसे में बड़ी संख्या में गरीब परिवार रोजी–रोटी की तलाश में सुपौल से दूसरे प्रदेशों की ओर पलायन करने लगे।

जीविका की शुरुआत

स्थिति की गंभीरता को देखते हुए बिहार सरकार ने विश्व बैंक सम्पोषित कोसी फ्लड रिकवरी प्रोजेक्ट की शुरुआत की थी। इसके तहत एक ओर जहाँ भवन निर्माण एवं यातायात के साधनों के विकास का जिम्मा उक्त प्रोजेक्ट ने अपने पास रखा वहीं जीविकोपार्जन की पुनर्प्राप्ति एवं सामुदायिक विकास का कार्य 'जीविका' को सौंपा गया। इसी योजना के तहत सुपौल जिले में जीविका परियोजना की शुरुआत की गई। 2008 में आयी कोसी के बाढ़ में बुरी तरह तबाह हुए जिले के छातापुर प्रखंड में 2 अक्टूबर 2009 को गांधी जयंती के मौके पर ''जीविका'' ने अपना पहला कदम रखा। छातापुर में काम शुरू करने के बाद इसमें सुपौल जिले के 03 अन्य प्रखंडों यथा प्रतापगंज, बसंतपुर और त्रिवेणीगंज में अपना विस्तार करते हुए जुलाई 2010 से अपने कार्यक्रमों की शुरुआत कर दी।

इन प्रखंडों में मिली सफलता को देखते हुए जिले के बाकी 7 प्रखंडों – सुपौल सदर, किसनपुर, सरायगढ़–भपटियाही, पिपरा, निर्मली, मरौना और राघोपुर को भी 01 मार्च 2014 से राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन (एस.आर.एल.एम.) के तहत कार्यान्वित किया गया। भारत सरकार द्वारा संचालित स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना को ही राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एन.आर.एल.एम.) के रूप में पूरे देश में लागू किया गया है। खास बात यह है कि पहले की योजना आपूर्ति आधारित थी जबकि नए रूप में शुरू किए गए राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन को मांग के आधार पर क्रियान्वित किया जा रहा है। इसके अलावा एस.जी.एस.वाई की व्यवस्थागत खामियों को भी इसमें दूर करने का प्रयास किया गया है।

चरण	समय	प्रखंड
प्रथम चरण	02 अक्टूबर 2009	छातापुर
द्वितीय चरण	01 जुलाई 2010	बसंतपुर, त्रिवेणीगंज, प्रतापगंज
तृतीय चरण	01 मार्च 2014	निर्मली, सरायगढ़–भपटियाही, मरौना, राघोपुर, किसनपुर, पिपरा एवं सुपौल सदर

उद्देश्य एवं कार्यप्रणाली

जीविका का मूल उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र की गरीब महिलाओं को स्थायी आजीविका उपलब्ध कराते हुए उन्हें सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से सशक्त बनाना है ताकि वे गरीबी के दुष्चक्र से बाहर निकल सकें। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु जीविका द्वारा सर्वप्रथम गाँवों का सामाजिक एवं आर्थिक आकलन करने के बाद एक समान स्तर की 10 से 15 गरीब एवं अत्यंत गरीब महिलाओं को मिलाकर एक स्वयं सहायता समूह (एस.एच.जी.) का गठन किया जाता है। यह समूह इनके लिए एक मंच प्रदान करता है, जहाँ उनमें विभिन्न सामजिक एवं आर्थिक मुद्दों को लेकर समझ पैदा होती है और इससे उन्हें अपने जीवन स्तर में बदलाव लाने में मदद मिलती है।

समूह का गठन होने के बाद सदस्यों को विभिन्न मॉड्यूल्स का प्रशिक्षण दिया जाता है। पहले मॉड्यूल के अंतर्गत गरीबी, गरीबी का दुष्चक्र, इससे बाहर निकलने के रास्ते और स्वयं सहायता समूह की आवश्यकता आदि के बारे में बताया जाता है। इसी तरह दूसरे मॉड्यूल के तहत समूह की बैठक की प्रक्रिया, एजेंडा, समूह के नियम, बचत, लेन–देन आदि की जानकारी दी जाती है। बैठक की प्रक्रिया में प्रार्थना व परिचय जैसे विषय शामिल हैं। समूह की सदस्यों के द्वारा आपसी परिचय से वे एक दूसरे को अच्छी तरह जान–समझ पाती हैं और उनमें आपसी विश्वास एवं एकता का वातावरण पैदा होता है। साथ ही उनमें दूसरों के सामने अपनी बातें रखने की क्षमता भी विकसित होती है।

मॉड्यूल तीन में नेतृत्व का महत्त्व, इसकी जिम्मेदारी और बुक्स ऑफ रिकॉर्ड की महत्ता आदि पर प्रशिक्षण दिया जाता है। इसके बाद चौथे मॉड्यूल में समूह के कार्यों की सीमाएं एवं ग्राम संगठन की आवश्यकता के बारे में बताया जाता है। इसके अतिरिक्त महिलाओं को नियमित रूप से स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वच्छता के अलावा विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी उपलब्ध कराई जाती है। इन प्रशिक्षणों एवं जानकारियों से महिलाओं में जागरूकता एवं बौद्धिक क्षमता का स्तर बढ़ता है। परिणामस्वरूप आगे चलकर वे सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का समुचित लाभ मिलता हैं।

इसी तरह आर्थिक सशक्तीकरण की दिशा में जीविका महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ने के लिए प्रोत्साहित करती है। इसके लिए सबसे पहले उन्हें नियमित रूप से सामूहिक बचत के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। महिलाएँ अपनी सीमित आय में से जरूरी राशि बचाकर समूह स्तर पर एक समान बचत करती हैं। इसके बाद उनकी आवश्यकताओं और उनके पास उपलब्ध संसाधनों का आकलन किया जाता है एवं जरूरत के अनुरूप अतिरिक्त संसाधन मुहैया कराया जाता है ताकि वे अपने लिए कोई आजीविका शुरू कर सकें। इससे ग्रामीण स्तर पर उन्हें स्वरोजगार उपलब्ध कराने में मदद मिल रही है। जीविकोपार्जन से जुड़ी गतिविधियों में मुख्य रूप से कृषि, पशुपालन (गाय, भैंस या बकरी पालन), बैकयार्ड मुर्गी पालन, चाय, पान, सब्जी, अंडा, किराना, नाश्ते, मिठाई, कपड़े, चूड़ी आदि की छोटी दुकानें व अन्य प्रकार के छोटे–मोटे व्यवसाय शामिल हैं। इन गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के लिए जीविका प्रयास कर रही है ताकि ग्रामीण महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार लाया जा सके।

जीविका सम्पोषित स्वयं सहायता समूहों का जीवन चक्र

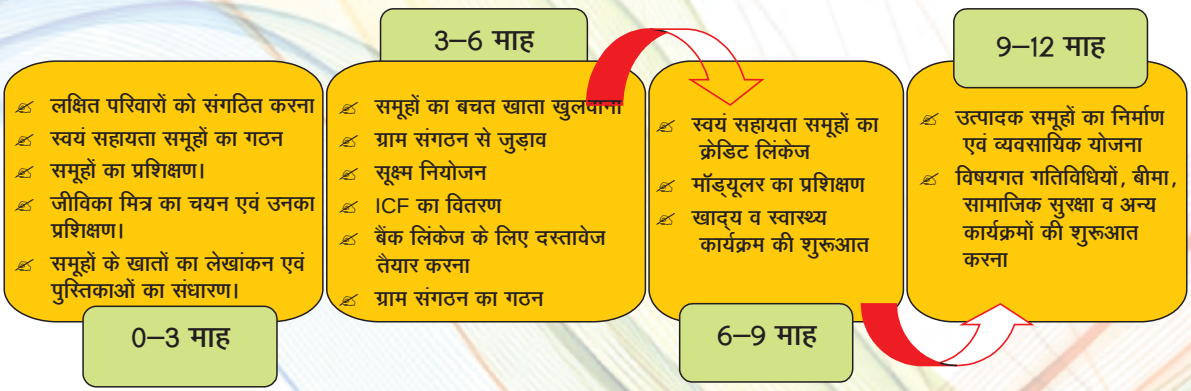

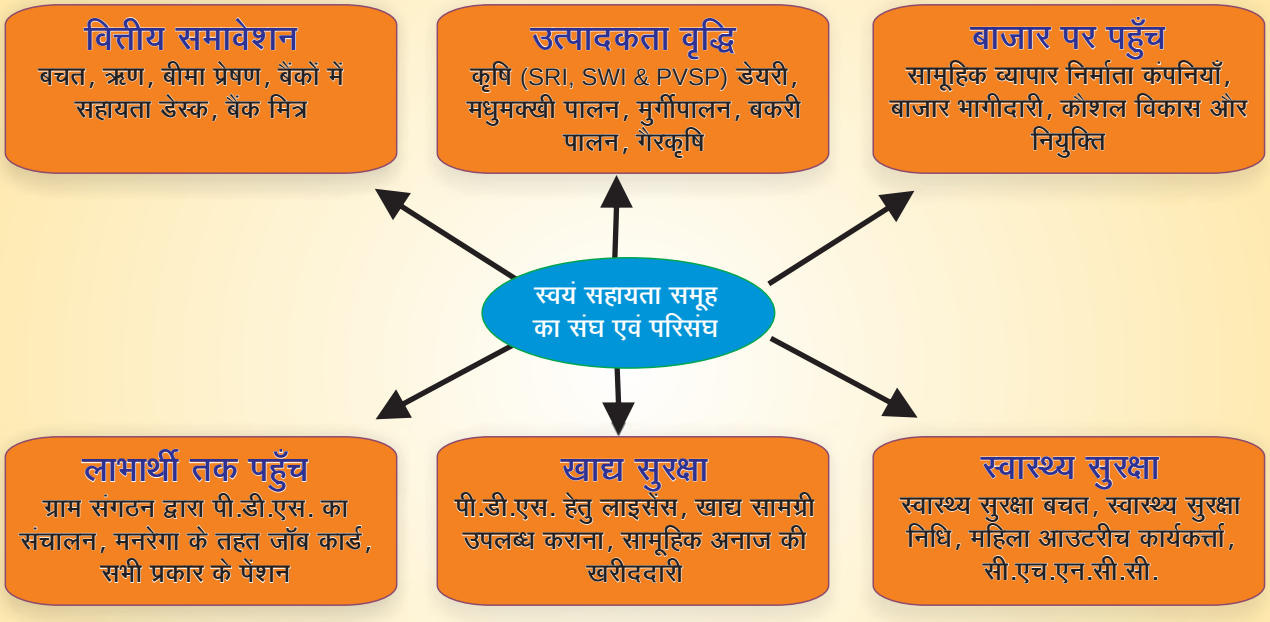

स्वयं सहायता समूह का संघ एवं परिसंघ

वित्तीय समावेशन
बचत, ऋण, बीमा प्रेषण, बैंकों में सहायता डेस्क, बैंक मित्र

उत्पादकता वृद्धि
कृषि (SRI, SWI & PVSP) डेयरी, मधुमक्खी पालन, मुर्गीपालन, बकरी पालन, गैरकृषि

बाजार पर पहुँच
सामूहिक व्यापार निर्माता कंपनियाँ, बाजार भागीदारी, कौशल विकास और नियुक्ति

लाभार्थी तक पहुँच
ग्राम संगठन द्वारा पी.डी.एस. का संचालन, मनरेगा के तहत जॉब कार्ड, सभी प्रकार के पेंशन

खाद्य सुरक्षा
पी.डी.एस. हेतु लाइसेंस, खाद्य सामग्री उपलब्ध कराना, सामूहिक अनाज की खरीददारी

स्वास्थ्य सुरक्षा
स्वास्थ्य सुरक्षा बचत, स्वास्थ्य सुरक्षा निधि, महिला आउटरीच कार्यकर्त्ता, सी.एच.एन.सी.सी.

ग्राम संगठन (वी.ओ.)

10 से 12 स्वयं सहायता समूहों को मिलाकर एक ग्राम संगठन का निर्माण किया जाता है। यह विभिन्न समूहों के बीच कड़ी का काम करता है तथा उन समूहों के कार्यकलाप पर निगरानी, समस्याओं का समाधान, पूंजी संग्रह और विकास योजनाओं को समूहों के सदस्यों तक पहुँचाने में सहयोग और समन्वय का काम करता है।

संकुल स्तरीय संघ (सी.एल.एफ.)

12 से 35 ग्राम संगठनों को मिलाकर एक संकुल स्तरीय संघ (सी.एल.एफ.) का गठन किया जाता है। यह ग्राम संगठनों को नेतृत्व प्रदान करता है एवं उनके बीच आपसी समन्वय स्थापित करता है। सीएलएफ सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं से संपर्क स्थापित कर ग्रामीण विकास से संबंधित कार्यक्रमों से ग्राम संगठन के सदस्यों को जोड़ता है और समन्वय स्थापित करता है।

सी.एल.एफ. का एक प्रमुख काम ग्राम संगठन स्तर पर माइक्रो–प्लानिंग कर उसे सक्षम आजीविका गतिविधियों से जोड़ने में सहायता प्रदान करना है। सी.एल.एफ. ग्राम संगठनों के लिए वार्षिक कार्य योजना तैयार करता है, जिससे परियोजना के मूल कार्यक्रमों को समुदाय के माध्यम से लागू किया जा सके। साथ ही यह ग्राम संगठनों में वित्तीय लेनदेन का अंकेक्षण करवाता है ताकि इसके काम काज में पारदर्शिता बरती जा सके। इस तरह सामुदायिक संगठन के स्तर पर सी.एल.एफ. के रूप में एक मजबूत निकाय की परिकल्पना की गई है।

सुपौल में जीविका की उपलब्धि

जिले के 523 गाँवों में से 337 गाँवों और 181 पंचायतों में से 137 पंचायतों में जीविका कार्यान्वित है। जून 2016 तक सुपौल जिले में कुल 11548 स्वयं सहायता समूहों का गठन किया गया है। इन समूहों से 134557 गरीब महिलाएँ जुड़ी हैं। वहीं 8333 समूहों को मिलाकर 801 ग्राम संगठनों का निर्माण किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त सुपौल जिले में अब तक कुल 12 संकुल स्तरीय संघ (सी.एल.एफ.) बन चुके हैं, जिससे 266 ग्राम संगठन जुड़े हुए हैं।

परियोजना द्वारा अब तक गठित कुल स्वयं सहायता समूहों में से जून 2016 तक 9,203 समूहों का बैंकों में खाता खुल चुका है और इनमें से 7,516 समूहों को जीविका परियोजना की तरफ से प्रारंभिक पूंजीकरण निधि (आई.सी.एफ.) हेतु राशि उपलब्ध कराई गई है। इसके अलावा 6,165 समूहों को बैंकों की ओर से ऋण उपलब्ध कराया गया है जिससे वे जीविकोपार्जन हेतु स्वरोजगार कर सकें। इतना ही नहीं 413 समूहों को बैंकों से ऋण की दूसरी किस्त भी प्राप्त हो चुकी है। दूसरी किस्त के रूप में बैंक समूहों को 1 से 1.50 लाख रुपये प्रदान करता है। इस तरह से सुपौल में बैंकों के द्वारा जीविका समूहों को अब तक 55 करोड़ रुपये से ज्यादा का ऋण प्रदान किया जा चुका है।

जीविकोपार्जन के क्षेत्र में जीविका मूलतः कृषि, गैर कृषि और कृषि से संबद्ध क्षेत्रों में स्वरोजगार बढ़ाने की दिशा में काम करती है। कृषि के क्षेत्र में परियोजना ने सुपौल में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। आंकड़ों के लिहाज से देखें तो लगभग 53,344 ग्रामीण परिवारों को खेती की उन्नत विधि से जोड़ा गया है। इसके तहत महिलाओं को धान की खेती के लिए SRI (एस.आर.आई.) विधि एवं गेहूँ की खेती के लिए SWI (एस.डब्ल्यू.आई.) विधि अपनाने के लिए सार्थक प्रयास किया गया है। इसी तरह सब्जियों के अधिक उत्पादन के लिए उन्हें मिश्रित खेती करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। समूह से जुड़ीं महिला किसानों को, जो आमतौर पर जमीन के बेहद छोटे टुकड़े में खेती करती हैं, उन्नत विधि अपनाने के लिए कई तरह के प्रोत्साहन भी दिये गये हैं। परिणामस्वरूप, बड़ी संख्या में समूह से जुड़ी महिलाएँ आधुनिक विधि से खेती करने की ओर प्रवृत्त हुई हैं। SRI और SWI विधि से खेती करने से कम लागत पर उपज में करीब दोगुनी वृद्धि हुई है। इससे किसानों की आमदनी बढ़ी है और वे अब पुनः खेती करने में रुचि लेने लगे हैं। सुपौल में मुख्यमंत्री कोसी मलवरी परियोजना के तहत किसानों को मलवरी की खेती के लिए भी प्रोत्साहित किया जा रहा है। इस साल 1500 किसानों के द्वारा मलवरी की खेती करने की योजना है।

समूह से जुड़ी महिलाओं को बैकयार्ड मुर्गी पालन के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। इस क्रम में सुपौल में मई 2016 तक 11 मदर यूनिट की स्थापना हो चुकी है और अन्य प्रखंडों में भी मदर यूनिट की स्थापना की प्रक्रिया जारी है। प्रत्येक मदर यूनिट से 300 ग्रामीण परिवारों को मुर्गी पालन से जोड़ा जाता है। इस तरह से अब तक लगभग 3300 गरीब परिवार बैकयार्ड मुर्गी पालन गतिविधियों से जुड़ चुके हैं। सर्वेक्षण से पता चलता है कि मुर्गी पालन गतिविधि अपनाने से महिलाओं के घर की आमदनी बढ़ने के साथ ही उसके परिवार के पोषण के स्तर में भी सुधार हुआ है।

खेती के अलावा हजारों की संख्या में महिलाओं ने छोटे–मोटे व्यवसाय, दुकान, छोटे उद्यम आदि स्वरोजगार की दिशा में भी मजबूती के साथ कदम बढ़ाए हैं। परियोजना से जोड़कर महिलाओं को सशक्त किया गया है। आंकड़ों के मुताबिक सुपौल में लगभग 5 हजार से ज्यादा महिलाएँ समूह से कर्ज लेकर छोटी–छोटी दुकानें खोल रही हैं और बड़ी संख्या में अन्य महिलाएँ भी इनसे प्रेरित होकर इस दिशा में आगे बढ़ने की योजना बना रही हैं। जीविका ने सामाजिक विकास तथा स्वास्थ्य एवं पोषण के क्षेत्र में भी काम किया है। सुपौल में जीविका के द्वारा 368 ग्राम संगठनों को खाद्य सुरक्षा निधि के तहत 1–1 लाख रुपये की राशि प्रदान की गई है। इसी तरह 361 ग्राम संगठनों को स्वास्थ्य सुरक्षा निधि की राशि उपलब्ध कराई गई है। गरीब महिलाओं के स्वास्थ्य और पोषण के लिए जिले में 18 CHNCC केंद्र भी खुले हैं, जहाँ गर्भवती एवं धात्री महिलाओं और छोटे बच्चों को कम कीमत पर पोषणयुक्त भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है।

सुपौल में जीविका की अब तक की उपलब्धियों का वर्णन :–

क्र.	विवरण	संख्या
1	आच्छादित राजस्व गाँवों की संख्या	337
2	आच्छादित पंचायतों की संख्या	137
3	गठित कुल स्वयं सहायता समूहों की संख्या	11548
4	स्वयं सहायता समूह से जुड़े परिवारों की संख्या	134557
5	गठित कुल ग्रामों संगठनों की संख्या	801
6	संकुल स्तरीय संघों की संख्या	12
7	पंजीकृत ग्राम संगठनों की संख्या	22
8	बैंक खाता खुल चुके स्वयं सहायता समूहों की संख्या	9203
9	स्वयं सहायता समूहाकें की संख्या जिन्हें प्रारंभिक (ICF) पूंजी प्राप्त है	7496
10	आरंभिक पूंजीकरण निधि (ICF) की राशि (करोड़ में)	42.16
11	स्वयं सहायता समूहों की संख्या जिन्हें बैंक से ऋण प्राप्त है	6165
12	बैंक से प्राप्त ऋण की राशि (करोड़ में)	31.31
13	ग्राम संगठन की संख्या जिनका बैंक में खाता उपलब्ध है	601
14	साक्षर स्वयं सहायता समूहों की संख्या	76707
15	ग्राम संगठन की संख्या जिन्हें खाद्य सुरक्षा प्राप्त है	368
16	ग्राम संगठन की संख्या जिन्हें स्वास्थ्य सुरक्षा निधि प्राप्त है	361
17	कृषि क्षेत्र में सम्मिलित कुल परिवारों की संख्या	
	• श्रीविधि से धान की खेती	33706
	• स्वीविधि से गेहूँ की खेती	17501
	• श्रीविधि से सब्जी की खेती	11764
	• कृषि क्षेत्र में उत्पादक समूहों की संख्या	25
	• छोटे व्यवसाय करने वाले परिवारों की संख्या	5380
	• मुर्गी पालन हेतु मदर युनिट की संख्या	11
18	सामुदायिक कैडर की संख्या	
	• जीविका मित्र (सी.एम.) की संख्या	1070
	• लेखापाल की संख्या	128
	• VRP की संख्या	178
	• सी.आर.पी. की संख्या	501
	• JRP की संख्या	11
	• बैंक मित्र की संख्या	31
	• जीविका सहेली की संख्या	275

सामुदायिक संसाधनसेवी

जीविका परियोजना सामुदाय आधारित संगठनों के माध्यम से कार्य करती है जिसका संचालन सामुदायिक संसाधन सेवी के द्वारा किया जाता है। सामुदायिक संसाधनसेवी को कार्य अनुरुप मानदेय दिया जाता है। जीविका के अंतर्गत सामुदायिक संसाधन सेवी निम्न हैं –

1. जीविका मित्र या कम्युनिटि मोबलाइजर (सी.एम.)
   इनका कार्य 10 स्वयं सहायता समूहों की बैठक कराना एवं उनकी गतिविधियों का लेखांकन करना है। सुपौल जिले में अब तक कुल 1070 सी.एम. समुदाय की उन्नति के लिए काम कर रहे हैं।
2. बुककीपर (लेखापाल)
   इनका कार्य ग्राम संगठन एवं संकुल स्तरीय संघ से संबंधित गतिविधियों एवं वित्तीय लेन–देन का लेखांकन करना है। मई 2016 तक जिले में कुल 128 बुक कीपर काम कर रहे हैं।
3. कम्युनिटी रिसोर्स पर्सन या सामुदायिक साधन सेवी (सी. आर.पी)
   सामुदायिक साधन सेवी के रूप में काम करने वाली महिलाएँ गाँव की अन्य महिलाओं को समूहों एवं ग्राम संगठनों से जुड़ने के लिए प्रेरित कर उन्हें समूह से जोड़ने का काम करती हैं।
4. बैंक मित्र
   ये बैंकिंग संबंधी गतिविधियों में समूहों की मदद करते हैं। अब तक जिले में 33 बैंक मित्र जीविका से जुड़े चुके हैं।
5. विलेज रिसोर्स पर्सन या किसान मित्र (वी.आर.पी.)
   इनका कार्य कृषि एवं आजीविका संबंधी अन्य गतिविधियों में महिलाओं का सक्रिय सहयोग करना है। सुपौल में कुल 187 वीआरपी जीविका से जुड़ कर महिला किसानों को तकनीकी मदद पहुँचा रहे हैं।
6. जॉब रिसोर्स पर्सन (जे.आर.पी.)
   रोजगार संबंधी प्रशिक्षण के लिए समूह से जुड़े परिवारों के सदस्यों की पहचान करना एवं इन्हें प्रशिक्षण केंद्र से जोड़ना इनका मुख्य कार्य है। सुपौल में इस समय 12 जे.आर.पी. काम कर रहे हैं।
7. जीविका सहेली
   समूह से जुड़ी महिलाओं को स्वास्थ्य एवं पोषण से जुड़ी जानकारियों से अवगत कराने एवं उन्हें जागरूक करने के लिए जीविका सहेली कार्य करती हैं। ये समूह की नियमित बैठक में हिस्सा लेती हैं और उन्हें स्वास्थ्य व पोषण के स्तर में सुधार के लिए प्रेरित करती हैं।

भावी योजना

वित्त वर्ष 2016–17 तक सुपौल में करीब 16,415 स्वयं सहायता समूहों के निर्माण का लक्ष्य है। इससे करीब 1,93,375 गरीब परिवार समूह से जुड़ जाएंगे। साथ ही इन समूहों को मिलाकर करीब 1107 ग्राम संगठनों का गठन किया जाना है। इस अवधि में सुपौल में 22 संकुल स्तरीय संघ बनाने का लक्ष्य है।

सूक्ष्म वित्त पोषण: सामुदायिक संगठनों को सबल बनाने की पहल

परियोजना सामुदायिक संगठनों के माध्यम से गरीब परिवारों के जीविकोपार्जन संबंधी संसाधनों को बढ़ाने के उद्देश्य से काम करती है। इसी क्रम में महिलाओं का समूह बनाकर एवं उन्हें चरणबद्ध तरीके से प्रशिक्षित कर इतना सशक्त किया जाता है, वे अपने वित्त संबंधी निर्णय स्वयं ले सकें। इसके अलावा परियोजना सूक्ष्म वित्त से संबंधित विभिन्न गतिविधियों को सामुदायिक संगठनों यथा स्वयं सहायता समूहों एवं ग्राम संगठनों का अभिन्न अंग बनाने के लिए भी प्रयासरत है। इसी क्रम में परियोजना के स्वयं सहायता समूहों के बीच बचत एवं पैसों के आपसी लेन–देन को प्रोत्साहित करने के साथ ही पैसों के लेन–देन की लेखांकन पद्धति अपनाने हेतु प्रशिक्षित किया जाता है। इस तरह से ग्रामीण महिलाओं को वित्तीय एवं बैंकिंग गतिविधियों से जोड़ने के उद्देश्य की भी पूर्ति हो रही है। परियोजना के इस प्रयास का परिणाम यह है कि बड़े पैमाने पर ग्रामीण महिलाओं में वित्तीय जागरूकता बढ़ी है।

समूह का गठन एवं बचत

परियोजना के अंतर्गत सर्वप्रथम 10–12 गरीब महिलाओं को मिलाकर एक समूह का गठन किया जाता है। समूह गठित होते ही समूह से जुड़ीं सभी महिलाएँ अपनी सीमित आय में से हर सप्ताह एक निश्चित राशि बचत करती हैं। इस तरह समूह के पास हर सप्ताह सामूहिक बचत के तौर पर कुछ राशि जमा हो जाती है। बचत की राशि निश्चित एवं एक समान होती है और यह नियमित रूप से जमा होती है। इससे महिलाओं में समान स्वामित्व की भावना बनी रहती है।

आपसी लेन–देन एवं ऋण वापसी

सामूहिक बचत से एकत्रित धनराशि से सदस्य महिलाएँ अपनी छोटी–छोटी जरूरतें पूरी करती हैं और इसके बदले उन्हें 02 रुपये प्रति सैकड़ा की दर से ब्याज समूह में अदा करना पड़ता है। वे किस्त दर किस्त कर्ज का नियमित भुगतान करती हैं। इससे समूह की महिलाओं के बीच आपसी लेन–देन को प्रोत्साहन मिलता है। साथ ही इससे प्राप्त ब्याज से समूह की आमदनी होती है। दूसरी तरफ, महिलाओं को अपनी जरूरत के वक्त महाजन से महंगी दर पर कर्ज नहीं लेना पड़ता है और गरीब महिलाओं को महाजन से भी छुटकारा मिलता है। परिणामस्वरूप उनमें स्वच्छ बचत की आदत विकसित होती है। यही कारण है कि परियोजना ने समूह के लिए पंचसूत्र में इसे प्रमुखता से शामिल किया है।

बैंक से जुड़ाव

समूह की अवधि तीन माह होने पर समूह का बैंक खाता खुलवाया जाता है। हालांकि इसके पहले यह देखा जाता है कि समूह में पंचसूत्र का पालन हो रहा है या नहीं। पंचसूत्र का अच्छी तरह पालन करने वाले समूहों का ही बैंक खाता खुलवाया जाता है।

सूक्ष्म नियोजन

बैंक खाता खुल जाने के बाद समूह के प्रत्येक सदस्यों का सूक्ष्म नियोजन किया जाता है। सूक्ष्म नियोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें समुदाय अपनी समस्त जरूरतों का आकलन करता है और सदस्य, समूह एवं संगठन के स्तर पर उपलब्ध संसाधनों के आधार पर आने वाली समस्याओं के समाधान के लिए निर्णय लेता है। इसमें समूह के प्रत्येक सदस्यों की आर्थिक एवं जीविकोपार्जन संबंधी जरूरतों की पहचान की जाती है। परियोजना के अंतर्गत माइक्रो प्लानिंग अर्थात सूक्ष्म नियोजन पर काफी जोर दिया जाता है ताकि सामुदायिक संगठन सदस्यों की जरूरतों का आकलन करें और भविष्य के लिए योजना बनाकर निर्णय लें। इससे उनमें आत्मविश्वास बढ़ने और निर्णय लेने की क्षमता विकसित होती है और संसाधनों का भी समुचित उपयोग होता है।

आरंभिक पूंजीकरण निधि (आई.सी.एफ.)

समूह का सूक्ष्म नियोजन होने के बाद प्रखंड परियोजना क्रियान्वयन इकाई में गठित ऋण समिति की बैठक होती है, जिसे एल.सी.एम. कहते हैं। एलसीएम में माइक्रो प्लानिंग एवं आईसीएफ के लिए आवेदन पर विचार किया जाता है। इसके बाद जीविका परियोजना समूह को शुरुआत में आरंभिक पूंजीकरण निधि (आई.सी.एफ.) के रूप में 30,000 से 60,000 रुपये और परिक्रमी निधि (रिवॉल्विंग फंड) के तौर पर 15,000 रुपये प्रदान करती है। इस तरह से परियोजना की तरफ से प्रत्येक समूहों को 30,000 से 75,000 रुपये तक की राशि प्रदान की जाती है। इससे समूह को शुरुआती पूंजी मिल जाती है।

बैंक क्रेडिट लिंकेज

समूह के सदस्यों की जीविकोपार्जन संबंधी जरूरतों की पूर्ति केवल बचत के पैसे से नहीं की जा सकती है। ऐसे में समूह के द्वारा बैंक से ऋण लेने की प्रक्रिया शुरू होती है। समूह को बैंक से ऋण की पहली किस्त के रूप में 50,000 रुपये मिलते हैं। कर्ज की इस राशि से समूह की दीदियों को जीविकोपार्जन संबंधी विभिन्न गतिविधियां शुरू करने में मदद मिलती है। वहीं प्रत्येक माह ऋण खातों का सही संचालन होने की स्थिति में एक साल के उपरान्त बैंक समूहों को ऋण की दूसरी किस्त के तौर पर 1 से 1.5 लाख रुपये देता है।

जीविकोपार्जन गतिविधियां

समूह की दीदियां अपनी बचत राशि, जीविका से प्राप्त आई.सी.एफ. की राशि और बैंक से प्राप्त ऋण का उपयोग स्वरोजगार के लिए छोटे–मोटे व्यवसाय शुरू करने, कृषि कार्य, पशुपालन, मुर्गीपालन, ऑटो रिक्शा खरीदने आदि के लिए करती हैं, जिससे उनके घर की आमदनी बढ़ सके। इससे सदस्यों को गरीबी से बाहर निकलने में मदद मिलती है और वे अपनी मूलभूत जरूरतें पूरी करने में सक्षम होते हैं। आजीविका से होने वाली कमाई से वे कर्ज का नियमित भुगतान करती हैं। चूंकि समूह की सदस्य महिलाएँ शुरुआत में ही बचत करते हुए आपसी लेनदेन की प्रक्रिया शुरू करके समूह में वित्तीय अनुशासन स्थापित करने का प्रयास करती हैं। अतः वे बैंक कर्ज का भी भुगतान नियमित तौर पर करती हैं। यही कारण है कि बैंकों द्वारा जीविका के स्वयं सहायता समूहों को दिए गए ऋण में एन.पी.ए. अपेक्षाकृत नगण्य है।

कर्ज की वापसी

समूह की दीदियां जीविकोपार्जन गतिविधियों से जो आय अर्जित करती हैं, उससे वे अपने घर की मूलभूत जरूरतों को पूरा करने के अलावा समूह या बैंक से लिए कर्ज की राशि का भुगतान करती हैं। समूह की दीदियों पर कर्ज का भार ज्यादा न पड़े इसके लिए छोटी–छोटी मासिक किस्तों में कर्ज के भुगतान का प्रावधान है। इसका फायदा यह होता है कि वे समयबद्ध तरीके से कर्ज की वापसी करने में सक्षम होती हैं। इससे बैंकों का एनपीए भी नहीं होता और जरूरत पड़ने पर उन्हें दोबारा कर्ज आसानी से मिल जाता है। समूह की दीदियों के द्वारा समय पर कर्ज भुगतान करने की आदत से बैंकों में जीविका के स्वयं सहायता समूहों की साख बढ़ी है।

स्वयं सहायता समूहों द्वारा बड़े पैमाने पर वित्तीय लेनदेन हुआ है। सुपौल में मई 2016 तक 11,142 स्वयं सहायता समूहों का गठन किया जा चुका है। इनमें से 9,203 समूहों का बैंक खाता खुल चुका है। इस अवधि तक जीविका की ओर से 7,496 समूहों को आई.सी.एफ. के रूप में 41 करोड़ से ज्यादा राशि प्राप्त हो चुकी है। वहीं 6,165 समूहों को बैंक ऋण की पहली किस्त मिल चुकी है जबकि 411 समूहों को बैंकों ने ऋण की दूसरी किस्त भी उपलब्ध करा दी है। इस तरह से बैंकों ने स्वयं सहायता समूहों की दीदियों को आजीविका शुरू करने के लिए अब तक करीब 50 करोड़ रुपये तक के ऋण वितरित किए हैं। सुपौल में 581 ग्राम संगठनों के पास अपने बैंक खाते हैं। इसके अलावा सुपौल में स्थापित हो चुके 11 संकुल स्तरीय संघों में से 10 के बैंक खाते खुल चुके हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में इतने बड़े पैमाने पर वित्तीय लेनदेन जीविका के प्रयास की वजह से संभव हुआ है। बैंकों ने ग्रामीण क्षेत्र की इन महिलाओं को वित्त पोशित करने में रुचि दिखाई है।

समूहों के वित्त पोषण की अद्यतन स्थिति

क्र.	विवरणी	मोजूदा स्थिति
1	स्वयं सहायता समूहों की संख्या जिनका बैंक में खाता उपलब्ध है	9203
2	स्वयं सहायता समूहों की संख्या जिन्हें आरंभिक पूंजी प्राप्त है	7496
3	आरंभिक निवेश निधि की राशि (करोड़ में)	42.16
4	स्वयं सहायता समूहों की संख्या जिन्हें बैंक से ऋण प्राप्त है	6165
5	बैंक से प्राप्त ऋण की राशि (करोड़ में)	31.87
6	ग्राम संगठन की संख्या जिनका बैंक में खाता उपलब्ध है	581
7	साक्षर स्वयं सहायता समूहों की संख्या	56352
8	बैंक से दूसरी किस्त में ऋण प्राप्त करने वाले समूह	413
9	बीमा योजना से लाभान्वित परिवारों की संख्या	19325
10	स्वास्थ्य बीमा योजना से लाभान्वित परिवारों की संख्या	6049

सूक्ष्म वित्त की दिशा में भावी योजना

ग्रामीण महिलाएँ वित्तीय गतिविधियों में रुचि लेने लगी हैं। वे समूह से लेकर ग्राम संगठन एवं संकुल स्तरीय संघ स्तर पर बैंकिंग प्रक्रियाओं में हिस्सा ले रही हैं। यहाँ बचत राशि जमा करने के अलावा समूह की दीदियों के बीच सूक्ष्म ऋण की राशि वितरित की जाती है। सूक्ष्म ऋण के ब्याज के पैसे से संगठनों को अच्छी आय हो रही है। इससे सामुदायिक संगठनों का कॉर्पस मनी (संपत्ति) बढ़ रहा है और संगठन के रखरखाव पर होने वाला खर्च भी इससे निकल रहा है। यह पूर्णतः महिलाओं का संगठन है और यहाँ सारे काम महिलाओं के द्वारा किए जाते हैं। ऋण वितरण से लेकर वित्तीय लेनदेन की निगरानी में महिलाओं खास कर गाँव की गरीब महिलाओं की सक्रीय भागीदारी होती है।

ग्राम संगठन एवं सीएलएफ में बढ़ रही वित्तीय गतिविधियों और महिलाओं द्वारा इसके सफल संचालन से भविष्य में इसके लिए नई संभावनाएं दिख रही है। ग्राम संगठन एवं सीएलएफ स्तर पर इन वित्तीय गतिविधियों को यदि और व्यवस्थित रूप से विकसित किया जाए तो भविष्य में इन सामुदायिक संगठनों को महिला बैंक के तौर पर स्थापित करने की दिशा में बढ़ा जा सकता है। ऐसा होने से इन संगठनों को सीधे बैंकिंग कार्यों से जोड़ा जा सकता है। अगर यह सपना साकार होता है तो यह एक ऐतिहासिक कदम साबित होगा। तब समूह से जुड़ी इन महिलाओं के पास अपना बैंक होगा और इसका संचालन भी वे खुद करेंगी। इससे महिलाओं के जीवन में व्यापक बदलाव लाया जा सकता है। दूसरे शब्दों में कहें तो ग्रामीण महिलाओं के द्वारा और ग्रामीण महिलाओं के लिए एक बैंकिंग क्रांति का सूत्रपात हो सकता है। साथ ही यह ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिंग जगत के लिए भी दूरगामी कदम साबित हो सकता है।

उन्नत विधि से खेती

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है और ग्रामीण क्षेत्रों के लिए यह जीविकोपार्जन का मुख्य आधार। आज भी देश की लगभग 67 फीसदी आबादी खेती पर निर्भर है। फिर भी देश के सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) में इसका योगदान लगातार घट रहा है। दूसरे शब्दों में कहें तो भारत की दो तिहाई से ज्यादा आबादी कृषि पर निर्भर रहने के बावजूद जी.डी.पी. में इसका योगदान घटकर 16 फीसदी (वित्त वर्ष 2015–16 के आंकड़ों के मुताबिक) रह गया है। यह गंभीर चिंता का विषय है। जाहिर है आजादी के बाद से ही कृषि क्षेत्र में कोई खास प्रगति नहीं हुई, बल्कि यह लगातार पिछड़ता ही जा रहा है।

सुपौल जिले में खेती की स्थिति अच्छी नहीं है। सुपौल का कुल क्षेत्रफल 2,37,400 हेक्टेयर है जबकि इसमें से महज 3,157 हेक्टेयर भूमि में ही फसलों की बुआई होती है। वहीं 6,710 हेक्टेयर भूमि जल जमाव से ग्रसित है। इसके अलावा 3,008 हेक्टेयर क्षेत्र गैर कृषि कार्यों के लिए आच्छादित है। खास बात यह है कि सुपौल में आज भी 2,647 हेक्टेयर भूमि बंजर पड़ी है। हालांकि इसे खेती योग्य बनाया जा सकता है। हैरत की बात यह है कि संसाधन के अभाव में जिले में 2,800 हेक्टेयर भूमि परती रह जाती है।

सुपौल में कुल जोत वाले क्षेत्र में से दो तिहाई हिस्से का आकार 1 हेक्टेयर से कम है। आंकड़ों के मुताबिक 77.74 फीसदी हिस्सा 1 हेक्टेयर से कम जोत वाला क्षेत्र है जबकि 20 फीसदी भूमि 1 से 2 हेक्टेयर के आकार का है। बाकी जुताई योग्य भूमि बड़े कस्तकारों के हाथों है। जाहिर है जोत का आकार छोटा होने की वजह से फसल की पैदावार एवं मुनाफे पर असर पड़ता है। इसके अलावा सुपौल में खेती परंपरागत तरीके से की जाती है और यहाँ आज भी बुनियादी सुविधाओं का घोर अभाव है। पूरे जिले में प्राय: बाढ़ का खतरा बना रहता है। यहाँ की मिट्टी जलोढ, बलुई–दोमट है।

आमतौर पर कृषि के पिछड़ेपन के मूल कारण – खेती का परम्परागत तरीका, बुनियादी सुविधाओं का अभाव, पूंजी की कमी, आधुनिक तकनीक का न्यूनतम प्रयोग, नए शोध एवं विकास की जानकारी किसानों तक नहीं पहुँच पाना और बाजार का अभाव आदि है। इसके अलावा किसानों एवं खेतिहर मजदूरों का अकुशल होना भी इस क्षेत्र की बड़ी समस्या है। देश में खेती से

जुड़े अधिकांश कार्य यथा बीज बोना, पौधरोपण, निराई, गुड़ाई, फसलों की कटाई, सफाई व भंडारण आदि कार्य महिलाओं द्वारा किए जाते हैं। लेकिन ग्रामीण इलाकों में महिलाओं की स्थिति और भी ज्यादा खराब है। ज्यादातर महिलाएँ अशिक्षित एवं सामाजिक व आर्थिक रूप से सबसे निचले पायदान पर हैं। उनमें जागरूकता का भी अभाव है और इन सब का असर कृषि पर भी पड़ता है।

इन समस्याओं को देखते हुए बिहार सरकार ने 2008 में कोसी त्रासदी के बाद सुपौल में कोसी फ्लड रिकवरी परियोजना की शुरुआत की थी। इसके तहत भवन निर्माण एवं यातायात संसाधनों के विकास का काम इस परियोजना के जिम्मे रहा जबकि जीविकोपार्जन एवं सामुदायिक विकास का कार्य 'जीविका' को सौंपा गया। इसी कड़ी में सुपौल के छातापुर प्रखंड में 2 अक्टूबर 2009 को जीविका परियोजना की शुरुआत हुई। इसके अंतर्गत ग्रामीण महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों का गठन कर उन्हें आर्थिक एवं सामाजिक उन्नयन के लिए प्रोत्साहित किया गया। जीविकोपार्जन से जुड़ी गतिविधियों में मुख्य रूप से कृषि, पशुपालन, छोटी दुकानें और अन्य प्रकार के व्यवसाय शामिल हैं, जिन्हें प्रोत्साहित कर ग्रामीणों के जीवन स्तर में सुधार लाने का प्रयास किया जा रहा है।

कृषि के क्षेत्र में गरीब महिलाओं को धान एवं गेहूं की उन्नत खेती के लिए नयी तकनीक का प्रशिक्षण दिया गया और श्री विधि से खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। इसके लिए परियोजना के माध्यम से उन्हें बीज, वर्मी कम्पोस्ट तथा बीज शोधन के लिए लागत का आधा हिस्सा अनुदान के रूप में उपलब्ध कराया जा रहा है। श्री विधि से खेती करने की वजह से धान एवं गेहूं के उत्पादन में लगभग दोगुनी वृद्धि हुई है। साथ ही इससे जुड़े कामों में सामुदायिक स्तर पर ग्रामीण युवक–युवतियों को भी जोड़ा गया है, जिससे उनके लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध हुए। आंकड़ों के मुताबिक अकेले छातापुर में लगभग 450 साधनसेवी काम कर रहे हैं, जिसमें विभिन्न प्रकार के जीविका मित्र सम्मिलित हैं। इसकी सफलता को देखते हुए जीविका ने अगले वर्ष 2010 में जिले के बाढ़ प्रभावित 3 और प्रखंडों– बसंतपुर, प्रतापगंज एवं त्रिवेणीगंज में अपने कार्य क्षेत्र का विस्तार किया। यहाँ भी महिलाओं के समूहों का गठन किया गया तथा उन्हें जीविकोपार्जन के क्षेत्र में आर्थिक संबल प्रदान करते हुए खेती की उन्नत विधि अपनाने के लिए प्रेरित किया गया है। परिणामस्वरूप इन चारों प्रखंडों में धान एवं गेहूं का उत्पादन सतत बढ़ रहा है। साथ ही मक्का, मूंग, आलू एवं दलहनी फसलों में भी उन्नत बीज एवं तकनीक के प्रयोग किए जा रहे हैं, जिससे इनकी पैदावार बढ़ सके। इसके अपेक्षित परिणाम मिल रहे हैं।

वर्ष 2012 में महिला किसान सशक्तीकरण परियोजना के तहत प्रतापगंज प्रखंड को अंगीकृत किया गया और जीविका द्वारा इसे संचालित किया जा रहा है। आज प्रखंड के 44 ग्राम संगठनों के पास अपना बोरिंग, पंप सेट, एस.आर.आई. कोनोवीडर एवं एस. डब्ल्यू.आई. वीडर, डिवलर एवं कृषि के अन्य छोटे उपकरण मौजूद हैं, जिससे यहाँ की महिला किसान खेती में समुचित योगदान दे रही हैं। वर्ष 2014 में 1020 महिला किसानों ने मूंग की खेती की तथा उत्पादन अपेक्षा के अनुरूप रहा। प्रतापगंज में 1768 महिलाओं ने एस.आर.आई. से धान की खेती की तथा उनका उत्पादन 60 से 80 किलोग्राम प्रति कट्ठा रहा। इसके अलावा 2000 महिला किसानों ने एस.डब्ल्यू.आई. विधि से गेहूं की बुआई की है। वहीं पूरे वर्ष के लिए सभी फसलों का कुल लक्ष्य 2800 किसानों का था। मार्च 2014 में जीविका द्वारा जिले में शेष बचे 7 प्रखंडों में भी कार्य शुरू कर दिया गया जहाँ समूहों के गठन के साथ–साथ जीविकोपार्जन का कार्य प्रगति पर है। इस प्रकार फिलहाल सुपौल जिले के सभी 11 प्रखंडों में जीविका परियोजना काम कर रही है।

जीविका अब इन सभी प्रखंडों में जीविकोपार्जन गतिविधियों को बढ़ावा देने का प्रयास कर रही है। इसमें सबसे ज्यादा कृषि कार्य शामिल है। स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं को उन्नत विधि से खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसका परिणाम यह है कि हाल के वर्षों में बड़े पैमाने पर किसानों ने इस उन्नत विधि को अपनाकर कृषि पैदावार बढ़ाई है। वर्ष 2015 में सुपौल जिले में 33,444 महिला किसानों ने एसआरआई विधि से धान की खेती की तथा 11,048 महिला किसानों ने विभिन्न प्रकार की सब्जियों की खेती की है। गेहूं एवं अन्य रबी फसलों की बुआई लक्ष्य के अनुरूप लगभग 18,000 महिला किसानों ने एस.डब्ल्यू. आई. विधि से गेहूं की खेती की है। इस अवधि में लगभग 3,500 महिला किसानों ने आधुनिक विधि से मूंग की खेती की।

अधिक से अधिक परिवारों को खेती–बागवानी से जोड़ने के लिए किचन गर्डन जैसे अभिनव प्रयोग किया जा रहा है। किचन गार्डन के तहत किसानों को अपने घर–आंगन में उन्नत विधि से सब्जियों की खेती के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

श्री विधि से धान की खेती

धान की खेती के लिए यह उन्नत विधि सबसे पहले मेडागास्कर में शुरू हुई थी। यह खेती की एक ऐसी तकनीक है जिसमें फसलों के उन्नत बीजों का चयन किया जाता है, जिनका विधिवत शोधन कर विधिवत निर्मित किए गए बीज शय्या पर अनुकूल समय में रोपित किया जाता है।

इसके बाद 8 से 14 दिनों के बीच उन नवशोधित बिचड़ों को मुख्य खेत में पौधे से पौधे के बीच 10 ईंच एवं कतार से कतार के बीच 10 ईंच की दूरी पर प्रत्यारोपित किया जाता है। साथ ही खेत में अगले 5 दिनों तक अनुकूलतम नमी बरकरार रखी जाती है। इसके अगले 15 दिन बाद कोनोवीडर द्वारा फसल की निकाई, गुड़ाई की जाती है। चूंकि यह विधि धान से प्रचलित हुई अत: इसे धान की सघन खेती के रूप में भी जाना जाता है। इस विधि से खेती करने पर धान में पानी की जरूरत कम होती है तथा खरपतवार नियंत्रण में भी परम्परागत खेती की तुलना में कम व्यय एवं परेशानी होती है। इसमें प्रति हेक्टेयर बीज की मात्रा 6 किलोग्राम होती है, जिससे बीज की लागत में कमी आती है। इस विधि से खेती करने पर उत्पादन तो अधिक मिलता ही है साथ ही फसल भी 15–20 दिन पहले पक कर तैयार हो जाती है। इससे दूसरी फसलों के बोने के लिए खेत की तैयारी हेतु पर्याप्त अन्तराल मिल जाता है। इस विधि से खेती करने पर धान की परम्परागत खेती की तुलना में डेढ़ से तीन गुना अधिक उत्पादन मिलता है जबकि खर्च अपेक्षाकृत कम पड़ता है।

सावधानियां :

- मध्यम से ऊँची भूमि में ही एस.आर.आई. विधि से धान की खेती
- धान की किस्म का चयन स्थानीय जलवायु के अनुसार
- धान की ऐसी किस्म का चयन करें जो 120 दिनों में तैयार हो
- खेत में जल निकासी की पर्याप्त सुविधा हो
- बिचड़ा को प्रत्यारोपण के लिए उखाड़ते वक्त पौधे के जड़ों को नुकसान न पहुँचाएं
- प्रत्यारोपण के वक्त पौधे से पौधे के बीच 10 ईंच एवं कतार से कतार के बीच भी 10 ईंच की दूरी बनाए रखें
- बिचड़े के जड़ों को अधिक गहरा न रोपें
- प्रत्यारोपण के 15 दिन बाद निकाई–गुड़ाई अवश्य करें

बीज चयन एवं बीज शोधन

बीज प्राय: विश्वस्त दुकानों से ही लें। साथ ही प्रभेद का चयन उपरोक्त सावधानियों को देखते हुए करें। बीज को 5 प्रतिशत नमक पानी के घोल में डालकर उपलाते हुए बीज को छांट दें। जो बीज डूब जाएं उन्हें सादे पानी से तीन बार धो कर साफ कर लें। फिर बीज को जूट के बोरे पर फैलाकर दो ग्राम बैवेस्टिन पाउडर प्रति किलोग्राम बीज की दर से उसमें अच्छी तरह मिलाएं। इसके बाद उसे जूट के बोरे से ही ढंक दें। प्रति 4–5 घंटे के अंतराल पर जूट के बोरे को भिंगोते रहें। यह प्रक्रिया 36 से 48 घंटे तक करें। जब बीज में अंकुरन आ जाए तब इसे बीज शय्या पर पंक्तिबद्ध तरीके से लगाएं।

बिचड़ा लगाने की विधि

धान का बिचड़ा लगाने के लिए बीज शय्या का विधिवत निर्माण कर लें। इसके लिए बीज के हिसाब से स्थल की तैयारी करें। एक एकड़ खेत की रोपाई के लिए 2 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होगी। साढ़े 5 फुट चौड़ा एवं 10 फुट लंबा 5 बीज शय्या का निर्माण करें। प्रत्येक बीज शय्या के बीच में जल निकासी के लिए 30 सेंटीमीटर चौड़ी नाली का निर्माण करें। बीज शय्या जमीन की सतह से 15 सेमी ऊँची होनी चाहिए। बीज शय्या भुरभूरी एवं समतल हो। पंक्ति में 10 सेमी के अंतराल पर बीज का एक ईंच गहराई पर रोपाई करें तथा बर्मी कम्पोस्ट से बीज शय्या को ढक दें। फिर हजारे से बर्मी कम्पोस्ट के उपर सुबह–शाम पानी का छिड़काव आवश्यकतानुसार करें। जब बिचड़ा चार पत्ते का हो जाए (यानि 8 से 14 दिन के मध्य) तो इसे मुख्य खेत में प्रत्यारोपित करें।

स्वी विधि से गेहूं की खेती

धान की तरह ही गेहूं की खेती के लिए एसडब्ल्यूआई विधि उन्नत विधि है। इस विधि के तहत खेत में गेहूं की बुआई पंक्तिबद्ध तरीके से की जाती है। इसमें बीज से बीज एवं पंक्ति से पंक्ति के बीच खास दूरियों का ख्याल रखा जाता है। बीज से बीज 10 सेमी एवं पंक्ति से पंक्ति 22 सेमी की दूरी रखकर अंकुरित बीजों की 1 ईंच की गहराई में बुआई की जाती है। बुआई के 15 दिनों के बाद पहली सिंचाई एवं यूरिया के साथ वर्मी कम्पोस्ट का उपरिवेशन कर निकाई की जाती है। तत्पश्चात 25 दिनों के बाद दूसरी सिंचाई की जाती है। फिर आवश्यकतानुसार सिंचाई एवं यूरिया का उपरिवेशन किया जाता है। इस विधि से गेहूँ की खेती करने पर फसल 20 दिन पहले पक कर तैयार हो जाता है तथा उपज भी पारम्परिक विधि से खेती की तुलना में अधिक मिलती है।

इन्होंने लिखी सफलता की कहानी.....

खेती का उन्नत तरीका अपनाकर महिला किसानों ने पैदावार दोगुना किया है। सुपौल जिले के त्रिवेणीगंज, छातापुर, प्रतापगंज एवं बसंतपुर प्रखंड में वर्ष 2015–16 में 33,444 महिला किसानों ने श्रीविधि से धान की खेती की। इसी तरह 11,048 महिला किसानों ने सब्जियों की खेती की जबकि 17,000 से ज्यादा महिला किसानों ने गेहूं एवं अन्य रबी फसलों की बुआई उन्नत विधि से की है। इस विधि से खेती करने से उन्होंने खेत के छोटे टुकड़े में कम लागत पर अधिक उपज हासिल की है। इससे उन्हें खेती से आमदनी बढ़ाने में मदद मिली है। इससे उनके घर की माली हालत में सुधार हुआ है। इसकी सफलता को देखते हुए सुपौल जिले में बड़ी संख्या में छोटे किसान खेती की उन्नत विधि अपना रहे हैं। इनमें से ही कुछ किसानों के खेतों में लहलहाती फसल और दोगुनी उपज इस बात के गवाह हैं कि जीविका ने जिस मकसद से लोगों को खेती की उन्नत तकनीक अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया है, जमीनी स्तर पर उसका लाभ लोगों को मिल रहा है। उल्लेखनीय है कि जो किसान घाटे के कारण खेती से विमुख हो रहे थे, वे भी अब नए सिरे से खेती में रुचि लेने लगे हैं। खेती की उन्नत विधि अपनाने से किसानों की जिंदगी में बदलाव आए हैं। कुछ किसानों की सफलता की कहानी प्रस्तुत है :

खेती : श्रीविधि की पद्धति से

त्रिवेणीगंज प्रखंड के जरैला गाँव की पारो देवी करीब 10–12 वर्षों से सब्जी की खेती करती आ रही है। लेकिन इस बार उसके खेत में जो फसल लहलहा रही है, वह सबसे अलग है। पारो देवी ने इस बार खेती की परम्परागत विधि की जगह सब्जियों की खेती के लिए उन्नत विधि अपना ली है। खेत में लगी राजमा, आलू, गोभी, धनिया, सरसों एवं मक्के की फसल बोने और उनकी नियमित देखभाल के लिए नई तकनीक श्रीविधि को अपनाया।

अपने हरे–भरे खेत देखकर पारो देवी बताती है कि पिछले कई सालों की तुलना में इस बार सब्जियों की फसल अच्छी है। आलू की खेती के लिए उसने परम्परागत विधि को छोड़कर खेती की आधुनिक विधि अपनाई। वह कहती है कि फसल देखकर तो यही अनुमान लगाया जा सकता है कि पैदावार पहले की तुलना में दोगुनी से ज्यादा होगी। पारो देवी ने इस साल श्रीविधि से धान की खेती की थी। परिणामस्वरूप जमीन के उसी टुकड़े में धान की उपज पहले की तुलना में दोगुनी ज्यादा हुई जबकि खर्च अपेक्षाकृत कम। सब्जियों की पैदावार को देखते हुए इस साल पारो देवी ने श्रीविधि से ही धान की खेती करने का फैसला किया। पहले तो ज्यादा भरोसा नहीं था लेकिन जब फसल पककर तैयार हुई तो नतीजा सामने आया। यही कारण है कि धान की कटाई के बाद खाली हुए खेत में उसने जीविका की दीदी द्वारा बताई विधि से ही सब्जियों एवं मक्के की फसल लगाने का फैसला किया। पारो देवी कहती है कि नए तरीके से बीजों की बुआई और उसमें कीटनाशकों का छिड़काव कर रही हैं। कुछ दिनों के बाद आलू की फसल तैयार हो जाएगी। इसके बाद गोभी के भी फूल बड़े हो जाएंगे। पारो देवी ने खेत के एक हिस्से में आलू, एक हिस्से में गोभी और राजमा की खेती की है जबकि वहीं पास के एक अन्य खेत में मक्के की फसल लगाई है। वह कहती है कि फसल काफी अच्छी है और इससे अच्छी उपज होने का अनुमान है।

नाम : पारो देवी
सीताराम जीविका स्वयं सहायता समूह ग्राम संगठन : इंदिरा गांधी जीविका महिला ग्राम संगठन
गाँव : जरैला
पंचायत : थाला गढ़िया (उत्तर)
प्रखंड : त्रिवेणीगंज, सुपौल
पहले : परंपरागत तरीके से खेती
अब : इस साल श्रीविधि से की थी धान की खेती और अब जीविका द्वारा बताई गई उन्नत विधि से की है कई सब्जियों एवं मक्के की खेती

- पहले परंपरागत तरीके से खेती करने पर नहीं होता था फायदा
- श्री विधि से धान की खेती करने से उपज में हुई दोगुनी वृद्धि
- पारो देवी आधुनिक विधि से करती हैं धान, गेहूँ व सब्जियों की खेती

खेती : कम लागत अधिक उपज

त्रिवेणीगंज प्रखंड में जरैला गाँव की मीना देवी ने एस.आर.आई. (श्री) विधि पद्धति से धान की खेती कर उपज में बढ़ोतरी की है। इन्होंने खेती के परम्परागत तरीके को छोड़कर इस वर्ष एस.आर.आई. विधि से धान की खेती की।

वह कहती है कि उन्नत विधि से धान की खेती करने पर उसकी लागत कम हुई जबकि पैदावार लगभग दोगुनी हुई। धान में श्रीविधि के सफल प्रयोग को देखकर उसने अन्य फसलों के लिए श्रीविधि अपनाने का फैसला किया। यही कारण है कि उसने 3 कट्ठा जमीन में सब्जियों की मिश्रित खेती करते हुए गाजर, लहसून, गोभी, आलू और मूली की फसल लगाई।

मीना देवी की मानें तो वह वर्षों से सब्जियों की खेती करती आ रही है अब उसने खेती की श्रीविधि अपना ली है। पहले एक कट्ठा जमीन में महज एक मन धान होता था, परन्तु श्रीविधि से खेती करने से प्रति कट्ठा करीब ढाई से तीन मन धान की उपज हुई। वहीं इस विधि से धान की बुआई में बीज की लागत घटी। वह रासायनिक खाद की जगह अब वर्मी कम्पोस्ट का प्रयोग करने लगी है। वह बताती है कि इससे मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ती है और सस्ता भी है। वहीं रासायनिक खाद महंगा है और इससे मिट्टी को नुकसान भी पहुँचता है। वर्मी कम्पोस्ट के प्रयोग से इस बार धान की उपज ज्यादा हुई एवं बीमारियों की भी रोकथाम हुई। मीना देवी सब्जियों की खेती कर अच्छी आय अर्जित करती रही है। उन्हें उम्मीद है इस साल उसकी यह आमदनी और बढ़ेगी। वह पास के ही कुमयारी एवं जरैला हाट में सब्जियाँ बेचती है। इस काम में उनके पति भी उसकी मदद करते हैं।

नाम : मीना देवी
समूह : लाखो जीविका स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन : विश्वकर्मा महिला ग्राम संगठन
गांव : जरैला
पंचायत : थलहा गढ़िया
प्रखंड : त्रिवेणीगंज, सुपौल
पहले : परंपरागत तरीके से खेती
अब : उन्नत विधि खेती एवं पशुपालन

- **मीना देवी सब्जियों की खेती से अर्जित कर रही है अच्छी आय**
- **श्री विधि से धान की खेती करने से 1 कट्ठा जमीन में 3 मन धान**
- **परम्परागत तरीके से खेती करने पर इतनी जमीन में उपज होती थी महज 1 धान**

मीना देवी बताती है कि 2012 में वह लाखो जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी थी। घर की आय बढ़ाने के लिए उसने समूह से 20,000 रुपये का ऋण लेकर एक भैंस खरीदी। भैंस का दूध बाजार में बेचा जिससे धीरे–धीरे उसके परिवार का जीवनयापन सुचारु हो गया। साथ ही मीना ने इससे होने वाले अतिरिक्त आय से कर्ज के पैसे भी वापस कर दिए। बाद में उसने दो अन्य जर्सी गायें खरीदीं। वह अब प्रतिदिन करीब 10 लीटर दूध बेच रही है जिससे उसे प्रतिमाह औसतन 9 –10 हजार रुपये की आमदनी हो रही है। पहले उसका परिवार पूरी तरह खेती पर ही आश्रित था लेकिन अब खेती का उन्नत तरीका और पशुपालन अपनाने से उसका परिवार आज खुशहाल है।

सब्जियों की मिश्रित खेती है लाभकारी

संगीता देवी के खेत में लगी हरी–भरी सब्जियों की फसल लोगों को कुछ ज्यादा ही आकर्षित कर रहा है। इस बार उसकी खेती देखने लायक है। उसने एक ही खेत में मेथी, गोभी, धनिया, सरसों, राजमा और लहसून की खेती की है। जीविका द्वारा बताई गई नई विधि अपनाकर उसने 2 कट्ठे जमीन में सब्जियों की मिश्रित खेती की। मिश्रित खेती में एक फसल कटती है और दूसरी फसल कटने के लिए तैयार हो जाती है। ऐसे में किसान एक ही सीजन में एक साथ कई फसलें उपजा लेते हैं। एक ही खेत और एक ही समान लागत में 2–3 फसल की उपज हो जाती है।

त्रिवेणीगंज प्रखंड में थाला गढ़िया पंचायत के जरैला गाँव की महिला किसान संगीता देवी ने इस तरह के प्रयोग कर अपनी आमदनी दो से तीन गुनी बढ़ा ली है। संगीता देवी ने जीविका के सहयोग एवं प्रोत्साहन से सब्जियों की मिश्रित खेती की है। वह बताती है कि इस बार फसल काफी अच्छी है। पहले वह गोभी, गाजर या धनिया आदि फसलों की अलग–अलग बुआई करती थी, इससे एक फसल कटने के बाद खेत परती रह जाता था लेकिन इस बार उसने एक ही खेत में गोभी के साथ मूली, गाजर, सरसों एवं मेथी की भी फसल लगाई है, फलस्वरूप गोभी के कटने के बाद मेथी एवं सरसों के पकने की बारी होगी जबकि गाजर एवं मूली की फसल पहले ही तैयार हो चुकी थी। इस तरह से वह एक ही खेत में कई तरह की फसल उपजा रही हैं।

संगीता देवी ने रासायनिक खाद के स्थान पर वर्मी कम्पोस्ट का प्रयोग किया है। उन्नत बीज, वर्मी कम्पोस्ट और आधुनिक तरीका अपनाकर खेती को लाभकारी बनाया जा सकता है। संगीता के घर में कुल 08 सदस्य हैं और पूरा परिवार वर्षों से कृषि पर ही निर्भर रहा है। आज भी घर की आमदनी का मुख्य स्रोत खेती ही है। लेकिन खेती की उन्नत विधि अपनाकर उसने अपनी आमदनी में बढ़ोतरी की है।

मिश्रित खेती में एक समय में एक से अधिक फसलों को एक साथ एक ही खेत में लगाने की प्रक्रिया को मिश्रित खेती कहते हैं। इनमें फसलों की रोपाई की दूरी, पौधे की ऊँचाई, उनकी जड़ों की गहराई तथा उर्वरकों की आवश्यकता अलग–अलग होती है। साथ ही उनकी परिपक्वता की अवधि भी भिन्न–भिन्न होती है, इसमें एक फसल के पक कर तैयार हो जाने के बाद दूसरी व अन्य फसलें तैयार हो जाती हैं। तदुपरान्त एक के बाद दूसरी व तीसरी फसलों की उपज का लाभ लिया जा सकता है।

नाम : संगीता देवी
समूह : सीताराम जीविका स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन : इंदिरा गांधी जीविका महिला ग्राम संगठन
गाँव : जरैला
पंचायत : थाला गढ़िया
प्रखंड : त्रिवेणीगंज, सुपौल
पहले : परंपरागत तरीके से सब्जियों की सामान्य खेती
अब : उन्नत विधि अपनाकर खेती को बनाया लाभकारी

- **एक ही समय में एक साथ एक से अधिक फसलों को उपजाने की विधि है मिश्रित खेती**
- **एक ही लागत पर 3 से 4 अलग अलग फसलें लगाकर आमदनी में कर सकते हैं इजाफा**
- **मिश्रित खेती में फसलों के चुनाव पर रखना होता है खास ध्यान**

कम लागत में गेहूँ की खेती

त्रिवेणीगंज प्रखंड में थाला गढ़िया पंचायत की रेखा देवी के खेत में लगी गेहूं की बालियों को देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इस बार पैदावार अच्छी होगी। खुद रेखा देवी भी मानती है कि पिछले सालों की तुलना में इस बार फसल बढ़िया है और ज्यादा उपज की उम्मीद है। दरअसल पहले वह परंपरागत तरीके से खेती करती थी जबकि इस बार उन्होंने स्वी विधि के अंतर्गत पंक्तिबद्ध तरीके से गेहूँ के शोधित बीज की बुआई की गई है। पंक्ति से पंक्ति और पौधे से पौधे के बीच की उचित दूरी का ख्याल रखा गया है ताकि पौधों को फैलने के लिए पर्याप्त जगह मिल सके। यही कारण है कि एक बीज से कई बालियां निकली हैं। इसके अलावा खरपतवार नियंत्रण के लिए भी उपाय किए गए हैं।

इसी साल उसने श्री विधि से धान की खेती की थी। रेखा देवी बताती है कि एक कट्ठा जमीन में करीब 03 मन धान की उपज हुई जबकि परंपरागत तरीके से खेती करने पर उपज का आंकड़ा महज एक से डेढ़ मन तक रहता था जबकि एस.आर.आई. विधि की तकनीक से लागत मे भी कमी आयी। इस विधि की सफलता को देखते हुए रेखा देवी ने इस साल एस.डब्ल्यू.आई. विधि से गेहूँ की खेती करने का फैसला किया। रेखा देवी के पास अपनी ढाई कट्ठा जमीन है। इसके अलावा 2 कट्ठा जमीन उसने पट्टे (बंटाई) पर लिया है। इस तरह कुल साढ़े चार कट्ठा जमीन में उसने एस.डब्ल्यू.आई. विधि से गेहूँ की खेती की है। वह घर में उपयोग हेतु गेहूँ रखने के बाद, बाकी बचा गेहूँ बेच देंगी। रेखा देवी का पूरा परिवार खेती पर आश्रित है। वह और उसके पति पहले दूसरों के खेतों में काम करते थे। लेकिन अब उसने पट्टे पर जमीन लेकर उन्नत विधि से खेती करने की शुरुआत कर दी है। इससे उसे अच्छी आमदनी हो रही है। उसने अगले साल और अधिक जमीन पट्टे पर लेने की योजना बनाई है। रेखा देवी वीणा जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य हैं। वह वर्ष 2012 में जीविका से जुड़ीं। उनका कहना है कि महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक स्वालंबन की दिशा में जीविका द्वारा सशक्त किया गया जिससे वे आज स्वयं निर्णय लेने में सक्षम हैं।

नाम : रेखा देवी
समूह : वीणा जीविका स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन : प्रतिभा जीविका महिला ग्राम संगठन
ग्राम/पंचायत : थाला गढ़िया उत्तर
प्रखंड : त्रिवेणीगंज, सुपौल
पहले : परंपरागत तरीके से करती थीं खेती
अब : जीविका द्वारा बताई गई विधि अपना कर रहीं आधुनिक तरीके से खेती

- स्वी विधि के द्वारा अपेक्षाकृत कम लागत पर दोगुना उपज की प्राप्ति
- अपेक्षाकृत कम समय में फसल पक कर हो जाता है तैयार
- श्रीविधि से तीगुनी उपज प्राप्त करने के बाद रेखा देवी ने स्वी विधि से गेहूँ की खेती का मन बनाया

केले की खेती

धान–गेहूं की खेती तो सभी किसान करते हैं। लेकिन दूसरी नकदी फसलों की खेती करने का जोखिम बहुत कम किसान उठाते हैं। लेकिन छातापुर प्रखंड में लक्ष्मीनिया पंचायत के डोर्रा गाँव की इन्दुबाला देवी 2 एकड़ जमीन में केले की खेती कर रही है। इसके लिए उन्हें करीब 80,000 रुपये खर्च करना पड़ा। उसका कहना है कि केले की खेती करने की लागत ज्यादा होती है, लेकिन इससे अधिक आमदनी की भी संभावना रहती है। इतनी बड़ी रकम उसके पास नहीं थी। इसके बावजूद उसने केले की खेती करने का मन बना लिया। उसने जीविका के स्वयं सहायता समूह और ग्राम संगठन से कुल मिलाकर 46,000 रुपये उधार लिए। वहीं बाकी रुपये की व्यवस्था उन्होंने घर के अलावा अपने सगे–संबंधियों के माध्यम से की। वह कहती है, 'खेती में मोटी धनराशि लगाने में डर लगता है। फसल बर्बाद होने पर पूरा पैसा डूबने का खतरा रहता है। फिर भी मैंने हिम्मत की और करीब 2 एकड़ जमीन में केला लगाने के फैसले पर अटल रही और इसके लिए मैंने 80,000 रुपये खर्च किए।' वह बताती हैं कि अब केले से आमदनी होने लगी है। वह एक खानी केला 80 से 120 रुपये के आसपास बेचती हैं। केले की बिक्री के लिए कहीं जाना नहीं पड़ता बल्कि व्यापारी गाड़ी लेकर गाँव आते हैं और केला खरीद कर ले जाते हैं। वह अब तक 11,000 रुपये के केले की बिक्री कर चुकी हैं। उन्हें उम्मीद है कि अगले साल तक केले से अच्छी आमदनी होगी। इससे वह खेती की लागत आसानी से निकाल लेंगी और अच्छा–खासा मुनाफा भी। डोर्रा गाँव में इन्दुबाला के अलावा दो अन्य महिला किसान– बर्मिना देवी और जागेश्वरी देवी ने भी 10–10 कट्ठे में केले की खेती की है। बर्मिना देवी जीविका के राम स्वयं सहायता समूह से जबकि जागेश्वरी देवी सीता स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हैं। वह कहती है कि केले की खेती से यदि अच्छा मुनाफा मिला तो अगले साल से कुछ और किसान इसके लिए प्रेरित हो सकते हैं। केले की खेती में लंबा समय लगता है। एक बार केले की बुआई कर देने के बाद 3 साल तक इससे केले की पैदावार ले सकते हैं। इन्दुबाला देवी 4 साल पहले जीविका से जुड़ी है। उसने समूह से कर्ज लेकर भैंस खरीदा था। धीरे–धीरे उसने समूह से लिया कर्ज वापस कर दिया। वह कहती है कि घर में आमदनी का मुख्य स्रोत खेती ही है।

नाम : इन्दुबाला देवी
समूह : राम जीविका स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन : अयोध्या जीविका महिला ग्राम संगठन
सीएलएफ : उन्नति जीविका संकुल स्तरीय संघ
गांव : डोर्रा
पंचायत : लक्ष्मीनिया
प्रखंड : छातापुर, सुपौल
पहले : सामान्य तरीके से करती थीं खेती

- **इन्दुबाला देवी 2 एकड़ जमीन में कर रही है केले की खेती**
- **इसकी खेती के लिए उसने किया है 80,000 रुपये निवेश**
- **46,000 रुपये उधार लेकर लगा दी केले की खेती में**
- **इन्दुबाला को देख गाँव की अन्य महिला किसानों ने भी शुरू की केले की खेती**

पशुपालन : सही मायने में महिलाओं का आर्थिक स्वाबलंबन

खेती के बाद पशुपालन ग्रामीण क्षेत्र की अर्थव्यवस्था का मूल आधार है। इसे जीविकोपार्जन का दूसरा प्रमुख साधन माना गया है। यही कारण है कि जीविका ने ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को पशुपालन के लिए प्रोत्साहित किया, जिससे उनकी माली हालत तेजी से सुधर रही है। पशुपालन की वजह से न केवल उनके घर की आमदनी बढ़ी है बल्कि इससे उनके परिवार के स्वास्थ्य पर भी अनुकूल प्रभाव पड़ा है। जीविका के स्वयं सहायता समूहों से जुड़ीं गरीब महिलाओं ने अपनी छोटी–छोटी बचत के अलावा समूह से ऋण लेकर गाय, भैंस, बकरी जैसे मवेशी खरीद कर पशुपालन के क्षेत्र में कदम रखा है और इससे उनके जीवन में उल्लेखनीय बदलाव आया है। महिलाएँ गाय और भैंस के दूध को बाजार में बेचकर रोजाना कुछ न कुछ आय अर्जित कर रही हैं जबकि इसका कुछ हिस्सा अपने खाने के लिए भी रखती हैं। इससे उनके यहाँ बच्चों में कुपोषण की समस्या दूर करने में काफी हद तक मदद मिली है और महिलाओं का भी स्वास्थ्य सुधरा है। खास बात यह है कि गरीबी में फंसी इन महिलाओं के लिए पहले मुश्किल घड़ी में दूसरों से मदद मांगने के अलावा दूसरा कोई चारा नहीं होता था, लेकिन अब ये पशुधन उनके लिए 'संकट मोचक' की भूमिका में भी हैं क्योंकि ऐसे वक्त पर वे इससे तत्काल पैसे की व्यवस्था करने की हिम्मत रखती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में गरीब परिवारों की आत्मनिर्भरता में पशुपालन की बड़ी भूमिका हो सकती है।

पशुपालन में महिलाओं की भूमिका सर्वोपरी

राश्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के मुताबिक देश में पशुपालन के क्षेत्र में 80 ये 90 लाख लोगों को सीधा रोजगार मिला है जबकि लगभग इतने ही लोग अप्रत्यक्ष तौर पर भी इससे जुड़े हैं। भारत आज दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश है और यहाँ विश्व के कुल दूध उत्पादन का 13 फीसदी हिस्से का उत्पादन होता है। भारत में दूध उत्पादन का बड़ा हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों से आता है। खास बात यह है कि गाँवों में मवेशी पालन में महिलाओं की भूमिका सर्वोपरि है। महिलाएँ पशुपालन से जुड़े विभिन्न कार्यो यथा पशुओं की देखभाल, खानपान एवं पशु उत्पादों की बिक्री आदि में महत्त्वपूर्ण योगदान देती हैं। आंकडों के मुताबिक पशुपालन व दूध उत्पादन से जुड़े करीब 80 फीसदी से भी अधिक कार्यो की जिम्मेदारी सीधे तौर पर महिलाओं के ऊपर है। ऐसे में पशुपालन क्षेत्र के विकास को सीधे महिलाओं के उत्थान से जोड़कर देखा जा सकता है। मवेशी खरीदने के लिए पर्याप्त पूंजी का अभाव और अन्य संस्थागत बाधाओं को यदि दूर कर दिया जाए तो पशुपालन के माध्यम से महिलाएँ सही अर्थ में आर्थिक स्वालंबी बन सकेंगी।

बहरहाल, जीविका ने पशुपालन से जुड़ी इन्हीं बाधाओं को दूर करने का प्रयास किया है। सुपौल जिले के छातापुर, बसंतपुर, प्रतापगंज, त्रिवेणीगंज आदि प्रखंडों, जहाँ जीविका ने 3–4 साल पहले काम करना शुरू कर दिया था, में इसका असर अब दिखने लगा है। यहाँ गाँवों की ज्यादातर गरीब महिलाएँ जीविका के स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं हैं। ये महिलाएँ पहले छोटी–छोटी बचत कर समूह में अच्छा खासा धन जमा कर लेती हैं इसके बाद पूंजीगत जरूरतों को पूरा करने के लिए वे कर्ज का सहारा लेती हैं। ऐसा देखा गया है कि ये महिलाएँ समूह से उधार लेकर गाय, भैंस आदि खरीदने में खासी दिलचस्पी ले रही हैं। चूंकि गाँवों में सामूहिक स्तर पर कई महिलाएँ दूध उत्पादन से जुड़ गई हैं। इसलिए अब दूध बेचने के लिए उन्हें अधिक दिक्कतों का सामना नहीं करना पड़ रहा है। स्थानीय स्तर पर दूध का अच्छा–खासा बाजार उपलब्ध है। इस तरह पशुपालन के लिए पूंजीगत जरूरतों के साथ ही बाजार की समस्या भी दूर हुई है। सुपौल जिले में इस तरह के कई उदाहरण सामने हैं, जिससे साबित होता है कि पशुपालन कार्य अपनाने से महिलाओं के जीवन में वाकई सकारात्मक बदलाव आया है। जिले में ऐसी कई महिलाएँ हैं, जिन्होंने जीविका के सहयोग से पशुपालन का काम अपनाया है और अपने घर की आय बढ़ाई है। मिसाल के तौर पर इनमें से कुछ महिलाओं की सफलता की कहानी इस प्रकार है :–

दुग्ध उत्पादन से सुधरी घर की सेहत

घर के आगे अपनी जर्सी गाय को प्यार से सहला रही त्रिवेणीगंज प्रखंड के फुलकाहा गाँव की निर्मला देवी वर्षों से गाय पालने का काम करती रही है, लेकिन पहले उसके पास गाय की नस्ल इतनी अच्छी नहीं थी जो अधिक दूध दे सके। अब उसके दरवाजे पर अच्छी नस्ल वाली जर्सी गाय बंधी है। यह रोजाना 8 लीटर तक दूध देती है। निर्मला देवी अपने परिवार में खाने के लिए दूध रखकर शेष गाँव वालों को बेच देती है। गाँव के अन्य लोग अपने बच्चों के लिए उसके घर से दूध खरीद कर ले जाते हैं। निर्मला देवी बताती है कि 30 रुपये प्रति लीटर की दर से दूध की बिक्री हो जाती है और इसे बेचने के लिए कहीं जाना भी नहीं पड़ता। इससे उन्हें रोजाना 150 रुपये तक की आय होती है। इसमें गाय के खाने के लिए दाना–चोकर पर होने वाला खर्च भी निकल जाता है और कुछ मुनाफा भी हो जाता है। निर्मला देवी का कहना है कि घर में आमदनी का मुख्य स्रोत खेती है लेकिन इसके साथ दूध उत्पादन से उसके घर की सेहत सुधर गई है। अब हर दिन उसके घर में 100–150 रुपये तक की आमदनी होने लगी है जिससे किसी भी वक्त पैसे की जरूरत पूरी हो जाती है।

निर्मला देवी ने 35,000 रुपये में यह गाय खरीदी है। इसके लिए उसने समूह से 25,000 रुपये कर्ज लिये थे जबकि घर से उसने 10,000 रुपये की व्यवस्था की। वह बताती है कि दूध बेचकर होने वाली आमदनी से उसने कर्ज के 10,000 रुपये लौटा दिए हैं जबकि शेष रकम भी वह धीरे–धीरे कर लौटा रही है। निर्मला देवी खेती के कामों के अलावा सुबह–शाम गाय की देखभाल करती है। इसके लिए उन्हें अतिरिक्त समय नहीं देना पड़ता है। साथ ही खेत में होने वाली फसल से गाय के लिए चारे की व्यवस्था आसानी से हो जाती है।

निर्मला 28 जून 2012 को जीविका के कृष्णा स्वयं सहायता समूह से जुड़ी थी। तब से वह लगातार समूह में हर सप्ताह 10–10 रुपये बचत कर रही हैं। समूह में जुड़ने के बाद घर की आमदनी बढ़ाने के लिए उसने पशुपालन करना बेहतर समझा।

नाम : निर्मला देवी
समूह : कृष्णा जीविका स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन : दौलत जीविका महिला ग्राम संगठन
गांव : फुलकाहा
पंचायत : जदिया
प्रखंड : त्रिवेणीगंज, सुपौल
पहले : घर में सामान्य नस्ल की गाय थी, जिससे कम होता था दूध
अब : जर्सी गाय खरीदी और कर रही ज्यादा दूध उत्पादन, इसे बेच कर बढ़ाई घर की आमदनी

- निर्मला देवी ने समूह से ऋण लेकर खरीदी थी जर्सी गाय
- यह गाय अब रोजाना 8 लीटर दूध देती है
- 5 लीटर दूध 30 रुपये प्रति लीटर की दर से बेच देती है
- दूध की बिक्री से निर्मला देवी के घर रोजाना हो रही 150 रुपये की आमदनी

अब दूर गए वो दिन

बसंतपुर प्रखंड में परमानंदपुर पंचायत के पिपराहीनाग गाँव की अमिता देवी के घर अब दूध की कमी नहीं है। उसके घर के आगे बंधी गाय रोजाना करीब 6 से 7 लीटर दूध देती है। इसमें से वह 5 लीटर दूध बेच देती है, जबकि बचा दूध वह अपने परिवार के खाने के लिए रखती है। दूध की बिक्री करने से उसके घर में अब प्रतिदिन औसतन 120 से 150 रुपये तक की आमदनी हो रही है। अमिता देवी 3 साल पहले दीप जीविका स्वयं सहायता समूह से जुडी थी। यह समूह किरण जीविका महिला ग्राम संगठन का हिस्सा है।

नाम : अमिता देवी
समूह : दीप जीविका स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन : किरण जीविका महिला ग्राम संगठन
गांव : पिपराही नाग
पंचायत : परमानंदपुर
प्रखंड : बसंतपुर
जिला : सुपौल
पहले : मजदूरी की तलाश
अब : मजदूरी के अलावा गाय की देखभाल

अमिता बताती है कि दो साल पहले उसने गाय खरीदने की योजना बनाई। लेकिन इसके लिए पैसे कम पड़ रहे थे, ऐसे में उसने समूह से 11,000 रुपये कर्ज लिया। उसने धीरे–धीरे काम कर कर्ज के किश्तों का भुगतान कर दिया। अब यह भैंस दूध देने लगी है। वह बताती है कि घर में दूध होने से एक तो खाने–पीने की दिक्कत नहीं होती है। साथ ही घर में हर दिन आमदनी भी होने लगी है। अमिता और उसका परिवार पहले पूरी तरह मजदूरी पर ही निर्भर था लेकिन अब उसके घर में आमदनी के दूसरे स्रोत भी है। अमिता के मुताबिक पशुओं की देखभाल के लिए वह हर दिन समय निकाल लेती है। अमिता कहती है कि पशुपालन की वजह से अब उनके बुरे दिन दूर हो गए हैं। अपने पुराने दिनों को याद करते हुए वह कहती है, 'दो साल पहले तक स्थिति यह थी कि जरूरत के वक्त दो–चार पैसों के लिए भी दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता था। न चाहते हुए भी महाजन से अधिक ब्याज अदा कर कर्ज लेती थी, लेकिन अब वह हर दिन की आमदनी में कुछ पैसे बचा कर रखती है।'

- **गाय नहीं रहने से दूध खरीद कर खाना होता था मुश्किल**
- **अब घर में है गाय, इससे दूध खाने के अलावा इसकी बिक्री से हो जाती है अच्छी आमदनी**
- **अमिता देवी 3 साल पहले दीप जीविका समूह से जुड़ी थी**

घर में आयी खुशहाली

महंगाई के इस दौर में केवल खेती के सहारे परिवार का अच्छी तरह भरन–पोषण करना मुश्किल हो गया है। लेकिन खेती के साथ–साथ पशुपालन या इससे जुड़े कामों से थोड़ी बहुत आमदनी हो जाए तो परिवार के लिए जरूरी खर्च निकल जाते हैं। छातापुर प्रखंड के भीमपुर की रहने वाली रुक्मनी देवी के लिए अब केवल खेती ही परिवार की आमदनी का एकमात्र स्रोत नहीं रहा। उसने गौ पालन के साथ–साथ घर में आटा–चक्की का मिल भी खोल लिया है। गायत्री जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य रुक्मनी देवी के लिए यह सब अब संभव हुआ है।

नाम : रुक्मनी देवी
समूह : गायत्री जीविका स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन : खुशहाली जीविका महिला ग्राम संगठन
गांव : भीमपुर
पंचायत : भीमपुर
प्रखंड : छातापुर, सुपौल
पहले : खेत पर काम
अब : आटा चक्की की दुकान के अलावा गाय की देखभाल

आज से 3 साल पहले उसके लिए यह सब करना आसान नहीं था। लेकिन जब से वह जीविका के स्वयं सहायता समूह से जुड़ी है उसने समूह से पैसे उधार लेकर सबसे पहले एक गाय खरीदी। वह सुबह–शाम गाय की देखभाल करती है। गाय का दूध परिवार के लोग भी खाते हैं और बचे दूध बाजार में बेचकर पैसा भी कमाती है। रुक्मनी ने गाय खरीदने के लिए गायत्री समूह से 10,000 रुपये कर्ज लिया था। इसे चुकता करने के बाद उसने आटा मिल स्थापित करने के लिए दोबारा 14,000 रुपये का कर्ज लिया है। अब उसके पति मिल में गेहूं पिसाई कर अच्छी कमाई कर लेते हैं। मिल खुल जाने से आस–पास के लोगों को भी सुविधा हो गई है क्योंकि उन्हें गेहूं पिसवाने के लिए दूर नहीं जाना पड़ता है। गेहूं की पिसाई करने से उसके घर हर दिन 200–250 रुपये तक की आमदनी हो रही है। इससे रुक्मनी देवी के परिवार को बड़ा आधार मिला है। अब घर का खर्च चलाने के लिए उसे केवल खेत के सहारे नहीं रहना पड़ता है।

- **महंगाई के दौर में केवल खेती के सहारे घर चलाना मुश्किल**
- **रुक्मनी देवी में खेती पर निर्भरता घटाने के लिए पशुपालन एवं आटा मिल खोलने का मन बनाया**
- **पशुपालन एवं मिल से रुक्मनी देवी के घर हर दिन हो रही अच्छी आमदनी**

गाँव की नारी बन गयी कारोबारी

ग्रामीण विकास का मतलब केवल सड़क, बिजली, पानी जैसी बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध कराना नही बल्कि ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को जीविकोपार्जन से संबंधित विभिन्न गतिविधियों भी उपलब्ध करवाना है। ग्रामीण परिवारों का कौशल विकास हेतु प्रशिक्षित करना है जिससे उन्हें स्वरोजगार हेतु अच्छे साधन मुहैया कराया जा सके। जीविकोपार्जन को प्रोत्साहन मिलने से ही ग्रामीण परिवार अपनी आमदनी बढ़ा सकेंगे और इससे ही उनकी आर्थिक उन्नति संभव है।

दरअसल ग्रामीण क्षेत्र में आज भी जीविकोपार्जन को सीधे तौर पर खेती, कृषि व पशुपालन के अलावा कुछ हद तक कृषि से जुड़े छोटे–मोटे उद्यमों से जोड़कर देखा जाता है। लेकिन जीविका ने इन सबसे इतर अन्य व्यवसायों से भी ग्रामीण समुदाय खासकर महिलाओं को जोड़ने का प्रयास किया है। जीविका के सराहनीय प्रयास की बदौलत गाँव की गरीब महिलाएँ अब दुकानदारी जैसे कामों में हाथ आजमा रही हैं। परियोजना की मदद से जिले के इन चार प्रखंडों में बड़ी संख्या में महिलाएँ किराना, मनिहारी, चाय, पान, मिठाई, अंडा, कपड़ा, फर्नीचर, साइकिल, बढ़ई, नास्ता, आदि की दुकान खोलकर आय अर्जित कर रही हैं और आत्मनिर्भर हो रही हैं। अब तक घर के ही कामों में उलझ कर रह जाने वाली इन महिलाओं ने अब सफल कारोबारी के तौर पर अपनी पहचान बनाई है। परिणामस्वरूप उनके परिवार की आमदनी बढ़ी है और वे गरीबी से बाहर निकालने में सक्षम हुई हैं। इससे घर में भी उनकी इज्जत बढ़ी है। खास बात यह है कि गैर कृषि से जुड़े इन व्यवसायों के प्रति गाँवों में बढ़ते रुझान से कृषि पर लोगों की निर्भरता कम करने में मदद मिली है। परियोजना ने महिलाओं को भी दुकान या अन्य छोटे–मोटे व्यवसायों से जोड़ने के लिए सामाजिक एवं आर्थिक तौर पर सक्षम बनाया है। दुकानदारी या अन्य तरह के कार्यों में आगे आने से महिलाओं में आत्मनिर्भरता के साथ–साथ आत्मविश्वास भी बढ़ा है। इसके अतिरिक्त महिलाओं को नियमित रूप से स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वच्छता के अलावा विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी उपलब्ध कराई जाती है। इन तमाम प्रशिक्षणों एवं जानकारियों से महिलाओं में जागरूकता और बौद्धिक क्षमता का स्तर बढ़ता है।

इसी तरह आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में जीविका सर्वप्रथम समूह से जुड़ी महिलाओं को साप्ताहिक बचत करने की आदत डालने के लिए प्रेरित करती है। इन छोटी–छोटी बचतों के सहारे समूह के पास एक बड़ी धन राशि एकत्र होती है। इसके अलावा जीविका की ओर से समूह को शुरुआत में आरंभिक पूंजी निवेश (आई.सी.एफ.) के रूप में 30,000 से 60,000 रुपये और परिक्रमी निधि (रिवॉल्विंग फंड) के तौर पर 15,000 रुपये दिए जाते हैं। बैंक से भी समुह को ऋण (कैश क्रेडिट) के तौर पर 50,000 रुपये दिलवाया जाता है। कुल मिलाकर समूह के लिए यह अच्छी रकम हो जाती है, जिससे समूह की महिलाओं के लिए अपना स्वरोजगार–कारोबार या कोई उद्यम शुरू करने के वास्ते उनकी शुरुआती पूंजीगत जरूरतें पूरी होती हैं।

सबसे बड़ी बात यह है कि समूह के बीच होने वाले हर तरह के वित्तीय लेन–देन समूह की दीदियां अपनी जरूरतों के अनुसार आपस में विचार–विमर्श करके तय करती हैं। इससे उनमें सामूहिक निर्णय क्षमता का भी विकास होता है। इसके अतिरिक्त आगे चलकर इन समूहों का संयोजन ग्राम संगठन एवं संकुल स्तरीय संघ से किया जाता है, जहाँ से समूह की बड़ी पूंजीगत जरूरतें पूरी होती रहती है। तमाम दिक्कतों के बावजूद व्यवसाय की दुनिया में कदम रख कर महिलाओं ने निश्चित तौर पर मिसाल कायम की है। इनमें से कुछ महिलाओं की कहानियां प्रस्तुत की जा रही हैं.....

व्यवसाय से बदला जीवन

कभी घर की चहारदिवारी से बाहर कदम न रखने वाली और पति की मजदूरी पर आश्रित प्रतापगंज के सुरयारी टोला की नीलू देवी की जिंदगी अब पूरी तरह बदल गई है। वह अब गृहिणी के साथ–साथ एक सफल कारोबारी भी है। उसने सड़क किनारे स्थित अपने घर के आगे मनिहारी की एक दुकान खोल ली है। घर का कामकाज समेटने के बाद वह दिन भर दुकान में रहती है। दुकान से होने वाली आय से वो अपने बच्चों को अच्छा खान–पान और अच्छी शिक्षा दे पा रही है। नीलू देवी करीब डेढ़ साल पहले शिव जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी थी। समूह से जुड़ने के साथ ही उन्होंने 10 रुपये की साप्ताहिक बचत की आदत डाली। वह समूह की नियमित बैठक में हिस्सा लेती है और इस दौरान उन्होंने लिखना–पढ़ना भी सीख लिया। लेकिन उसकी जिंदगी में सबसे बड़ा बदलाव तब आया जब उन्होंने घर की आमदनी बढ़ाने के लिए स्वरोजगार करने का फैसला किया।

नाम : नीलू देवी
समूह : शिव स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन : उमंग जीविका महिला ग्राम संगठन
ग्राम/मोहल्ला: प्रतापगंज सुरयारी टोला
पंचायत : भवानीपुर दक्षिण
प्रखंड : प्रतापगंज
जिला : सुपौल
पहले : घर के कामों में निकल जाता था समय
अब : चला रही मनिहारी दुकान

- नीलू देवी ने घर की चहारदिवारी से बाहर कारोबार की दुनिया में रखा कदम
- 10000 रुपये की छोटी पूंजी के साथ उसने खोली अपनी दुकान
- दुकान चला कर कमा रही 200 रुपये प्रति दिन

आमतौर पर स्वरोजगार शुरू करना बेहद जोखिम भरा कदम होता है, पर नीलू ने अपने ही घर के आगे के हिस्से में दुकान शुरू किया। इस फैसले में नीलू का पूरा परिवार उसके साथ था। नीलू कुछ पैसों का बंदोबस्त करने के बाद अपने घर से किया और बाकी उसने समूह से 10,000 रुपये कर्ज लिया। इससे दुकान खोलने के लिए उसके पास शुरुआती पूंजी की व्यवस्था हो गई। छोटी पूंजी के साथ ही सही उसने करीब 10 माह पहले मनिहारी की दुकान शुरू की। दुकान से रोजाना लगभग 200 रुपये की आमदनी हो जाती है। उधर, उनके पति अभी भी बाहर मजदूरी करने जाते हैं। इस तरह घर में पहले की तुलना में अब दोगुनी आमदनी होने लगी है। इससे घर का खर्च चलाने के बाद वह कुछ पैसे बचाने में भी सक्षम है। हालांकि वह अभी समूह से लिए कर्ज में से केवल ब्याज का ही भुगतान कर रही है। लेकिन उनका इरादा जल्द से जल्द इस कर्ज का भुगतान कर दोबारा और कर्ज लेने का है ताकि वह अपनी दुकान का विस्तार कर सकें।

रोजगार के चयन के बारे में पूछे जाने पर वह कहती है कि महिलाओं के लिए दुकान चलाना अन्य कामों की तुलना में ज्यादा आसान है। वह घर के कामों के अलावा दुकान चलाने के लिए पर्याप्त समय निकाल लेती है। इसके साथ ही घर एवं बच्चों की देख–रेख भी हो जाती है। यही कारण है कि घर की आमदनी बढ़ाने के लिए उसने दुकान खोलना बेहतर समझा। बचत एवं कर्ज के तौर पर उन्हें आर्थिक संबल मिला है। साथ ही सामाजिक स्तर पर एकजुटता के साथ–साथ उनमें जागरूकता भी आई है। अब समाज की सभी महिलाएँ, जो समूह से जुड़ी हैं, एक साथ बैठकर अपनी समस्याओं पर चर्चा करती हैं। उनमें तमाम मुद्दों पर जागरूकता का स्तर बढ़ रहा है।

उम्मीद की नई किरण

वर्ष 2008 में कुशहा बांध टूटते ही पूरा बसंतपुर प्रखंड जलमग्न हो गया। तमाम गाँव पानी में डूब गए, अधिकांश घर उजड़ गए और मवेशी बाढ़ में बह गए। जान–माल का भारी क्षति हुई थी। बाढ़ खत्म होते ही चारों ओर फैली तबाही, अपनों के बिछड़ने का दुख–दर्द और बाद में महामारी ने बचे लोगों को पूरी तरह तोड़ दिया था। बाढ़ के बाद रोजी–रोटी का कोई सहारा नहीं बचा था। जानवती देवी के परिवार में 3 बच्चों समेत पूरे 5 लोगों को दो वक्त की रोटी मिलना मुश्किल हो गया था। जानवती देवी मजदूरी करती तो उसके पति रिक्शा चलाकर किसी तरह परिवार का गुजारा करते। धीरे–धीरे साल दो साल गुजर गए, मगर बदहाली जस की तस बनी रही। इसी बीच जीविका ने बसंतपुर प्रखंड में जुलाई 2010 से अपने कार्यक्रम की शुरुआत की। परियोजना द्वारा महिलाओं के स्वयं सहायता समूह का गठन किया जा रहा था। आसपास की महिलाओं को समूह में जुड़ते देख जानवती देवी भी सीता स्वयं सहायता समूह से जुड़ गई। वह रोजाना बैठक में हिस्सा लेने लगी और नियम पूर्वक प्रति सप्ताह 10–10 रुपये बचत करने लगी। परिवार की आमदनी बढ़ाने के लिए जानवती देवी ने घर के आगे किराने की एक दुकान खोलने की योजना बनाई। कुछ पैसे बचाकर रखे थे, और बाकी उसने समूह से 2,000 रुपये उधार लेकर इसे पूरा किया। ग्राहकों की अच्छी भीड़ देख जानवती देवी ने दोबारा समूह से 4,000 रुपये कर्ज लेकर इस दुकान में लगाया। वह बताती है कि फिलहाल दुकान में 7,000 रुपये की पूंजी लगी है। किराना दुकान से धीरे–धीरे आमदनी बढ़ने लगी। ऋण भी उसने वापस कर दिया और पुनः एक नये दुकान के लिए समूह से 15,000 रुपये उधार लिया है। जानवती देवी ने अपने बेटे अजय के लिए वीरपुर के पुरानी बाजार में मोबाइल की दुकान खोली। इस तरह 2011 में जीविका से जुड़ने और फिर कारोबारी दुनिया में कदम रखने वाली जानवती देवी के घर अब एक नहीं बल्कि दो दुकानें हैं और अब वह समूह से ली गई कर्ज की राशि की नियमित वापसी कर रही है। अब उन्हें रोजी–रोटी के लिए घर से बाहर नहीं जाना पड़ता है। उन्हें इस बात की भी खुशी है कि अपने पढ़े–लिखे बेटे को रोजगार के लिए भटकना नहीं पड़ा। वह अपनी बेटी सरस्वती कुमारी को इन्टरमीडिएट तक पढ़ा चुकी है और आगे भी पढ़ाना चाहती है। जानवती कहती है कि एक वक्त था जब उसे कोई उम्मीद नहीं दिख रही थी। तभी जीविका का सहारा मिला तो उसमें हिम्मत आई और उसने अपने परिवार को गरीबी से उबारा जिससे उसका परिवार अब तरक्की के रास्ते पर है।

नाम : जानवती देवी
समूह: सीता जीविका स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन : चंद्रमुखी जीविका महिला ग्राम संगठन
सीएलएफ: जीवन ज्योति संकुल स्तरीय संघ
गांव – फतेहपुर वार्ड नंबर– 2
प्रखंड – बसंतपुर
जिला – सुपौल, बिहार
अब : गांव में ही किराने एवं मनिहारी की दुकान

- 2008 में प्रलयकारी बाढ़ के बाद पूरी तरह तबाह हो गया था जानवती देवी का परिवार
- परिवार को गरीबी से निकालने के लिए उसने समूह से कर्ज लेकर शुरू की छोटी दुकान
- इसी दुकान से तरक्की करते हुए उसने खोल ली एक और दुकान

चाय की दुकान

बसंतपुर के अमृत चौक पर चाय की दुकान चला कर अपने परिवार का भरण–पोषण करने वाली पवित्रा देवी के सिर पर अब महाजन के कर्ज का बोझ नहीं है। उसने करीब दो साल पहले ही महाजन के कर्ज से छुटकारा पा लिया है। अब चाय की दुकान से होने वाली कमाई से उसके परिवार का खर्च चल जाता है। परिवार में आए इस बदलाव के पीछे जीविका की अहम भूमिका रही। पवित्रा देवी बताती है कि करीब ढाई साल पहले वह वैष्णो स्वयं सहायता समूह से जुड़ी थी। शुरुआत में वह इससे जुड़ने को ज्यादा इच्छुक नहीं थी, लेकिन आसपास की महिलाओं को इससे जुड़ते देख उससे प्रेरित होकर वह भी समूह की सदस्य बन गई।

समूह से जुड़ने के बाद उन्हें मालूम हुआ कि यहाँ काफी सस्ते दर पर कर्ज लेकर कोई रोजगार किया जा सकता है। परिवार के लिए पहले किसी खास जरूरत के वक्त महाजन से पैसा उधार मांगने के अलावा कोई चारा नहीं होता था। ऐसे में कारोबार के लिए पैसा जुटाने की बात सोचना भी मुश्किल था। लेकिन जीविका ने इस सोच को साकार किया और अपना कारोबार शुरू किया। वह बताती है कि अमृत चौक पर चाय की दुकान लगाने के लिए उसे समूह से अलग–अलग किस्तों में 20,000 रुपये तक की वित्तीय मदद मिली। इस रकम से उसने दुकान शुरू की, जिससे उसके परिवार को रोजगार मिला और घर की आमदनी बढ़ी। वह बताती है कि दुकान की कमाई से उसने कर्ज वापस कर दिया है। लेकिन दुकान का विस्तार करने के लिए वह और ऋण लेना चाहती है। इसके अलावा वह अपने बहू के वास्ते सिलाई मशीन भी खरीदना चाहती है ताकि घर में और दो–चार पैसे की आमदनी बढ़े। साथ ही उसने अपने इलाज के लिए भी अतिरिक्त कर्ज की मांग की है। वहीं उसके बड़े बेटे ने कुछ माह पहले परिवार से अलग होकर पास में ही पान की दुकान खोली है। इसके लिए भी उन्हें समूह से मदद मिली क्योंकि उसकी बड़ी बहू समूह से जुड़ी है। अपने पुराने दिनों को याद करते हुए कहती है कि वह कर्ज के नाम से डर जाती थी क्योंकि ब्याज की दर काफी ज्यादा रहने से उसे लौटाने में मुश्किल होता है। लेकिन जीविका के स्वयं सहायता समूह से मिले सस्ते ऋण को उसने कारोबार में लगाया। परिणामस्वरूप घर के हालात बेहतर हुए। अपनी जरूरतों के लिए अब उन्हें किसी के आगे हाथ फैलाना नहीं पड़ता है। पवित्रा देवी कहती है कि अब वह बिजली बिल समेत सभी बकाये का भुगतान समय पर कर देती है। पवित्रा देवी अब हस्ताक्षर करना भी सीख लिया है। साथ ही वह समूह की बैठक में हिस्सा लेकर विभिन्न मुद्दों पर चर्चा भी करती है। वह कहती है सामाजिक जागरूकता की वजह से महिलाएँ विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ लेने के लिए आगे आई हैं। अब वे डटकर अपने अधिकारों की बात करती हैं।

नाम : पवित्रा देवी
समूह : वैष्णो जीविका स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन : महादेव जीविका महिला ग्राम संगठन
ग्राम/पंचायत : बसंतपुर
प्रखंड : बसंतपुर, सुपौल
मोबाइल नंबर : 9199286321
पहले : घर पर बैठे–बैठे निकल जाता था समय
अब : पति के साथ मिलकर चलाती चाय की दुकान

- समूह में जुड़ने के बाद पवित्रा देवी को मिला महाजन से छुटकारा
- समूह से कर्ज लेकर उसने सड़क किनारे शुरू की चाय की दुकान
- चाय की दुकान से होने वाली आय से चल रहा घर और नियमित रू॰ से कर रही कर्ज का भी भुगतान

बच्चों की शिक्षा, अब होगी पूरी

बसंतपुर प्रखंड में हृदयनगर पंचायत के भवानीपुर गाँव की सुनीता देवी अपने घर के आगे स्टेशनरी की दुकान चलाती है। इससे उनके घर में थोड़ी–बहुत आय हो जाती है, जिसे वह अपने चार बच्चों की पढ़ाई पर खर्च करती है। सुनीता देवी खुद भी इन्टरमीडिएट तक पढ़ी है, लेकिन वह अपने बच्चों को इससे ज्यादा शिक्षा देना चाहती है। वह बताती है कि पहले यह मुमकिन नहीं था क्योंकि चार बच्चे, पति–पत्नी और बूढ़ी मां समेत कुल 7 सदस्यों वाले परिवार का खर्च अकेले उनके पति की कमाई से चलता था। उनके पति रंजीत प्रसाद गाँव में पट्टे पर जमीन लेकर खेती करते हैं। इससे उतनी आमदनी नहीं होती कि परिवार का गुजारा अच्छी तरह हो जाए। ऐसे में बच्चों को पढ़ाने के लिए सुनीता देवी ने जीविका के सहयोग से कारोबार की दुनिया में कदम रखा। परिणामस्वरूप घर की आमदनी बढ़ी और अब वह बच्चों को अच्छी शिक्षा दे पा रही है।

नाम : सुनीता देवी
समूह : ओम जीविका स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन : सीता जीविका महिला ग्राम संगठन
गांव : भवानीपुर, पंचायत : हृदयनगर
प्रखंड : बसंतपुर, सुपौल
मोबाइल नंबर : 7765965316
पहले : घर का काम
अब : घर के आगे खुद चलाती हैं दुकान

- इन्टर तक पढ़ी–लिखी सुनीता देवी के लिए नहीं दिख रोजगार का कोई विकल्प
- समूह से जुड़ने के बाद उसके दिमाग में स्वरोजगार का आया विचार
- समूह से मिली पूंजी के बाद उसने अपने घर के आगे शुरू की दुकान
- अब दुकान से घर को मिल रहा बड़ा सहारा

सुनीता इन्टर तक पढ़ी–लिखी होने के बावजूद उसके पास कोई रोजगार नहीं था। वह चाह कर भी घर चलाने में पति की किसी तरह की मदद नहीं कर पा रही थी। घर के कामों के अलावा उसके पास ऐसा कोई काम नहीं था जिससे वह घर के लिए दो–चार पैसे कमा सकें। इसी दौरान हृदयनगर पंचायत में जीविका का प्रसार हो रहा था और वह भी जीविका के ओम स्वयं सहायता समूह से जुड़ गई। समूह के सहयोग से वह अपने घर जो भावानीपुर चौराहे के पास ही स्थित है। मुख्य सड़क के किनारे घर होने और पढ़ी–लिखी होने के कारण सुनिता ने स्टेशनरी की दुकान खोलने का निर्णय लिया। काफी सोच–विचार के बाद सुनीता ने दुकान तैयार की। लेकिन इतने पैसे नहीं थे कि वह दुकान में शुरुआती पूंजी लगा सके। ऐसे में उन्होंने साल भर पहले समूह से 15,000 रुपये कर्ज लिया। कर्ज के पैसे से दुकान की पूंजीगत जरूरतें पूरी हो गईं। सुनीता देवी प्रतिदिन घरेलू काम निपटाने के बाद दुकान में बैठ जाती है। दुकान से रोजाना 200 से 300 रुपये तक की कमाई हो जाती है। दुकान की कमाई से वह कर्ज की भी नियमित वापसी कर रही है। अब तक वह करीब 10,000 रुपये वापस कर चुकी है जबकि 5,000 अब भी बकाया है, जिसे वह नियमित रूप से भुगतान कर रही है। सुनीता देवी को शुरुआत में दुकान चलाना मुश्किल लग रहा था लेकिन अब वह इस काम में दक्ष हो गई है और दुकान से जुड़ी अधिकांश जिम्मेदारियां खुद ही संभालती है। हालांकि समय–समय पर उसका बड़ा बेटा इस काम में थोड़ी बहुत मदद कर देता है।

मजबूरी में करती थी मजदूरी

त्रिवेणीगंज प्रखंड में लतौना मिशन गाँव की संगीता इग्नियासिस की माली हालत पहले की तुलना में अब सुधरी है। वह और उनके पति इग्नियासिस युसूफ दोनों मिलकर लतौना चौक के पास चाय–पान एवं अंडे की दुकान चलाते हैं। इससे होने वाली कमाई से घर की आमदनी बढ़ाने में मदद मिली। संगीता बताती है कि समूह से जुड़ने के पहले हालात अच्छे नहीं थे और घर चलाने के लिए मजदूरी करनी पड़ती थी। ऐसे में घर पूरी तरह मजदूरी पर ही आश्रित था और 'रोज कमाओ, रोज खाओ' वाली स्थिति थी। लेकिन अब उसके घर में हर दिन कुछ न कुछ आमदनी होती है और अब उन्हें मजदूरी के लिए घर के बाहर कहीं नहीं जाना पड़ता है।

नाम : संगीता इग्नियासिस

समूह : खुशबू स्वयं सहायता समूह

ग्राम संगठन : नारी महिला जीविका ग्राम संगठन

गांव : लतौना मिशन

पंचायत : लतौना

प्रखंड : त्रिवेणीगंज, सुपौल

पहले : गृहणी

अब : पति के साथ मिलकर चलाती हैं किराना एवं पान की दुकान

- **एक साधारण गृहणी से कारोबार की दुनिया में कदम रखना नहीं था आसान**
- **लेकिन जीविका ने दी हिम्मत और वित्तीय सहायता तो उसने शुरू की दुकान**
- **समूह से 10,000 रुपये कर्ज लेकर शुरू की अंडे और चाय–पान की दुकान**

जीविका के सहयोग से संगीता और आसपास की महिलाओं ने आपस में मिलकर 20 मई 2011 को खुशबू स्वयं सहायता समूह का गठन किया था। सभी महिलाओं ने समूह के लिए नियमित बचत शुरू की। अपना रोजगार शुरू करने के लिए उसने समूह से 10,000 रुपये कर्ज लिये। इस पैसे से उन्होंने चाय–पान एवं अंडे की दुकान खोली। दुकान से होने वाली आमदनी से संगीता ने समूह से लिए कर्ज की वापसी कर दी। इसके अलावा उसने अपने लिए भी कुछ पैसे की बचत की। पूरे कर्ज का भुगतान करने के बाद संगीता ने दोबारा समूह के माध्यम से 15,000 रुपये कर्ज लेकर गाय खरीदी है। संगीता खुद सुबह–शाम गाय की देखभाल करती है। वह कहती है कि गाय का दूध घर में ही खाने के लिए रखती है क्योंकि अपने छोटे–छोटे चार बच्चों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए वह खाने–पीने पर खास ध्यान देती है। संगीता बताती है कि घर की आमदनी से ही वह इस कर्ज की राशि के आधे हिस्से का भुगतान कर चुकी है और अब करीब 7,000 रुपये बकाया है। इस पैसे का भी वह नियमित भुगतान कर रही है। संगीता और उसका पति अपनी दुकान के विस्तार की योजना बना रहे है और इसके लिए उन्हें और पैसे की दरकार है। वह बताती है कि जब तक वह पहले लिए पैसे का भुगतान नहीं कर देती तब तक नया कर्ज नहीं लेगी। इसीलिए जल्द से जल्द वह पुराने कर्ज का भुगतान कर रही है। जीविका से मिले लाभ के बारे में उनका कहना है कि इसकी मदद से न केवल उसने स्वरोजगार की दिशा में कदम बढ़ाया बल्कि इससे उनमें आत्मविश्वास भी पैदा हुआ। अब वह अपने अधिकारों के बारे में जानती है और सरकारी योजनाओं का लाभ लेने के लिए जागरूक रहती है। इसके अलावा समाज की अन्य महिलाओं को भी इसके लिए प्रेरित करती है।

स्वरोजगार से मिला घर को आधार

कभी एक–एक पैसे के लिए मोहताज रहने वाली छातापुर के चकला गाँव की मंजू देवी अब हर दिन हजार–पांच सौ रुपये का लेन–देन करती है। अब उसके परिवार को चंद रुपयों के लिए किसी के आगे हाथ फैलाना नहीं पड़ता है। उनकी जिंदगी में यह बदलाव जीविका द्वारा दिखाए गए रास्ते पर चलने की वजह से हुआ। मंजू देवी ने जीविका के सहयोग और परिवार की मदद से गाँव में ही सड़क के किनारे किराने की एक दुकान खोल ली है। दुकान से होनी वाली कमाई से वह परिवार का भरण–पोषण करने के साथ अपना भविष्य भी संवार रही है। गृहिणी से कारोबारी बनने तक के सफर के बारे में उनका कहना है कि शुरुआत में यह काम मुश्किल जरूर था लेकिन जीविका के स्वयं सहायता समूह से जुड़ने से उसमें उद्यम करने का साहस आया। समूह से जुड़ने के बाद उन्होंने साप्ताहिक बचत की आदत डाली। साथ ही उसने यहाँ पैसों के लेन–देन को बारीकी से सीखा। वह कहती है कि जीविका ने उपलब्ध संसाधनों में स्वरोजगार के विकल्प सुझाए और इससे उन्हें जीविकोपार्जन के लिए दुकान के चयन में सुविधा हुई।

नाम : मंजू देवी
समूह : राधे कृष्ण जीविका स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन : प्रगतिशील जीविका महिला ग्राम संगठन
गांव : चकला
पंचायत : डहरिया,
प्रखंड : छातापुर, सुपौल
मोबाइल नं : 8298602052
पहले : घर का काम
अब : चलाती है किराने की दुकान

- कभी एक–एक पैसे के लिए मोहताज रहने वाली मंजू देवी अब हर दिन करती हजार पांच सौ रुपये की लेनदेन
- जीविका ने दी हिम्मत और पूंजी तो बन गई कारोबारी
- दुकानदारी से लेकर खरीद–बिक्री के हिसाब पर रखती है पूरी पकड़

मंजू के मुताबिक दुकान के लिए पूंजी का अभाव था, ऐसे में उसने समूह से 20,000 रुपये कर्ज की मांग की। समूह की सदस्यों द्वारा उनकी मांग पर विचार करने के बाद किस्तों में ये रकम उपलब्ध करा दी गई। इसके बाद घर से कुछ पूंजी लगाकर उसने दुकान शुरू करने में सफलता पाई। फिलहाल दुकान में अच्छी पूंजी लगी है और इससे वह रोजाना औसतन 500 रुपये तक की बिक्री कर लेती है। दुकान के लेनदेन का हिसाब–किताब मंजू खुद संभालती है जबकि दुकान चलाने में पति पवन कुमार उसकी मदद करते हैं। पवन पहले केवल खेती–बारी का काम करते थे, जिससे आमदनी बेहद कम थी और परिवार की जरूरतें पूरी नहीं हो पाती थीं। लेकिन दुकान से भी आय होने से घर की आर्थिक स्थिति सुधर गई है। इससे वह कर्ज के किस्तों का भुगतान आसानी से कर रही है। मंजू देवी का कहना है कि सारा कर्ज चुका देने के बाद वह दुकान के विस्तार के लिए आगे भी कर्ज लेना चाहती है।

दुकान शुरू करने से मिला सम्मान

बसंतपुर प्रखड में हृदयनगर पंचायत की पूजा देवी किराने की दुकान चलाने में व्यस्त हैं। घर का कामकाज समेटने के बाद वह दुकान पर बैठती हैं और रोजाना अच्छी कमाई कर लेती है। पूजा ने घर में बचत के पैसे से दुकान शुरू किया था लेकिन इसमें पूंजी निवेश करने के लिए उसने कुबेर जीविका स्वयं सहायता समूह के माध्यम से 10,000 रुपये का इंतजाम किया। परिणामस्वरूप दुकान में अब अच्छी पूंजी लगी है। हालांकि दुकान के विस्तार के लिए उसे और पैसों की दरकार है लेकिन समूह से उसे अतिरिक्त कर्ज नहीं मिल पाया है। पूजा के घर में उसके पति की कमाई के अलावा दुकान से भी आमदनी होने लगी है। पति प्रवीण कुमार गुप्ता भीमनगर में काम करते है। पूजा के मुताबिक जीविका के स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के बाद उसके जीवन में कई बदलाव आए। वह बताती है कि समूह से सस्ती दरों पर कर्ज लेकर उसने सबसे पहले महाजन से लिए महंगे कर्ज की वापसी की। जीविका से जुड़ना इसलिए भी अच्छा रहा क्योंकि इससे उसने अपने पैरों पर खड़े होने के लिए कारोबार की दुनिया में कदम रखने का फैसला किया। जहाँ तक सामाजिक स्तर का सवाल है पूजा का मानना है कि विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर चर्चा की वजह से महिलाओं में काफी जागृति आई है। वे अब सामाजिक बुराइयों के खिलाफ भी आवाज उठाने लगी हैं। उन्होंने कहा कि पहले वह केवल घर का ही काम देखती थी। लेकिन जब से वह दुकान चलाने लगी है तब से उसका आत्मविश्वास बढ़ा है। अब पैसों के मामले में भी उसके हाथ तंग नहीं है।

नाम : पूजा देवी
समूह : कुबेर जीविका स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन : सीता जीविका महिला ग्राम संगठन
गांव/पंचायत : हृदयनगर
प्रखंड : बसंतपुर, सुपौल
मोबाइल नं. : 8051648675
पहले : घर का काम
अब : किराने की दुकान कर अपने घर की आमदनी बढ़ाई

- जीविका समूह से जुड़ने के बाद पूजा की जिंदगी में आए कई अहम बदलाव
- जगा आत्मविश्वास तो पूजा ने खोल ली किराने की दुकान
- दुकान से होने वाली आय से वह कर रही कर्ज का भुगतान
- हर दिन हो रही आमदनी से पूजा अब आर्थिक रूप से अपने पैरों पर खड़ी है

पूरी हुई पूंजी

रोजगार की संभावना, साधन, उद्यम करने की साहस एवं इच्छा होने के बावजूद केवल पूंजी के अभाव में यदि किसी को मजदूरी के सहारे परिवार चलाना पड़े तो यह स्थिति वांछनीय नहीं है। त्रिवेणीगंज प्रखंड में बभनगामा पंचायत की संजू देवी की दो साल पहले यही स्थिति थी। संजू देवी का घर सुपौल–त्रिवेणीगंज मुख्य मार्ग पर स्थित है। घर के आगे उसने दुकान खोलने के लिए मकान भी बना रखा था। उसका पति उपेंद्र गुप्ता यहाँ अपनी दुकान खोलना चाहते थे, लेकिन पूंजी के अभाव में वह ऐसा नहीं कर पा रहे थे। कहीं से पूंजी की व्यवस्था भी नहीं हो पा रही थी। मजबूरन उसके पति काम की तलाश में बिहार से बाहर दिल्ली–पंजाब चले गए थे, जबकि संजू देवी खुद मजदूरी कर घर का खर्च चलाती थी। लेकिन जून 2012 में जीविका के कबीर स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के बाद संजू देवी को रास्ता दिखा।

नाम : संजू देवी
समूह : कबीर जीविका स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन : माला जीविका महिला जीविका ग्राम संगठन
गांव : लालपट्टी
पंचायत : बबनगामा
प्रखंड : त्रिवेणीगंज, सुपौल
पहले : मजदूरी
अब : किराने की दुकान

संजू देवी ने समूह से 5,000 रुपये उधार लेकर किराने की दुकान के लिए पूंजी की व्यवस्था की और मजदूरी छोड़ कर घर के आगे दुकान चलाना शुरू कर दिया। पास में ही त्रिवेणीगंज का मुख्य बाजार होने की वजह से दुकान पर ग्राहकों की अच्छी भीड़ होने लगी। यह देख संजू देवी ने अपने पति को भी वापस बुला लिया। उसने समूह से दोबारा 5,000 रुपये लेकर दुकान में पूंजी निवेश किया। अब वह और उसके पति दोनों मिलकर दुकान चलाते हैं और इससे होने वाली कमाई से घर का खर्च चलता है। साथ पूरा परिवार एक साथ रहने से घर की देखभाल भी अच्छी तरह हो जाती है। अब उन्हें मजदूरी के लिए कहीं बाहर नहीं जाना पड़ता।

- **पूंजी के अभाव में नहीं शुरू कर पा रही थी दुकान**
- **समूह से कर्ज लेकर की पूंजी की व्यवस्था और शुरू की किराने की दुकान**
- **संजू देवी का पति दिल्ली, पंजाब जाना छोड़ दिया और पत्नी के साथ मिलकर चलने लगा दुकान**

संजू देवी बताती है कि पहले पूंजी की व्यवस्था के लिए उसके पास कोई रास्ता नहीं दिख रहा था। बैंक से कर्ज लेना इतना आसान नहीं है जबकि महाजन से ज्यादा ब्याज पर कर्ज लेकर दुकान में पूंजी लगाने से सारी कमाई ब्याज अदायगी में ही चली जाती। यही कारण था कि दुकान चलाने की जगह वह मजदूरी के सहारे परिवार चला रही थी। लेकिन जीविका से जुड़ने के बाद उनकी यह समस्या दूर हुई। वह दुकान से रोजाना 200 रुपये तक कमाई कर लेती है। इससे वह नियमित रूप से कर्ज की मासिक किस्तों का भुगतान कर रही है। संजू देवी का कहना है कि दुकान के विस्तार के लिए वह करीब 25,000 रुपये कर्ज लेना चाहती है।

समूह से मिला सहारा

''मजदूरी करने की एक उम्र होती है लेकिन कारोबार करने की नहीं।'' यह कहना है त्रिवेणीगंज प्रखंड में लालपट्टी गाँव की तारा देवी का। करीब 50 की उम्र पार कर चुकी तारा देवी अब मजदूरी करने में सक्षम नहीं है। वह स्टेट हाइवे सुपौल–त्रिवेणीगंज मुख्य मार्ग पर किराने की छोटी सी दुकान चला कर कुछ पैसे अर्जित कर लेती है।

नाम : तारा देवी
समूह : कबीर जीविका स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन : माला जीविका महिला ग्राम संगठन
गाँव : लालपट्टी
पंचायत : बभनगामा
प्रखंड : त्रिवेणीगंज, सुपौल
पहले : मजदूरी के सहारे चलता था परिवार
अब : किराने की दुकान से करती हैं गुजारा

- 4 बच्चों को बड़ा करने में तारा देवी और उसके पति की उम्र गुजर गई
- लेकिन बूढ़ापे पर उन्हें नहीं मिला अपने बच्चों का सहारा
- अधिक उम्र में मजदूरी करना संभव नहीं था, परिणामस्वरूप उसने पूंजी लेकर शुरू की दुकान और बनी आत्मनिर्भर

तारा देवी और उसका परिवार पूरी तरह मजदूरी पर आश्रित था। वह और उसके पति मजदूरी कर अपने 4 बच्चों का गुजारा करते थे। दो बेटे और दो बेटियों को पाल–पोसकर बड़ा करने और उनकी शादी कराते–कराते उसकी उम्र गुजर गई। दोनों दम्पत्ति अब इतने बूढ़े हो गए हैं कि उनके लिए मजदूरी करना संभव नहीं है। दोनों बेटे अपने परिवार के साथ घर के बाहर रहते हैं वहीं दोनों बेटियां भी शादी कर अपने घर चली गई हैं। ऐसे में घर में अब तारा देवी और उसके पति अकेले रह गए हैं। घर में काई सहारा नहीं था कि वे अब बैठ कर खा सकें। उम्र बढ़ने की वजह से उसके लिए मजदूरी करना संभव नहीं दिख रहा था। तारा देवी के पति पहले धान खरीदने बेचने का छोटा सा कारोबार किया करते थे, लेकिन बाद में पूंजी के अभाव में यह काम भी ठप हो चुका था। कबीर जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी तारा देवी ने अपनी समस्या को दीदियों के बीच रखा। समूह की दीदियों ने पूंजी कर्ज देने का फैसला किया। तारा देवी ने समूह से 5,000 रुपये कर्ज लेकर अपने पति के साथ मिलकर मुख्य मार्ग स्थित अपने घर के आगे दुकान शुरू करने का फैसला किया। दुकान अच्छी चली। इससे होने वाली कमाई से उसने समूह से लिया कर्ज धीरे–धीरे चुका दिया। इसके बाद दोबारा कर्ज लेकर उसने दुकान में कुछ और पूंजी निवेश किया। इधर उसके पति ने पूंजी मिलने पर उसी दुकान के आगे पुनः धान खरीद–बिक्री का काम शुरू कर दिया है। इससे तारा देवी के घर इतनी आमदनी होने लगी है कि उन्हें अपने खर्चों के लिए किसी के आगे हाथ फैलाने की जरूरत नहीं रही।

जीविका से जुड़ने के बाद तारा देवी ने अपना हस्ताक्षर करना भी सीख लिया। इसके अलावा वह सामाजिक मुद्दों पर भी काफी जागृत हुई है। तारा देवी समूह की बैठक में नियमित रूप से हिस्सा लेती है।

बेटे को दिलाया रोजगार

खेती और मजदूरी कर बड़ी मुश्किल से परिवार का गुजारा करने वाली छातापुर प्रखंड के लक्ष्मीपुर पंचायत की निर्मला देवी के अब 'अच्छे दिन' आ गए हैं। वह छातापुर बाजार में प्रखंड कार्यालय के पास मुख्य सड़क के किनारे अपने बेटे शिंटु कुमार के साथ मिलकर मनिहारी की दुकान चलाती है। दुकान से होने वाली कमाई से वह अपने परिवार का अच्छी तरह गुजारा कर लेती है। अपने पुराने दिनों को याद करते हुए वह कहती है कि पहले ''रोज कमाओ और रोज खाओ'' जैसी स्थिति थी। कभी–कभी काम नहीं मिलने पर खाने पर भी आफत आ जाती थी। लेकिन अब वैसे हालात नहीं रहे। उनके बेटे के लिए भी रोजगार की व्यवस्था हो गई है, इससे वह काफी खुश है।

नाम : निर्मला देवी
समूह : गणिनाथ जीविका स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन : निर्मल जीविका महिला ग्राम संगठन
गाँव : कराहवाना
पंचायत : लक्ष्मीपुर
प्रखंड : छातापुर, सुपौल
पहले : मजदूरी करती थीं
अब : बेटे के साथ मिलकर चलातीं किराने की दुकान

निर्मला देवी फरवरी 2010 में गणिनाथ जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी थी। मजदूरी छोड़ अपना कारोबार शुरु करने के इरादे से निर्मला ने समूह से करीब 20,000 रुपये कर्ज लिये थे। अपनी योजना के अनुरूप उन्होंने किराने का अपना एक छोटा सा व्यवसाय शुरू किया। इससे कमाई कर निर्मला ने धीर–धीरे समूह से लिए कर्ज की वापसी कर दी। इसके बाद उसने अपने बेटे शिंटू कुमार को भी कारोबार से जोड़ने के लिए बड़ी दुकान शुरू करने का फैसला किया। स्नातक करने के बाद शिंटू नौकरी के लिए इधर–उधर भटक रहा था। उसे किसी रोजगार की तलाश थी। परिणामस्वरूप निर्मला देवी ने पुनः अलग–अलग किस्तों में 30,000 रुपये तक कर्ज लेकर मनिहारी की दुकान खोली। अब वह अपने बेटे शिंटु के साथ मनिहारी की दुकान चलाती है। निर्मला देवी कहती है जीविका के सहयोग से वह अपनी तंग माली हालत से काफी हद तक उबर पाई है। सबसे बड़ी बात यह है कि अपने बेटे के लिए भी उसने रोजगार की व्यवस्था की और अब वह अपने बेटे के साथ इस कारोबार को आगे बढ़ाने के लिए मेहनत कर रही है।

- मजदूरी की वजह से निर्मला देवी के लिए 'रोज कमाओ – रोज खाओ' जैसी स्थिति थी
- मजदूरी से छोड़ उसने समूह से उधार लेकर कारोबार की दुनिया में रखा कदम
- अब अपने बेटे के साथ मिलकर चलाती है मनिहारी की दुकान

पकौड़े की खुशबू

भीमपुर बाजार के मुख्य चौराहे पर स्थित प्रमिला देवी की दुकान से नाश्ते की अच्छी खुशबू आ रही है। ठेले पर नाश्ते की दुकान लगाने वाली प्रमिला देवी की आज खास पहचान बन गई है। प्रमिला देवी को स्वादिष्ट पकौड़े तलने में महारत हासिल है। यही कारण है कि उसके गर्म–गर्म पकौड़े लेने की चाह में लोग दूर–दूर से यहां आते हैं। शाम के वक्त और खास मौसम में तो यहां ग्राहकों की अच्छी भीड़ रहती है। प्रमिला इसी दुकान से होने वाली आमदनी से अपने घर का खर्च चलाती है।

नाम : प्रमिला देवी

समूह : देव जीविका स्वयं सहायता समूह

ग्राम संगठन : शक्तिमान महिला जीविका ग्राम संगठन

ग्राम/पंचायत : भीमपुर

प्रखंड : छातापुर, सुपौल

पहले : मजदूरी की तलाश

अब : भीमपुर के मुख्य चौराहे पर नास्ते की दुकान

प्रमिला देवी पिछले डेढ़ साल से नाश्ते की दुकान चला रही है। जब से उसने पकौड़ा बेचने का काम शुरू किया है, उसे दूसरों के खेतों में काम करने के लिए नहीं जाना पड़ता है। वह चौराहे पर नाश्ता बेचकर अपने परिवार की जरूरतें पूरी करने में सक्षम है। प्रमिला देवी देव जीविका स्वयं सहायता समूह एवं शक्तिमान ग्राम संगठन से जुड़ी है। वह बताती है कि पहले मजदूरी करने की वजह से उन्हें हमेशा पैसे की तंगी रहती थी, लेकिन जब से उसने नाश्ते की दुकान शुरू की है तब से वह रोजाना 150 से 200 रुपये आसानी से कमा लेती है। दुकाननुमा ठेले पर पकौड़े तल रही प्रमिला कहती है कि समूह में जुड़ने के बाद उसमें काफी बदलाव आया। अब वह पैसे का हिसाब–किताब रखना भी सीख गई है। खास बात यह है कि दुकान से जुड़ी सारी जिम्मेदारियां वह खुद संभालती है। दुकान खोलने के लिए शुरुआत में समूह से उसने 7,000 रुपये कर्ज लिया था। हालांकि उसने अब कर्ज का भुगतान कर दिया है। वह बताती है कि शुरुआत में कारोबार करने की हिम्मत नहीं हो रही थी लेकिन जीविका के प्रोत्साहन और पूंजीगत मदद के बाद उसने इस दिशा में कदम बढ़ाया और आज वह प्रगति के रास्ते पर अग्रसर है।

- भीमपुर चौराहे पर नाश्ते की दुकान लगाने वाली प्रमिला के पकौड़े की खास पहचान
- गर्म–गर्म और स्वादिष्ट पकौड़े की तलाश में दूर–दूर से यहां आते हैं लोग
- दुकान से होने वाली आमदनी से प्रमिला देवी करती है अपने परिवार की जरूरतें पूरी

पहले प्रमिला का घर केवल पति की मजदूरी से ही चलता था लेकिन अब ऐसी स्थिति नहीं रही। दुकान से होने वाली आय से परिवार को मजबूती मिली है। प्रमिला अपने बच्चों को पढ़ाना चाहती है ताकि उन्हें मजदूरी कर पेट पालने की मजबूरी न रहे।

कपड़े की दुकान

छातापुर प्रखंड के लक्ष्मीपुर पंचायत में गणिनाथ जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य ममता देवी का घर आर्थिक संकट के दौर से गुजर रहा था। दरअसल उसके पति बेरोजगार थे और घर में कोई आमदनी नहीं होने से रोजमर्रा की जरूरतें पूरी करना भी मुश्किल हो गया था। घर की तंगहाली दूर करने के लिए ममता ने समूह की दीदियों से चर्चा की और कर्ज लेकर कोई रोजगार–व्यवसाय करने की योजना बनाई। समूह से कर्ज मिलने के बाद उसने अपने पति के साथ मिलकर कपड़े का व्यवसाय शुरू किया।

ममता 2010 में ही जीविका के गणिनाथ जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी थी और उन्होंने तभी से लगातार छोटी–छोटी बचत करने की आदत डाली। पति के पास कोई रोजगार नहीं होने से परेशान ममता ने अपने बचत के पैसे के अलावा समूह से अलग–अलग किस्तों में करीब 40,000 रुपये तक कर्ज लेकर कपड़े का व्यवसाय शुरू किया।

ममता देवी अपने पति मुकेश कुमार के साथ मिलकर छातापुर बाजार में प्रखंड कार्यालय के पास कपड़े की दुकान चलाती हैं और इससे होने वाली आमदनी से वह नियमित रूप से कर्ज का भुगतान करने के साथ ही परिवार का भी अच्छी तरह भरन–पोषण कर रही है। मुकेश कहते हैं कि उसके पास कोई रोजगार नहीं होने से वह काफी परेशान था, लेकिन अब उसके पास अपना कारोबार है और इससे अच्छी आय हो रही है। इस आय से उसने सबसे पहले वह समूह से लिए कर्ज का भुगतान कर रही है। फिलहाल उसके ऊपर 11,000 रुपये कर्ज बकाया है और इसे भी वह धीरे–धीरे चुका देगी। ममता देवी का कहना है कि जीविका समूह से जुड़ने से उसके घर में संकट के दिन दूर हो गए। अब उसका घर तरक्की के रास्ते पर है।

नाम : ममता देवी
समूहः गणिनाथ जीविका स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन : निर्मल जीविका महिला ग्राम संगठन
गाँव : कराहवाना
पंचायत : लक्ष्मीपुर
प्रखंड : छातापुर, सुपौल
पहले : खुद करती थीं मजदूरी, पति तलाश रहा था काम
अब : समूह से कर्ज लेकर पति को शुरू कराया दुकान

- पति के बेरोजगार होने से आर्थिक संकट से गुजर रहा था ममता देवी घर
- पति को रोजगार दिलाने के वास्ते समूह से लिया कर्ज
- समूह से उधार और कुछ बैंक से कर्ज लेकर ममता के पति ने शुरू की कपड़े की दुकान
- दुकान शुरू करने से दूर हुआ घर का आर्थिक संकट

सबकी प्रेरणा

भीमपुर के मुख्य चौराहे पर सब्जी की दुकान लगाने वाली लाखो देवी काफी मेहनती, मुखर और नेतृत्व करने वाली महिला है। वह समाज में किसी भी तरह की जरूरत के वक्त हमेशा आगे खड़ी रहती है। वर्तमान में शक्तिमान जीविका महिला ग्राम संगठन की अध्यक्ष लाखो देवी वर्ष 2010 में शंकर जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी थी। समूह में जुड़ने और इसका फायदा समझने के बाद उसने भीमपुर गांव की अन्य महिलाओं को समूह से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। भीमपुर गांव में आज लगभग सभी गरीब महिला जीविका समूह से जुड़ी है और इसमें बड़ी भूमिका लाखो देवी की भी है। समाज को शराबखोरी से मुक्त कराने में भी लाखो देवी ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उसने शक्तिमान ग्राम संगठन की महिलाओं को शराबखोरी के खिलाफ आवाज उठाने के लिए प्रेरित करते हुए इस अभियान का नेतृत्व किया।

नाम : लाखो देवी
समूह : देव जीविका स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन : शक्तिमान जीविका महिला ग्राम संगठन
ग्राम/पंचायत : भीमपुर
प्रखंड : छातापुर, सुपौल
पहले : मजदूरी पर था पूरा परिवार आश्रित
अब : सब्जी की दुकान लगाकर कर लेती हैं अच्छी कमाई

- लाखो देवी 2010 में जीविका समूह से जुड़ी और गांव की अन्य महिलाओं को भी इससे जुड़ने के लिए किया प्रेरित
- भीमपुर चौराहे पर शाम को सब्जी की दुकान लगाकर करती है पैसे अर्जित
- गांव को शराबमुक्त करने के लिए भी चलाया अभियान

लाखो देवी भीमपुर के मुख्य बाजार पर प्रत्येक दिन शाम को सब्जी की दुकान लगाती है। वह ज्यादातर सब्जियां खुद उपजाती है या फिर गांव में सब्जी की खेती करने वाले किसानों से खरीद कर ताजी सब्जियां बेचती है। लाखो देवी ने गाँव की ज्यादातर महिलाओं को समूह से जोड़ा और इससे उनके जीवन में काफी बदलाव आया है। वह कहती है कि अब अधिकतर महिलाएँ अपना कुछ न कुछ व्यवसाय करती हैं। लाखो देवी भी पहले खुद मजदूरी करती थी लेकिन अब वह सब्जी की दुकान लगाकर परिवार पालने में सक्षम है। इस काम में उसका बेटा उसका हाथ बंटाता है। लाखो देवी बताती है कि यहाँ के अधिकांश पुरुष काम की तलाश में घर से पलायन कर जाते थे लेकिन अपना व्यवसाय शुरू हो जाने से अब वे यहीं रहकर काम करने लगे हैं। ज्यादातर परिवारों ने अपने लिए कुछ न कुछ स्वरोजगार शुरू कर दिया है।

पलायन से मुक्ति

महादेवी स्वयं सहायता समूह की सदस्य ममता देवी ने अपने पति का कारोबार शुरू कराने के लिए भारत ग्राम संगठन से अलग–अलग किस्तों में कुल 50,000 रुपये तक का कर्ज लिया। दरअसल ममता देवी के पति को काम की तलाश थी। घर पर रहकर उसे कोई काम नहीं मिल रहा था। आखिर उसने काम की तलाश में उन्हें घर के बाहार जाने का मन बनाया लेकिन इससे घर पर ममता अपने बच्चों के साथ अकेले रह जाती। इसी चिंता की वजह से वह घर छोड़कर भी नहीं जा पा रहा था। तभी ममता ने पति को हिम्मत दी और कहा कि जीविका समूह से कर्ज प्राप्त कर वह उसके लिए किसी रोजगार की व्यवस्था करेगी।

नाम : ममता देवी

समूह : महादेवी जीविका स्वयं सहायता समूह

ग्राम संगठन : भारत जीविका महिला ग्राम संगठन

ग्राम/पंचायत : भीमपुर

प्रखंड : छातापुर, सुपौल

पहले : कोई रोजगार नहीं होने की वजह से तंगहाली से चलता था घर

अब : कपड़े की दुकान से हो रही अच्छी आय

ममता महादेवी जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी थी। उसने समूह की बैठक में दीदियों से बात की और पति के रोजगार के वास्ते कुछ रुपये उधार लिए। इसके अतिरिक्त कुछ और पैसे की व्यवस्था कर उसने भीमपुर बाजार में कपड़े की दुकान खोल ली है। फिलहाल ममता के पति यह दुकान चलाते हैं और इसी से परिवार का गुजारा होता है।

वह बताते है कि पढ़ाई पूरी करने के बाद जब उसके पास कोई रोजगार नहीं था तब उसने अपना व्यवसाय शुरू करने का फैसला किया। ऐसे वक्त पर पत्नी ने हिम्मत देने के साथ अपने समूह के माध्यम से आर्थिक मदद भी पहुँचाई। इससे उन्हें काम की तलाश में अपने घर से दूर नहीं जाना पड़ा। दुकान से हर दिन उसके घर में 400 से 500 रुपये तक की आमदनी होने लगी है। उनकी दुकान पर ग्राहकों की भीड़ देखकर अंदाजा लगाया जा सकता है उनकी दुकान अच्छी चलती है। बहरहाल, ममता धीरे–धीरे कर्ज का भुगतान कर रही है और अब करीब 11,000 रुपये का कर्ज चुकाना बाकी है। वह कहती है कि धीरे–धीरे पूरे कर्ज का भुगतान कर रही है। ममता का कहना है कि बुरे वक्त में जीविका समूह ने साथ दिया तो उसका घर परिवार तरक्की के रास्ते पर आया।

- **ममता देवी के पति को काम के लिए बाहर जाना पड़ता**
- **पति के रोजगार के वास्ते ममता ने समूह से रुपये उधार लेकर खोली कपड़े की दुकान**
- **भीमपुर बाजार में स्थित इस दुकान से हर दिन हो रही अच्छी आय**
- **इससे होने वाली आमदनी से ममता देवी का चलता है घर**

समूह से कर्ज लेकर शुरू की दुकान

भीमपुर पंचायत की रहने वाली नीला देवी को पहले हर दिन काम की चिंता सताती थी। गांव में खेती का सीजन खत्म होने के बाद कोई काम नहीं होता था। इसी लिए नीला देवी के पति परिवार को बेसहारा छोड़ काम की तलाश में पंजाब चले जाते। लेकिन अब हालात बदल गए हैं। नीला देवी वर्ष 2011 में जीविका के स्वयं सहायता समूह से जुड़ी। उसने 10–10 रुपये की साप्ताहिक बचत की आदत डाली और वह समूह की बैठक में हिस्सा लेती। इसी दरम्यान समूह में हर सदस्यों को अपने लिए स्वरोजगार का कोई विकल्प अपनाने के लिए प्रेरित किया गया। स्वरोजगार के वास्ते समूह से कर्ज भी मिल रहा था। यह देख नीला देवी ने अपने पति के लिए फर्निचर तैयार करने वाली दुकान शुरू करने का मन बनाया। चूंकि नीला देवी के पति कारपेंटर हैं और दुकान शुरू करने से उन्हें अपने घर में ही अच्छा काम मिल जाता। तदोपरान्त नीला देवी ने समूह से कुछ पैसे कर्ज लेकर अपने घर पर ही लकड़ी का सामान बनाने का काम शुरू कर दिया। धीरे–धीरे काम ने गति पकड़ ली और इससे अच्छी आमदनी होने लगी। यह काम अच्छा चल रहा है। नीला देवी ने दुकान की कमाई से समूह से उधार ली रकम वापस कर दी है। इसके अलावा उसने अपनी दुकान का विस्तार भी किया है। अब वह लकड़ी का फर्निचर तैयार कर इसे बेचने का काम करते हैं। नीला देवी के पति भीमपुर–वीरपुर मार्ग के किनारे ही अपनी दुकान लगाकर लकड़ी के सामान बना कर बेचते हैं। इससे उन्हें अच्छी आमदनी हो जाती है। नीला देवी का कहना है कि अपने काम का अलग ही आनंद होता है। अब अन्हें काम तलाश करने की चिंता नहीं रहती और न ही घर के बाहर इधर–उधर भटकना पड़ता है। उसके पति भी अब रोजी–रोटी के लिए दिल्ली–पंजाब नहीं जाते। नीला देवी कहती है कि शुरुआत में नया काम आरंभ करना मुश्किल था, लेकिन जीविका के सहयोग एवं मार्गदर्शन से यह सब करना आसान होता गया। जीविका की स्वयं सहायता समूह के माध्यम से न केवल पैसे की जरूरत पूरी हुई बल्कि इसने मानसिक तौर पर भी उद्यम शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया। यह उनके लिए नया अनुभव है और वह पहले कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि उसके पास अपनी दुकान होगी।

नाम : नीला देवी
समूह : गायत्री जीविका स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन : खुशहाली जीविका महिला ग्राम संगठन
ग्राम/पंचायत : भीमपुर
प्रखंड : छातापुर, सुपौल
पहले : खुद करती थी मजदूरी और पति काम की तलाश में जाते थे दिल्ली–पंजाब
अब : भीमपुर–वीरपुर मार्ग पर शुरू की अपनी फर्नीचर की दुकान

- **कारपेंटर पति के लिए फर्निचर की दुकान के लिए नीला देवी ने समूह से लिया कर्ज**
- **भीमपुर के मुख्य बाजार में स्थित दुकान से हो रही अच्छी आमदनी**
- **इस आमदनी से उसने समूह से लिए कर्ज की वापसी की साथ ही अपनी दुकान का भी किया विस्तार**

आजीविका का नया द्वार

जीविकोपार्जन के प्रारम्भिक साधनों यथा खेती, पशुपालन, दुकानदारी आदि के अलावा और भी ऐसे कई छोटे–मोटे काम हैं, जिसके सहारे महिलाएँ अपने परिवार की आय में बढ़ोतरी कर रही हैं। इस तरह के कामों में कपड़ों की सिलाई, बांस की टोकरियों की बुनाई से लेकर, ऑटो खरीदने, गाँव–गाँव घूमकर चूड़ियां–साड़ियां बेचने और विभिन्न तरह की आजीविका शामिल हैं। गाँव की इन महिलाओं ने साबित किया है कि वे लीक से हटकर अलग तरह के कामों में हाथ आजमा सकती हैं और इससे वे अपना जीवन स्तर सुधार सकती हैं। अपने कारोबार को सफल बनाकर उन्होंने यह भी साबित किया है कि उनमें उद्यम करने की साहस है और सूझबूझ भी। बस उन्हें थोड़ी वित्तीय मदद और प्रोत्साहन की दरकार है।

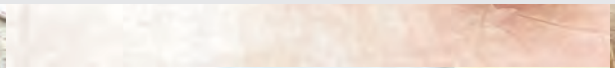

विकास की पटरी पर गृहस्थी की गाड़ी

कहावत है कि नेक इरादे से यदि ईमानदार कोशिश की जाए तो मंजिल जरूर मिलती है। इस कहावत को चरितार्थ किया है छातापुर प्रखंड के चकला गाँव की ममता देवी ने। कभी गरीबी के दल–दल में फंसी और एक–एक पैसे के लिए मोहताज रहने वाली ममता देवी आज विकास के रास्ते पर अपनी गृहस्थी की गाड़ी सरपट दौड़ा रही है।

परियोजना के प्रोत्साहन एवं आर्थिक मदद के साथ–साथ उनके खुद के साहस ने उन्हें एक सफल उद्यमी के तौर पर स्थापित किया है। ममता देवी के पास अब अपना एक ऑटो है और इससे होने वाली कमाई ने उसके घर को तरक्की के रास्ते पर ला दिया है।

ममता देवी कहती है कि पहले वह इस बारे में सोच भी नहीं सकती थी कि उसके पास अपनी गाड़ी होगी। लेकिन जीविका के प्रोत्साहन और समूह से मिली वित्तीय मदद से उसमें हिम्मत आई। इसके बाद बैंक से कर्ज लेकर उसने अपना नया ऑटो खरीदा। ममता देवी ने समूह से 25,000 रुपये उधार लिए। इसके बाद 10,000 रुपये की व्यवस्था उसने घर से की जबकि अपने खेतों को सूदभरना रखकर 15,000 रुपये का इंतजाम किया। कुल मिलाकर 50,000 रुपये जमा करने के बाद शेष पैसा उन्होंने बैंक से फाइनैंस कराया और ऑटो रिक्शा खरीदने में सफलता पाई। ममता देवी का पति अरविंद मंडल चकला से छातापुर के बीच यह ऑटो रिक्शा चलाता है। अरविंद पहले भी दूसरों की गाड़ी चलाते थे और इस काम के लिए उन्हें अकसर घर से बाहर रहना पड़ता था। यही कारण था कि ममता देवी ने गाड़ी के पेशे में उतरने का फैसला किया ताकि उसके पति के लिए भी घर में ही रोजगार की व्यवस्था हो जाए। दूसरी तरफ चकला और आसपास के गाँवों के लोगों का हमेशा छातापुर आना जाना लगा रहता है। ऐसे में यहाँ सवारियों की भी दिक्कत नहीं होती। यह सब सोचकर ममता देवी ने आजीविका के लिए समूह से वित्तीय मदद लेकर ऑटो खरीदना बेहतर समझा। उसके इसी सोच का परिणाम है कि आज उसके घर में ऑटो की वजह से रोजाना 500 से 600 रुपये की आमदनी हो रही है। फिलहाल इस पैसे से वह हर महीने 5,000 रुपये बैंक का किस्त जमा कर रही है। साथ ही समूह से लिए कर्ज भी चुका रही है। वह बताती है कि समूह के 10,000 रुपये उन्होंने लौटा दी है और बाकी रकम भी वह धीरे–धीरे लौटा रही है।

नाम : ममता देवी
समूह : विष्णु भगवान जीविका स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन : प्रगतिशील जीविका महिला ग्राम संगठन
सीएलएफ : गरिमा जीविका संकुल स्तरीय संघ
गांव : चकला
पंचायत : डहरिया
प्रखंड : छातापुर, सुपौल
पहले : खेती का काम
अब : गाड़ी चलाने का काम

- **जीविका के प्रोत्साहन और मदद से ममता बनी सफल उद्यमी**
- **ममता ने समूह से उधार लेकर और बैंक से फाइनैंश कराकर खरीदा ऑटो**
- **ऑटो से हर दिन हो रही 500 से 600 रुपये की आमदनी**
- **इससे बैंक का किस्त जमा करने के साथ ही वह कर रही कर्ज का नियमित भुगतान**

बाल के कारोबार ने दिलाई अलग पहचान

जरूरी नहीं कि रोजी–रोटी के लिए केवल आजीविका के परंपरागत साधनों पर ही निर्भर रहा जाए। आजकल समाज में कारोबार की तमाम संभावनाएं मौजूद हैं, लेकिन हमें केवल उसके कारोबारी नजरिये को समझने की दरकार है। छोटे से छोटे कामों को अपनाकर भी उद्यम के रास्ते तलाशे जा सकते हैं। त्रिवेणीगंज प्रखंड के जदिया गाँव की रूपा देवी ने इस अवधारणा को सही साबित किया है। रूपा देवी बाल एकत्रित करती हैं और उसे बेचकर वह अच्छी–खासी आय अर्जित कर रही हैं। पिछले कुछ सालों से उसने इसे उद्यम के तौर पर अपना लिया है और यही उसके घर की आय का मुख्य स्रोत है।

नाम : रूपा देवी
समूह : बालाजी जीविका स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन : अमृत जीविका महिला ग्राम संगठन
ग्राम/पंचायत : जदिया
प्रखंड : त्रिवेणीगंज
जिला : सुपौल, बिहार
पहले : खेती–बाड़ी
अब : कर रहीं बाल खरीद–बिक्री का नया काम

- **रूपा देवी ने अपनाया बल की खरीद–बिक्री का अनोखा कारोबार**
- **आमतौर पर कूड़े का हिस्सा बन जाने वाले बाल को बेचकर वह हर माह कमा रही करीब 10,000 रुपये**
- **गांव–गांव घूमने वाले हॉकर की मदद से खरीदती हैं बाल और उसे कोलकाता में जाकर बेच आती हैं**

रूपा देवी का कहना है कि शुरुआत में यह काम अटपटा लग रहा था। लेकिन इसकी कमाई का अंदाजा लगने के बाद, अपने पति के साथ मिलकर यह काम अपनाने का फैसला किया। रूपा 'गाँव–गाँव घूमकर वह 1700 रुपये प्रति किलो की दर से बाल खरीदती है और रूपा के पति इसे बेचने के लिए बंगाल जाते हैं। वहां 2,000 रुपये प्रति किलो की दर से बाल की बिक्री होती है।' इस बाल से ब्रश समेत कई तरह के सामान बनते हैं, जिससे वहां इसकी अच्छी मांग है। रूपा के मुताबिक इस काम से हर महीने औसतन 10,000 रुपये तक की कमाई कर लेती है और इसी पैसे से उसके घर का खर्च चलता है। खेती से ज्यादा आय नही होने के कारण वह और उसके पति राजकुमार मंडल इसी काम पर पूरा ध्यान लगाते हैं।

रूपा देवी 27 मार्च 2013 को जीविका के बालाजी स्वयं सहायता समूह से जुड़ी थी। तब से वह नियमित रूप से हर सप्ताह 10–10 रुपये बचत कर रही है। वह बताती है कि बाल का कारोबार शुरू करने के लिए उसने समूह से 15,000 रुपये ऋण लिया था। इसके बाद जरूरत पड़ने पर उसने पुनः 15,000 रुपये कर्ज लिया। हालांकि इसमें से कुछ पैसे वह लौटा चुकी है और बाकी भी धीरे–धीरे करके लौटा रही है। रूपा देवी के परिवार में 2 बच्चों समेत कुल 4 सदस्य हैं। अपनी आमदनी का कुछ हिस्सा बचा कर रखती है ताकि बच्चों को आगे पढ़ा सके। ममता खुद भी जीविका के सहयोग से उन्नत खेती कर रही है और इससे भी उन्हें आमदनी हो रही है। वह जीविका के समूह से 2010 में जीविका से जुड़ी थी। वह मानती है कि इसकी वजह से ही उसके घर की आर्थिक उन्नति हुई है।

सिलाई से हो जाती कुछ कमाई

कपड़ों की सिलाई कर पैसे अर्जित करने वाली बबीता देवी को अब अपने घर छोटी–छोटी जरूरतों के लिए पैसे सोचना नहीं पड़ता है। सिलाई से कमाई कर वह घर के लिए खाने–पीने की चीजों का आसानी से पूरा कर लेती हैं। ऐसे में पति की कमाई से घर की दूसरी अन्य जरूरतें पूरी होती है। सिलाई कर बबीता देवी ने घर की आय बढ़ाने में मदद की है। करीब ढाई साल पहले वह वैष्णो स्वयं सहायता समूह से जुड़ी थीं। तब उन्होंने समूह के साथ मिलकर छोटी–छोटी बचत की आदत डाली। कम आमदनी में परिवार का खर्च चलाना और इसके बाद बचत करना मुश्किल काम था, लेकिन उसने ऐसा करना जारी रखा। परिणामस्वरूप कुछ समय बाद बचत के रूप में अच्छी राशि जमा हो गई। वह कहती है कि बचत के पैसे और कुछ रुपये ऋण लेकर उसने सिलाई की मशीन खरीदी। जिससे वह आस–पास के लोगों के कपड़े सिलती है जिससे उन्हें अच्छी आय हो जाती है। वह कहती है कि रोजाना कमाई तो नहीं हो पाती लेकिन इससे वह घर के रोजमर्रा के खर्च जरूर निकाल लेती हैं। सिलाई मशीन लंबे समय से महिलाओं के लिए रोजगार और आय अर्जित करने का एक प्रमुख साधन रहा है। खास बात है कि यह आज भी उतना ही लोकप्रिय है। गाँव की महिलाएँ आज भी सिलाई मशीन रखकर अपने घरों के लिए जरूरी कपड़े खुद सिलती हैं और पास–पड़ोस के घरों के भी कपड़े सिलकर कुछ पैसे अर्जित कर लेती हैं। घर के कामों के बाद वह कपड़ों की सिलाई करती है। इसके लिए अतिरिक्त समय देने की भी जरूरत नहीं होती जबकि इससे औसतन कमाई ठीक–ठाक हो जाती है। बबीता देवी बताती है कि पहले पति की कमाई का पूरा हिस्सा घर के रोजमर्रा के खर्चों को पूरा करने में ही चला जाता था। लेकिन अब इसके लिए सोचना नहीं पड़ता है। उनका कहना है कि पहले पैसे की विशेष जरूरत पड़ने पर वक्त महाजन से उधार लेना पड़ता था। इसके लिए उसे हर महीने 5 रुपया प्रति सैकड़ा की दर से ब्याज लगता था, लेकिन समूह से पैसे उधार लेने पर ब्याज की दर काफी कम है। वह कहती है कि जीविका की वजह से अब उन्हें कर्ज के लिए महाजन के पास नहीं जाना पड़ता है।

बबीता देवी का कहना है कि ज्ञान और हाथ में दो–चार पैसे कमाने की ताकत से आत्मविश्वास बढ़ता है। जीविका की वजह से उन्हें ये दोनों चीजें प्राप्त हुई है। इससे उसमें आत्मविश्वास आया है। उनका कहना है कि समूह से जुड़ने के बाद उसने हस्ताक्षर करना सीखा।

नाम : बबीता देवी

समूह : वैष्णो जीविका स्वयं सहायता समूह

ग्राम संगठन : महादेव जीविका महिला ग्राम संगठन

गांव–पंचायत : बसंतपुर

प्रखंड : बसंतपुर, सुपौल

- **कपड़ों की सिलाई करना आज महिलाओं के लिए घर बैठे आय का प्रमुख जरिया बना गया है**
- **बबीता देवी कपड़ों की सिलाई से जुटा लेती है घर के लिए नमक–तेल का खर्च**
- **समूह से जुड़ने के बाद अब उसे पैसों के लिए नहीं जाना पड़ता है महाजन के पास**

बांस की टोकरी

त्रिवेणीगंज प्रखंड में जरैला गाँव की चमेली देवी बांस की टोकरी, सूप, डलिया आदि की बुनाई कर परिवार का गुजर–बसर करती है। इससे वह रोजाना इतनी कमाई कर लेती है कि घर का खर्च चल जाए। हाथ में हुनर रहने के बावजूद चमेली देवी पहले घर के कामों का अलावा कुछ नहीं करती थीं। लेकिन जीविका के स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के बाद उसने कुछ पैसे अर्जित करने के लिए यह काम शुरू किया। अब वह और उसका पूरा परिवार इस काम में इस काम में लगा है। चमेली देवी बताती है कि समूह से 3,000 रुपये लेकर उसने यह काम शुरू किया था। टोकरी बेंच कर होने वाली कमाई से उसने कर्ज के पैसे वापस कर दिए। चमेली देवी ने बताया कि वह आस पास के लोगों से बांस खरीदती है और फिर इससे कमान निकालकर टोकरी, सूप, डलिया आदि की बुनाई करती है। चमेली देवी के मुताबिक एक बांस की कीमत तकरीबन 200 रुपये होती है जबकि इससे टोकरी, सूप आदि तैयार कर इन्हें स्थानीय बाजार में बेचने के बाद करीब 500 से 600 रुपये निकाल लेती हैं। इस तरह से वह बांस की लागत निकाल कर मुनाफा अर्जित करती है। उसका कहना है कि इस काम में काफी मेहनत लगती है, लेकिन मजदूरी या अन्य कामों से यह ज्यादा बेहतर है। इसमें उन्हें काम की तलाश में कहीं जाना नहीं पड़ता है। वह कहती है कि बांस की टोकरी की बिक्री स्थानीय बाजार में हो जाती है। स्थानीय स्तर पर इसकी अच्छी मांग है और इसकी बिक्री के बारे में उन्हें सोचना नहीं पड़ता है। बाजार में बड़े आकार के डलिये की कीमत 300 रुपये तक होती है। रोजाना होने वाली औसतन कमाई के बारे में उनका कहना है कि यह उनके मेहनत पर निर्भर करता है कि एक दिन में वह कितनी टोकरियां तैयार कर सकती है। चमेली देवी संगीता स्वयं सहायता समूह से जुड़ी है। जीविका से जुड़ने पर उन्हें कई तरह के लाभ मिले हैं। हाल ही में उन्होंने बीमारी के इलाज के लिए ग्राम संगठन से स्वास्थ्य सुरक्षा निधि के तहत 6,000 रुपये उधार लिया है। वह कहती है कि किसी भी वक्त वह समूह से पैसे लेकर वह अपनी जरूरतें पूरी कर लेती है जबकि पहले गाँव के महाजन के पास जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

नाम : चमेली देवी
समूह : संगीता जीविका स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन : मोहिता जीविका महिला ग्राम संगठन
गांव : जरैला
पंचायत : थाला गढ़िया उत्तर
प्रखंड : त्रिवेणीगंज, सुपौल

- **सुपौल में बड़े पैमाने पर होता है बांस का उत्पादन**
- **बांस से जुड़े उत्पाद निर्मित करने के क्षेत्रों में हैं आजीविका की असीमित संभावनाएं**
- **जरैला गांव की चमेली देवी बांस की टोकरी व अन्य घरेलू समानों की बुनाई कर अर्जित कर रही अच्छी आय**

पूरी होती घर की जरूरत

त्रिवेणीगंज प्रखंड के जदिया पंचायत की रहने वाली शीला देवी के घर एक सिलाई की मशीन है। वह इससे दो–चार कपड़ों की सिलाई कर कुछ पैसे अर्जित कर लेती हैं, जिससे वक्त–कुवक्त घर की जरूरतें पूरी हो जाती हैं। शीला देवी करीब दो साल पहले मिशन जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी थी और तब से वह हर सप्ताह 10–10 रुपये बचत कर रही है। वह बताती है कि समूह से कर्ज लेकर उसने एक पुरानी सिलाई की मशीन खरीदी। इससे वह घर के कपड़ों के अलावा आस–पास के लोगों के कपड़े भी सिलती है और इससे उन्हें कुछ आमदनी हो जाती है। शीला देवी का कहना है कि चूंकि यह काम घर बैठे किया जा सकता है, ऐसे में घरेलू काम–काज निपटाने के बाद वह कभी भी समय निकालकर कपड़ों की सिलाई कर लेती है। इससे दूसरे कामों पर कोई असर भी नहीं पड़ता जबकि आमदनी कम नहीं होती। खेती ही शीला देवी के घर की आय का मुख्य आधार है और इसी से उसके परिवार का पूरा खर्च चलता है। इसमें सिलाई से होने वाली कमाई से परिवार को थोड़ा सहारा मिल जाता है। हालांकि इससे वह हर महीने औसतन कितना अर्जित कर लेती है, इसका उसके पास सही हिसाब तो नहीं है लेकिन वह इतना जरूर कहती है कि इससे घर में नमक–तेल का खर्च तो निकल ही जाता है। शीला देवी बताती है कि जीविका से जुड़ने से उसकी पैसे की तंगी दूर हुई। अपनी बेटी की शादी में भी उसे समूह से वित्तीय मदद मिली थी। उस वक्त उसने 6,000 रुपये कर्ज लिया था। इसमें से कुछ पैसे वह लौटा चुकी है। वह बताती है कि जब से वह जीविका से जुड़ी है, किसी भी जरूरत के वक्त उन्हें महाजन के पास नहीं जाना पड़ता है।

नाम : शीला देवी
समूह : मिशन जीविका स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन : हिमालय जीविका महिला ग्राम संगठन
ग्राम/पंचायत : जदिया
वार्ड नंबर : 15
प्रखंड : त्रिवेणीगंज, सुपौल
पहले : खेती
अब : कपड़ों की सिलाई

- **जदिया पंचायत की शीला देवी कपड़ों की सिलाई कर कमा लेती है पैसे**
- **इन पैसों से घर की जरूरतें पूरी करने में मिलती है मदद**
- **कपड़ों की सिलाई का काम घर बैठे किया जा सकता है और हो जाती है अच्छी आय**

चूड़ियों की खनक से गूंजती है गलियाँ

''चूड़ियां ले लो..... चूड़ियां ले लो!'' यह आवाज सुनते ही प्रतापगंज प्रखंड में भवानीपुर दक्षिण पंचायत और आसपास के गांवों की महिलाएं अपने घर से बाहर निकल आती हैं। इन गांवों की गलियों में चूड़ियां ले लो की आवाज हर किसी के लिए जानी पहचानी सी है। दरअसरल भवानीपुर दक्षिण पंचायत के प्रतापगंज गांव की मंजुला देवी आस पास के 8–10 गांव में नियमित रूप से घूम–घूमकर चूड़ियां बेचने आती है। यही कारण है कि मंजुला देवी की आवाज सुनते ही गांव की लड़कियां और महिलाएं रंग–बिरंगी चूड़ियां खरीदने घर के बाहर निकल आती हैं। इन गांवों की महिलाएं मंजुला की नियमित ग्राहक बन गई हैं। गांव में किसी को चूड़ियों की दरकार हो तो उन्हें मंजूला देवी के आने का इंतजार रहता है।

नाम : मंजुला देवी
समूह : प्रगति जीविका स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन : आरती जीविका महिला ग्राम संगठन
गांव : प्रतापगंज
पंचायत : भवानीपुर दक्षिण
पहले : मजदूरी
अब : चूड़ियां बेचती है

मंजुला देवी गांवों में चूड़ियां बेचने का काम पिछले 2–3 वर्षों से कर रही है। वह गांवों के गली–मोहल्लों के अलावा स्थानीय हाट में भी चूड़ियां बेचने का काम करती है और यही उसके परिवार के भरन–पोषण का सहारा भी है। वह जीविका के प्रगति स्वयं सहायता समूह से जुड़ी है। समूह में जुड़ने के पहले उसके पास कमाई का कोई साधन नहीं था। काम के अभाव में वह मजदूरी पर आश्रित रहती। लेकिन उसका मन मजदूरी को नहीं करता। तब उन्होंने समूह से पहले 5,000 रुपये उधार लेकर पूंजी की व्यवस्था की और चूड़ियां बेचने के कारोबार में कदम रखा। शुरुआत में वह केवल स्थानीय हाट जाकर चूड़ियां बेचती। बाद में उसने गांव–गांव घूमना शुरू कर दिया। इसे मंजुला को न केवल नए–नए ग्राहक मिले बल्कि इससे उसकी साख और पहचान बढ़ी। वह बताती है कि चूडियां बेचकर रोजाना अच्छी कमाई कर लेती है, जिससे उसके घर का खर्च आसानी से चलता है। इससे होने वाली आमदनी से उसने समूह से लिए कर्ज का हिसाब चुका दिया है। दोबारा फिर उसने अपनी जरूरत पूरी करने के लिए समूह से 3,000 रुपये कर्ज लिया। यह रकम भी उसने लौटा दी है। मंजुला देवी बताती है कि उसके पति दिल्ली में मजदूरी करते हैं जबकि घर में ससुर और 15 साल का एक बेटा उसके साथ रहते हैं। मंजुला कहती है कि इसमें कम पूंजी लगती है क्योंकि इसके लिए अलग से दुकान खोलने की जरूरत नहीं होती। केवल एक टोकरी भर चूड़ियां खरीदनी होती है। इसे घूम–घूम कर बेचने के बाद दोबार फिर रंग–बिरंगी चूड़ियां खरीद लाती है। यही कारण है कि उसने यह काम अपनाने का फैसला किया। जीविका के समूह से जुड़ने की वजह से मंजुला समूह एवं ग्राम संगठन से मिलने वाले लाभ लेती रही है। उन्होंने इसके तहत खाद्य सुरक्षा और स्वास्थ्य सुरक्षा निधि से भी लाभ प्राप्त किया है।

- **मंजूला देवी भवानीपुर दक्षिण पंचायत के दर्जन भर गांव में घूम–घूम कर बेचती है रंग–बिरंगी चूड़ियां**
- **गांवों के अलावा स्थानीय हाट में भी बेचती है चूड़ी**
- **चूड़ियां बेच कर प्राप्त होने वाली आय से चलाती है अपने परिवार का खर्च**

मुख्यमंत्री कोसी मलवरी योजना के तहत खेती

बिहार के कोसी क्षेत्र में अपनी सेवा यात्रा के दौरान माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सुपौल जिले के सदानन्दपुर गाँव में शहतूत की खेती एवं कीटपालन का अवलोकन किया था। उन्होंने शहतूत (मलवरी) किसानों एवं बुनकरों के साथ 9 मई 2015 को वार्ता की। मुख्यमंत्री के साथ बातचीत में मलवरी किसानों ने बताया गया कि आधा एकड़ खेत में शहतूत की खेती करने एवं इस पर कीटपालन करने से साल भर में उन्हें लगभग 16,000 रुपये की आय प्राप्त होती है। मुख्यमंत्री ने मलवरी किसानों के इस प्रयास की सराहना करते हुए विभागीय पदाधिकारियों को कोसी एवं पूर्णिया प्रमण्डल में शहतूत उद्योग के विकास के लिए परियोजना की रूपरेखा तैयार करने का निर्देश दिया ताकि इस क्षेत्र में मलवरी की खेती एवं रेशम उत्पादन को बढ़ावा दिया जा सके। तद्नुसार रेशम वैज्ञानिकों, संबंधित पदाधिकारियों एवं कर्मियों तथा इस कार्य में संलग्न विभिन्न प्रकार के उद्यमियों के सुझावों के आधार पर शहतूत की खेती, कीटपालन, सूत एवं वस्त्र उत्पादन की एक समेकित परियोजना तैयार की गई। इसके बाद मुख्यमंत्री द्वारा दिनांक 10.02.2014 को मुख्यमंत्री कोसी मलवरी परियोजना यानी ''कोशीकी'' के रूप में इस परियोजना को स्वीकृति प्रदान की गई।

परियोजना मुख्य रूप से ग्रामीण विकास (जीविका एवं मनरेगा), उद्योग विभाग एवं कृषि विभाग के समन्वित प्रयास से कार्यान्वित की जा रही है। राज्य में मलवरी रेशम का उत्पादन बढ़ाने के साथ–साथ इस कार्य से जुड़े हजारों परिवारों की आय में वृद्धि करना है। राज्य के कुल 2900 एकड़ पर शहतूत की खेती के माध्यम से कुल 171.91 मिट्रिक टन रेशम धागे के उत्पादन का लक्ष्य है ताकि राज्य में करीब 6,000 परिवारों एवं 17,000 व्यक्तियों को वर्ष भर रोजगार/आय के अवसर प्रदान हों एवं परियोजना में 80 प्रतिशत महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित हो सके। यह लक्ष्य मनरेगा कार्यक्रम के अन्तर्गत वृक्षारोपण के लक्ष्यों के साथ मिलकर प्राप्त किया जाना है। इसके लिए किसानों को उत्प्रेरित करने की जवाबदेही ''जीविका'' की है।

मलवरी की खेती में किसानों को सरकारी सहायता

मलवरी की खेती में किसानों को सरकार की ओर से आर्थिक मदद पहुंचाई जाती है। आधा एकड़ खेत में मलवरी के 2700 पौधे लगाए जाते हैं। प्रति पौधे 1.50 रुपये की दर से पैसे का भुगतान मनरेगा मद से किया जाता है। इसके अलावा मनरेगा से ही किसानों को 177 रुपये प्रतिदिन के हिसाब से 100 दिनों के मानव श्रम की मजदूरी एवं बोरिंग के लिए 5,000 रुपये की सहायता राशि उद्योग विभाग की तरफ से उपलब्ध कराई जाती है। कुल मिलाकर आधा एकड़ खेत में मलवरी की खेती करने वाले किसानों को 35,268 रुपये दिए जाते हैं। इसका विवरण इस तालिका में दिया जा रहा है –

क्र.	विवरणी	सामग्री/मद	दर	धनराशि
1.	मलवरी के 2700 पौधे की कीमत	सैपलिंग/कटिंग्स की आपूर्ति	1.50 रुपये प्रति पौधे	4,050 रुपये
2.	पौधे के लिए जमीन की खुदाई	34 मानव दिवस का श्रम	177 रुपये प्रति दिन	6,018 रुपये
3.	मलवरी पौधे की देखरेख	100 मानव दिवस का श्रम	177 रुपये प्रति दिन	17,700 रुपये
4.	जैविक खाद, फफूंद नाशक	––	–––	2,500 रुपये
5.	बोरिंग/सिंचाई के लिए			5,000 रुपये
6.	**कुल राशि**			**35,268 रुपये**

इसके अतिरिक्त किसानों को दूसरे एवं तीसरे वर्ष भी मलवरी पौधों की देखभाल के लिए मनरेगा निधि से प्रत्येक साल 177 रुपये की दर से 100 मानव दिवस के श्रम के लिए 17,700 रुपये दिए जाते हैं। इस तरह उक्त परियोजना के तहत कोसी क्षेत्र में मलवरी की खेती करने वाले किसानों को आर्थिक सहायता प्राप्त हो रही है।

कोसी क्षेत्र की मिट्टी एवं जलवायु शहतूत की खेती कर रेशम उत्पादन के लिए अनुकूल है। इसकी खेती के लिए मटियार दोमट एवं बलुई दोमट मिट्टी उपयुक्त मानी जाती है। मिट्टी अम्लीय क्षारीय एवं जल जमाव वाली नहीं होनी चाहिए। बाढ़ प्रभावित क्षेत्र होने की वजह से जिन खेतों में मुख्य फसलें नहीं उगाई जा सकती हैं वहां शहतूत की खेती की जा सकती है। यही कारण है कि पहले चरण में यह परियोजना कोसी क्षेत्र के सुपौल, सहरसा और मधेपुरा जिले में शुरू की गई है। पहले भी इन क्षेत्रों में परंपरागत तरीके से शहतूत की खेती की जाती थी लेकिन इधर कुछ वर्षों में यह पूरी तरह उपेक्षित हो गई। सरकार के प्रयास से अब यहाँ नए सिरे से वैज्ञानिक पद्धति के साथ मलबरी की खेती शुरू की जा रही है जिससे इस खेती में कम लागत और लाभ अधिक होता है। उत्कृष्ट गुणवत्ता वाली पत्तियों का उत्पादन किया जाता है, जिससे रेशम की गुणवत्ता एवं मात्रा बेहतर होती है। यही कारण है कि इस क्षेत्र के किसान शहतूत की खेती करने में दिलचस्पी ले रहे हैं।

सुपौल में मुख्यमंत्री कोसी मलवरी परियोजना का सफल क्रियान्वयन हो रहा है। वित्त वर्ष 2014–15 में इस परियोजना के तहत मलवरी की खेती शुरू कर दी गई थी और इसी साल सुपौल में 71 महिला किसानों ने अपने खेतों में मलवरी के पौधे लगाए। वहीं वित्त वर्ष 2015–16 में मलवरी की खेती करने वाले किसानों की संख्या बढ़ कर 337 हो गई है। सुपौल में मलवरी की सफल खेती से प्रोत्साहित होकर वित्त वर्ष 2016–17 में सुपौल जिले में 1500 किसानों ने मलवरी की खेती का मन बनाया है।

सिरायगढ़ प्रखंड में नोनपाढ़ा गांव के 15 किसानों ने जबकि सदानंदपुर गांव के 9 महिला किसानों ने मलवरी की खेती की है। मलवरी की खेती के लिए प्रत्येक किसानों को 2700 पौधे उपलब्ध कराए गए थे। ये पौधे एस–1 और 1635 किस्म के हैं और पिछले वर्ष सितंबर महीने में इन पौधों की रोपाई की गई थी। इस तरह सरायगढ़–भपटियाही प्रखंड में कुल 31,037 पौधों की रोपाई हुई थी। हालांकि समय पर पर्याप्त सिंचाई नहीं मिलने से इनमें से करीब 15 प्रतिशत पौधे सूख गए।

इसी तरह वित्त वर्ष 2015–16 में 337 किसान मलवरी की खेती से जुड़े। इनमें सबसे ज्यादा 100 किसान त्रिवेणीगंज प्रखंड के हैं। इसके अलावा बसंतपुर में भी अच्छी संख्या में किसानों ने मलवरी की खेती में रुचि दिखाई है। इसी तरह सरायगढ़ और छातापुर प्रखंड में भी बड़ी संख्या में किसानों ने मलवरी की खेती की।

क्र.	प्रखंड	किसान
1.	त्रिवेणीगंज	100
2.	बसंतपुर	77
3.	किसनपुर	25
4.	सरायगढ़	24
5.	सरायगढ़	71
6.	छातापुर	40

शुरू हो गई कोकून की बिक्री

बंसतपुर और सरायगढ़ में जिन 71 किसानों ने मलवरी की खेती की थी, उनके खेतों में ये पौधे अब काफी बड़े और घने हो गए हैं। इन किसानों को मलवरी एवं केंद्रीय रेशम बोर्ड से पर्याप्त सहायता प्राप्त हो रही है। इनमें ज्यादातर किसानों ने अब कीटपालन करना भी शुरू कर दिया है। वे अब रोजाना मलवरी पौधों से पत्तियों की कटाई कर कीड़ों को खिलाते हैं। यह प्रक्रिया पिछले 7–8 महीनों से जारी है। इस बीच उन्होंने मलवरी के कीटों से ककून उत्पादित कर बेचना भी शुरू कर दिया है। इसी साल जनवरी महीने में बसंतपुर में बनेलीपट्टी पंचायत के गिदरमारी गांव के किसानों ने 54 किलोग्राम ककून का उत्पादन कर इसे 200 रुपये प्रति किलोग्राम की दर पर बेचा है। जबकि दूसरी खेप में इन किसानों ने कुल 63 किलो कोकून 400 रुपये प्रति किलोग्राम की दर पर बिक्री की है। यह इस बात को अभिप्रमाणित करता है कि मलवरी की खेती कर कीटपालन गतिविधि से जुड़ने वाले किसान अतिरिक्त आमदनी अर्जित करने में सक्षम हैं।

रेशम की खेती एवं कीटपालन

नाम : आनंदी देवी
समूह : सीता जीविका महिला स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन : चमेली जीविका महिला ग्राम संगठन
गांव : गिदरमारी
पंचायत : बनेलीपट्टी
प्रखंड : बसंतपुर, सुपौल

वर्ष 2008 में कोसी का कुशाहा बांध टूटते ही पूरा बसंतपुर प्रखंड प्रलयकारी बाढ़ की चपेट में था। देखते ही देखते पूरा इलाका जलमग्न हो गया। दरअसल अब खेती पर आश्रित रहने वाले इन गरीबी परीवारों के लिए खेती का भी एकमात्र सहारा छिन गया, क्योंकि बाढ़ की वजह से चारों ओर खेतों में करीब 2 से 3 फुट तक रेत जमा हो गया था, जिसपर खेती करना असंभव हो गया था। उनके लिए अब अपने परिवार के जीवन का अस्तित्व बचाने का संकट था, बसंतपुर प्रखंड के गिदरमारी गाँव की आनंदी देवी का परिवार। यह गांव नेपाल की सीमा से सटा है और इसके ऊपरी हिस्से में कुछ ही दूर पर कोसी नदी बहती है, जहां 2008 में कुशहा बांध के टूटने से बाढ़ का पानी सीधे गांव में प्रवेश कर गया था। बाढ़ के बाद रोजी–रोटी का कोई सहारा नहीं बचा था। परिवार में बेटी–दामाद एवं उनके 3 बच्चों समेत पूरे 7 लोगों को दो वक्त की रोटी कैसे नसीब हो, यह सबसे बड़ी चिंता थी। आखिरकार काम की तलाश में उसके पति ने घर से बाहर जाने का फैसला किया और वे मजदूरी करने दिल्ली चले गए। दिल्ली में मजदूरी के बाद वह कुछ रुपये बचा कर घर भेजता और इसी पैसे से उसके घर का खर्च चलता था। इस तरह धीरे–धीरे साल दो साल गुजर गए, मगर गरीबी नहीं गई। इस बीच जीविका ने बसंतपुर प्रखंड में जुलाई 2010 से अपने कार्यक्रम की शुरुआत की। जीविका के द्वारा महिलाओं के स्वयं सहायता समूह का गठन किया जा रहा था। आसपास की महिलाओं को समूह में जुड़ते देख आनंदी देवी भी सीता स्वयं सहायता समूह से जुड़ गई। वह रोजाना बैठक में हिस्सा लेने लगी और नियम के अनुरूप हर सप्ताह 10–10 रुपये बचत करने लगी। समूह से जुड़ने के बाद आनंदी देवी को गरीबी से लड़ने की हिम्मत आई और कुछ नया करने का आत्मबल। सीता जीविका महिला स्वयं सहायता समूह चमेली ग्राम संगठन से जुड़ गया। बाढ़ प्रभावित इन गरीब परिवारों के मदद के वास्ते ग्राम संगठन को खाद्य सुरक्षा निधि के तहत कुछ राशि प्राप्त हुई, जिससे आनंदी देवी समेत गांव की अन्य महिलाओं को कुछ अनाज प्राप्त हुआ ताकि उन्हें दो वक्त का भोजन मिल सके। वह बताती है कि बाढ़ के बाद उनके जैसे कई किसानों का खेत कोसी धारा में जा मिला। आनंदी देवी के पास पहले 4 एकड़ खेत था जिसमें से आधा हिस्सा कोसी की धारा में चला गया है और आज उस पर पानी बह रहा है जबकि बचे हिस्से वाले खेत में रेत की मोटी परत जम गई। इस बीच आनंदी देवी ने अपने खेतों से रेत हटाने का काम जारी रखा ताकि वे पुनः इसमें खेती प्रारंभ कर सकें। वह अपनी बेटी और बच्चों के साथ दिन–रात मेहनत कर खेतों से रेत निकालती ताकि इसे फसल बोने लायक बनाया जा सके। इस तरह कड़ी मेहनत के बाद उसने अपने डेढ़ बीघे खेत में से कछ हिस्से को रेत मुक्त कर दिया।

आनंदी देवी फिर से अपने खेतों में फसल बोने की तैयारी कर रही थी, ताकि परिवार के खाने के लिए अनाज उपजाया जा सके। यह सिलसिला जारी था। इसी दरम्यान चमेली ग्राम संगठन की बैठक में मलवरी की खेती के बारे में बताया गया। ग्राम संगठन की बैठक में आए जीविका के जीविकोपार्जन विशेषज्ञ और अन्य लोगों ने मलवरी की खेती और उसके बाद रेशम कीट पालन के बारे में जानकारी दी। उन्हें जानकारी मिली कि मलवरी यानी शहतूत की खेती करने के बाद रेशम कीट पालन कर वह ककून उत्पादित कर सकती हैं जिससे उन्हें अतिरिक्त आमदनी प्राप्त होगी।

शुरुआती दौर में मलवरी के पौधे लगाने में होने वाला पूरा खर्च सरकार देगी। साथ ही पौधों की देखरेख एवं इसकी सिंचाई–कोड़ाई में भी सरकारी मदद का प्रावधान है। मलवरी के पौधे लगाने वाले किसानों को मनरेगा के मद से 100 दिन के मानव श्रम का पैसा और सिंचाई के लिए पम्पसेट या बोरिंग आदि में भी आर्थिक मदद दी जाएगी। ग्राम संगठन की बैठक में मौजूद ग्रामीणों को बताया गया कि मलवरी पौधे लगाने के बाद उन परिवारों को रेशम कीट पालन के लिए भी आर्थिक मदद पहुंचाई जा रही है ताकि वे इस काम के लिए प्रेरित हो सकें। ग्राम संगठन की बैठक में जीविकाकर्मी और वीआरपी ने दीदियों को बताया कि उन्हें मलवरी की खेती एवं कीटपालन से जुड़ी तकनीकी जानकारियां और प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाएगा। समय–समय पर उन्हें मलवरी रेशम उद्योग से जुड़े अन्य कार्यों का प्रशिक्षण एवं परिभ्रमण कराया जाएगा। इन तमाम प्रोत्साहनों एवं प्रावधानों का असर यह हुआ कि चमेली ग्राम संगठन से जुड़ी कई दीदियों ने मलवरी की खेती करने में रुचि दिखाई। आनंदी देवी ने पहली बार में ही मन बना लिया कि वह मलवरी की खेती और रेशम कीट पालन का काम करेगी।

गांव के इन किसानों के लिए अच्छी बात यह थी कि मलवरी की खेती बालू पर भी संभव है। आनंदी देवी के खेत के कुछ हिस्से में अभी भी रेत जमा था। इसी लिए उन्होंने रेत वाले हिस्से में मलवरी की खेती करने का फैसला किया। इस तरह सितंबर 2014 में आनंदी देवी और इसी गांव की

- **मलवरी की खेती के लिए कोसी एवं बसंतपुर की जलवायु व मिट्टी अनुकूल**
- **आनंदी देवी ने शुरुआती चरण में ही की मलवरी की खेती**
- **मलवरी के पौधे बड़े होने के बाद आनंदी देवी ने कीट पालन का काम भी किया शुरू**
- **कीट पालन कर उसने तैयार किया करीब 14 किलो ककून**
- **उत्पादित ककून की 200 से 400**
- **रुपये प्रति किलो की दर से हुई बिक्री**
- **सुपौल में 1500 किसान इस साल करेंगे मलवरी की खेती**

फेकनी देवी एवं बीणा देवी समेत करीब 47 महिला किसानों को मलवरी के पौधे उपलब्ध कराए गए। इन्हें प्रत्येक आधा एकड़ खेत के लिए 2700 मलवरी के पौधे दिए गए। प्रति पौधे की कीमत 1.5 रुपये होती है। इसके अलावा पौधे लगाने के लिए 1 घनमीटर खुदाई करने एवं इसे लगाने हेतु लगने वाली मजदूरी के लिए मनरेगा के मद से 34 मानव दिवस का श्रम उपलब्ध कराया गया। इसके अतिरिक्त मनरेगा के जरिये उनके खेतों में सिंचाई की पर्याप्त सुविधा के लिए एवं वर्मी कम्पोसट आदि

के लिए भी धनराशि दी गई। परिणामस्वरूप गिदरमारी गांव की कई महिलाओं ने मलवरी की खेती में अपना हाथ आजमाया।

आनंदी देवी बताती है कि मलवरी की खेती के लिए मनरेगा मद से पैसा तो मिला, लेकिन काफी विलंब से। कई बार इसके लिए आवेदन देने एवं मनरेगा पी ओ की शिकायत करनी पड़ी। इसके अलावा जीविका के द्वारा भी जिला स्तर पर गठित अनुश्रवण समिति की बैठक में इस मुद्दे को उठाया गया। इसके बाद जिलाधिकारी के द्वारा मलवरी किसानों के पैसे का त्वरित भुगतान करने का निर्देश दिया गया। इसके बाद उन्हें पैसा मिल पाया। उसका कहना है कि यदि समय पर पैसा मिल जाता और सिंचाई की व्यवस्था हो जाती तो मलवरी के पौधे की रौनक काफी अच्छी होती। वह बताती है कि बीच में गर्मी के मौसम में इसमें सिंचाई का अभाव रहा। फिर भी काफी मेहनत के बाद काफी संख्या में पौधों को बचाया जा सका और अब ये पौधे 5 से 6 फुट तक हो चुके हैं। इनमें से कुछ पौधों की हाल ही में कटाई की गई है ताकि इससे नई कोपलें निकल सके, जो कीटों के लिए भोज्य पदार्थ हेतु सबसे उपयुक्त मानी जाती है।

नाम : बीणा देवी
समूह : सीता जीविका महिला स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन : चमेली जीविका महिला ग्राम संगठन
गांव : गिदरमारी
पंचायत : बनेलीपट्टी
प्रखंड : बसंतपुर, सुपौल
उपलब्धि : अभी हाल ही में 14 किलो ककून का उत्पादन कर 200 रुपये प्रति किलो की दर से इसकी बिकी की

आनंदी देवी समेत गांव की अन्य महिलाएँ मलवरी की खेती के साथ रेशम कीट पालन भी कर रही हैं। इसके लिए उन्होंने अपने घरों में कीटपालन गृह का निर्माण किया है। उन्हें इसके लिए आर्थिक सहायता भी प्राप्त हुई है। आनंदी देवी को इस काम के लिए विशेष प्रशिक्षण भी प्राप्त हुआ है। पहली दफा आनंदी देवी के घर करीब 6 किलो ककून तैयार हुआ। वहीं इनकी पड़ोसी बीणा देवी ने कीटपालन में काफी बरीकियां दिखाई और उन्होंने कुल 14.6 किलोग्राम ककून का उत्पादन किया। इन्होंने बताया कि 200 किलोग्राम की दर पर ककून की बिक्री की है और इससे उन्हें करीब 3,000 रुपये की आमदनी हुई। इस तरह बीणा देवी ने सबसे ज्यादा ककून उत्पादित कर गांव की महिला किसानों के बीच मिसाल कायम की है। आनंदी देवी के अलावा फेकनी देवी ने भी 8 किलोग्राम ककून का उत्पादन किया।

आनंदी देवी की मानें तो मलवरी रेशम कीट पालन के रूप में उन्हें एक अलग व्यवसाय दिख रहा है। भविष्य में वह इसे आजीविका के रूप में अपना सकती है और अन्य महिलाएं भी इस काम में रुचि ले सकती है। इसे खेती के साथ–साथ इस काम को भी आगे बढ़ाया जा सकता है। हालांकि उन्हें इस काम से अभी बहुत ज्यादा फायदा नहीं मिला है। सरकारी मदद को छोड़कर बाकी केवल ककून उत्पादन से अभी इतनी राशि प्राप्त नहीं हुई है कि वह इससे अपना परिवार चला सके। लेकिन यह सच है कि इससे वह खेती के अतिरिक्त अपने घर की आमदनी जरूर बढ़ा सकती है।

मुर्गी पालन हेतु 11 मदर यूनिट की स्थापना

भारत में मुर्गी पालन प्राचीन काल से होता रहा है। लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले परिवार संसाधनों की कमी एवं तकनीकी जानकारी के अभाव में व्यावसायिक स्तर पर मुर्गी पालन नहीं कर पाते हैं। इसके साथ ही ये किसान अपनी कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण जोखिम उठाने में सक्षम नहीं होते हैं। अतः इस परिस्थिति में ग्रामीण परिवारों के लिए बैकयार्ड कुक्कुट पालन जीविकोपार्जन का एक लाभदायी साधन है, जिसे घर के पिछवाड़े एवं कम जगह में आसानी से किया जा सकता है। इस व्यवसाय को घर की महिलाएँ एवं बुजुर्ग भी आसानी से कर सकते हैं।

जीविका गाँव की गरीब महिलाओं को बैकयार्ड मुर्गी पालन जैसी गतिविधियों से जोड़ने के लिए सार्थक प्रयास कर रही है ताकि उनके घर की आमदनी बढ़े और वे गरीबी के दुष्चक्र से बाहर निकल सकें। इस दिशा में सतत् प्रयास करते हुए जीविका गरीब महिलाओं में बैकयार्ड मुर्गी पालन की आदत विकसित करने के लिए कई प्रकार के प्रोत्साहन दे रही है। उन्हें रियायती दर पर चूजे उपलब्ध कराए जाने के अलावा चूजों की देखभाल के लिए तकनीकी मदद, आर्थिक सहायता, टीकाकरण, बीमारियों की रोकथाम के लिए उचित उपाय से लेकर कदम–कदम पर सहायता उपलब्ध कराई जा रही है।

बैकयार्ड मुर्गी : गुण एवं विशेषता

बैकयार्ड कुक्कुट पालन के लिए सबसे उपयुक्त लो–इनपुट प्रजाति वाली मुर्गी होती है, जो कम लागत में अधिक मांस एवं अंडे का उत्पादन करती है। यह प्रजाति न तो पूरी तरह देसी होती है और न ही पूरी तरह ब्वायलर। यह दोनों प्रजाति का मिश्रित रूप है। बैकयार्ड मुर्गियां देसी मुर्गियों की तरह गाँव के परिवेश एवं परिस्थितियों में आसानी से ढल जाती है और इसमें इसमें रोग निरोधक क्षमता होती है। ये घरों के अपशिष्ट पदार्थों को खाने में सक्षम होती हैं। दूसरी तरफ, देसी किस्म की मुर्गियों की तुलना में इस प्रजाति की मुर्गियां ज्यादा तेजी से बढ़ती हैं और अधिक संख्या में अंडे देती हैं। इससे बैकयार्ड मुर्गी पालन करने वाले परिवारों को ज्यादा लाभ मिलता है।

परिणामस्वरूप बैकयार्ड किस्म की मुर्गियों का विकास दोनों किस्म की मुर्गियों के सम्मिलित रूप से किया गया है।

घरेलू स्तर पर मुर्गी पालन से ग्रामीण परिवारों की मासिक आय में नियमित वृद्धि होती है। यही कारण है कि जीविका के स्वयं सहायता समूह से जुड़ी गरीब महिलाओं को घरेलू स्तर पर मुर्गीपालन के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। सुपौल जिले में सतपुरा देसी नाम की प्रजाति को बढ़ावा दिया गया है। यह प्रजाति कम लागत में अधिक उत्पादन देने में सक्षम है। इसे कलर्ड बर्ड भी कहा जाता है क्योंकि इस प्रजाति की मुर्गियां विभिन्न रंगों की होती है। यह तीन महीनों में 2.5 किलो वजन प्राप्त करती है एवं यह सालाना 150 से ज्यादा अंडों का उत्पादन करती है।

बैकयार्ड मुर्गी पालन :– एक परिदृष्य

जीविका परियोजना के अंतर्गत मुर्गी पालन करने के लिए सबसे पहले मदर यूनिट की स्थापना की जाती है। प्रत्येक मदर यूनिट से लगभग 300 परिवार जुड़े होते हैं। इन परिवारों को 3 से लेकर 6 चक्रों में 45 से 150 चूजे (28 दिन की उम्र के

चूजे) दिए जाते हैं। प्रति चक्र चूजों की संख्या और एक सदस्य को कितने चक्रों में चूजे दिए जाएं, यह सदस्य की क्षमता और उसकी तकनीकी जानकारी पर निर्भर करेगा। इस तरह एक मदर यूनिट में औसतन 2500 से 3000 चूजों के पालने की व्यवस्था होनी चाहिए।

जीविका ने पहले ही प्रायोगिक तौर पर कई प्रखंडों में बैकयार्ड मुर्गी पालन आधारित मदर यूनिट की शुरुआत की है, इससे तकरीबन 10,000 सदस्य लाभान्वित हो रहे हैं। अब तक के अनुभवों से यह ज्ञात होता है कि आमतौर पर एक परिवार शुरुआत में प्रति चक्र कम संख्या में चूजों के साथ मुर्गी पालन का काम शुरू करते हैं। आगे अपने अनुभवों और इस काम में लाभ दिखने के बाद मुर्गी पालन करने वाले परिवारों का विश्वास बढ़ता है और फिर धीरे–धीरे वे अधिक संख्या में चूजों की मांग करते हैं।

मुर्गी पालन गतिविधि से जुड़ने के लिए जीविका के स्वयं सहायता समूह के सदस्य को सबसे पहले ग्राम संगठन स्तर पर उत्पादक समूह का हिस्सा बनना पड़ता है। इसके पश्चात उत्पादक समूह प्रत्येक सदस्यों से 50–50 रुपये जमा लेकर व्यवसायिक गतिविधि के लिए पंजीकृत होता है। सदस्यों द्वारा जमा किए गए अंश पूंजी संकुल स्तरीय संघ या नोडल ग्राम संगठन में व्यवसायिक समूह के पास रखी जाती है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक सदस्यों से प्रति चूजा 10 रुपये की दर से प्राप्त होने वाले अंशदान की राशि संकुल स्तरीय संघ या नोडल ग्राम संगठन में जमा कराई जाती है। संकुल स्तरीय संघ या नोडल ग्राम संगठन के द्वारा यह राशि आंशिक रूप से मुर्गी पालन करने वाले परिवार के स्तर पर प्रशिक्षण, निगरानी एवं टीकाकरण के खर्च में उपयोग की जाती है। कुल 150 चूजों पर होने वाले संभावित खर्च की राशि मुर्गी पालन करने वाले सदस्यों को प्रदान की जाती है और सदस्यों के कुल अंशदान का विवरण नीचे दिए जा रहे हैं। हालाकि समय–समय पर आवश्यकतानुसार इन सभी खर्चों में संशोधन किए जाते हैं।

- 150 एक दिवसीय चूजों की लागत : 150 X 19 = 2850/- रुपये
- पालन–पोषण पर खर्च : 150 X 31 = 4650/- रुपये (भोजन, दवाई, उद्यम आदि खर्च शामिल)
- पीआरपी सेवा शुल्क : 150 X 4 = 600/- रुपये
- सदस्यों के तक पहुँचने के पूर्व
  28 दिन के 150 चूजों की कुल लागत : 2850+4650+600 = 8100/- रुपये
- पिंजरे की लागत : 2000 रुपये (इसमें से 1,000 रुपये योजना के अंतर्गत उन्हें अनुदान के रूप में दिया जाता है।)
-

सदस्यों का कुल अंशदान –

- 150 चूजों के लिए सदस्यों का योगदान : 10 X 150 = 1500/- रुपये
- पी.आर.पी. सेवा शुल्क : 150 X 4 = 600/- रुपये
- पिंजरे के लिए सदस्यों का योगदान : 1000/- रुपये
- पंजीकरण शुल्क की राशि : 50/- रुपये
- इस तरह सदस्यों का कुल अंशदान : 1500+600+1000+50 = 3150/- रुपये

शेष राशि का भुगतान सदस्यों को अनुदान के रूप में पहले चक्र में किया जाता है।

मुर्गी पालन के संस्थागत स्वरूप

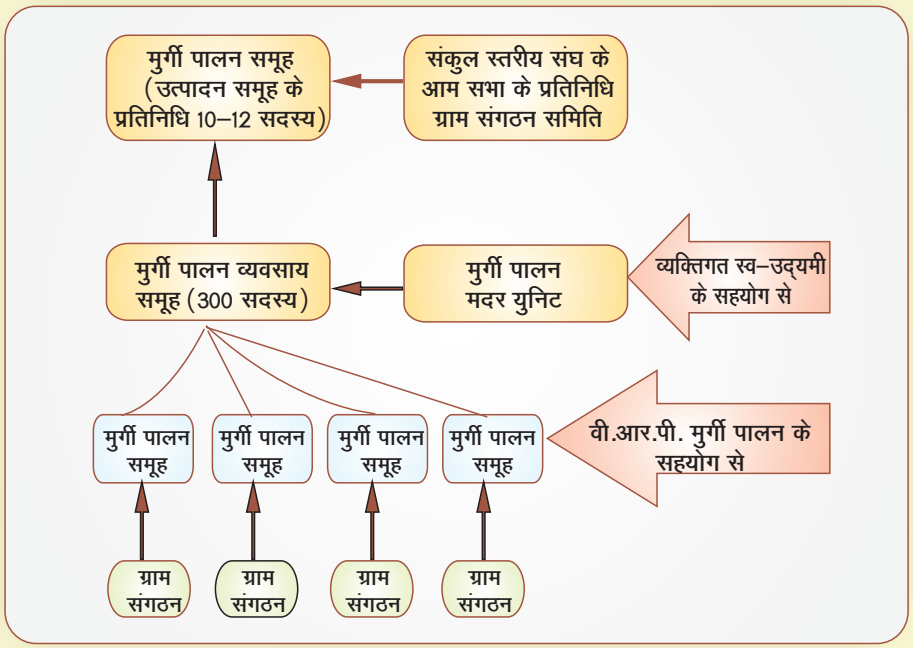

सुपौल जिले में अब तक 11 मदर यूनिट की स्थापना हो चुकी है। सबसे पहले छातापुर प्रखंड में दिसंबर 2014 में मदर यूनिट की स्थापना की गई थी। दूसरी मदर यूनिट प्रतापगंज प्रखंड में खोली गई है, जहाँ स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाएँ मदर यूनिट से चूजा खरीद कर मुर्गीपालन कर रही हैं। इसके बाद जिले के सभी प्रखंडों में एक–एक मदर यूनिट खुल चुके हैं और अब तक कुल 11 मदर यूनिट स्थापित हो चुके हैं। प्रत्येक मदर यूनिट से लगभग 300 परिवार लाभान्वित हो रहे हैं। इस दृष्टिकोण से जिले में लगभग 3300 परिवार मुर्गी पालन गतिविधि से जुड़ गए हैं।

छातापुर प्रखंड के राजवादा गाँव की शहीना खातून ने एक मदर यूनिट की स्थापना की है। वह खुशी जीविका महिला स्वयं सहायता समूह की सदस्य है। यह मदर यूनिट छातापुर भीमपुर मुख्य मार्ग पर स्थित है। इस मदर यूनिट को पहले चक्र के तहत 2,855 चूजे प्राप्त हुए थे। इस मदर यूनिट की क्षमता करीब 10,000 चूजों के पालने की है। एक मदर यूनिट लगाने का कुल खर्च 6 लाख रुपये आंका गया है। मदर यूनिट तैयार हो जाने के बाद इसे 1 लाख 20 हजार रुपये सब्सिडी के तौर पर दी जाती है जबकि शेष राशि का इंतजाम उन्हें खुद करना पड़ता है। छातापुर में मदर यूनिट के लिए शहीना खातून ने ग्राम संगठन से कर्ज लेकर पूंजी का इंतजाम किया है।

सुपौल के प्रतापगंज प्रखंड के सुखानगर गाँव स्थित विमला देवी ने भी जीविका की मदद से मदर यूनिट की स्थापना की है। पहले चक्र में इन्हें 2,040 चूजे प्राप्त हुए। इसके अलावा दूसरे चक्र में 3,488 चूजे दिए गए हैं। विमला देवी भी जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य हैं। इस मदर यूनिट में चूजों के पालन पोषण और रखरखाव पर होने वाला खर्च जीविका संकुल स्तरीय संघ के द्वारा किया जा रहा है। खास बात यह है कि मदर यूनिट संचालकों को इससे लगभग 10 से 15 हजार रुपये की आमदनी होने का अनुमान है।

युवाओं का कौशल विकास

अच्छा रोजगार पाने के लिए हुनरमंद होना बेहद जरूरी है। इस दिशा में भारत सरकार युवाओं के कौशल विकास की महत्वाकांक्षी योजना चला रही है। कौशल विकास से जुड़ी भारत सरकार की योजनाओं से सुपौल जिला भी लाभान्वित हो रहा है। इस योजना के अंतर्गत सुपौल जिले में प्रशिक्षण केंद्र खोले गए हैं, जहाँ ग्रामीण क्षेत्र के गरीब युवाओं को हुनरमंद बनाकर उनके लिए रोजगार की व्यवस्था की जा रही है। सुपौल में अब तक 964 युवा लाभान्वित हो चुके हैं, जिन्हें जीविका के प्रयास से प्रशिक्षण एवं रोजगार प्राप्त हुए हैं।

दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना

ग्रामीण विकास मंत्रालय ने ग्रामीण क्षेत्र में गरीब परिवारों के युवक–युवतियों का कौशल विकास करने एवं उनकी उत्पादक क्षमता बढ़ाने के लिए दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल विकास योजना (डीडीयू–जीकेवाई) शुरू किया है। इसके क्रियान्वयन के जरिये देश में समावेशी विकास के राष्ट्रीय एजेंडे पर जोर दिया गया है। आधुनिक रोजगार बाजार में भारत के ग्रामीण गरीब युवाओं को शामिल करने को लेकर कई तरह की चुनौतियां हैं। इसकी प्रमुख वजह औपचारिक शिक्षा और बाजार के अनुकूल कौशल की कमी होना है। युवाओं को हुनरमंद बनाने के लिए सरकार ने यह नई योजना शुरू की है। इसमें मुख्य रूप से विश्वस्तरीय कौशल प्रशिक्षण उपलब्ध कराना, वित्तपोषण, प्रशिक्षण के अनुरूप युवाओं को स्थायी रोजगार उपलब्ध कराने पर जोर देने के साथ ही स्वरोजगार से जुड़ी आजीविका को प्रोत्साहित करने एवं विदेश में भी रोजगार प्रदान करने जैसे उपाय शामिल किए गए हैं। केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी योजना डीडीयू–जीकेवाई के माध्यम से देश में गरीब युवाओं को हुनरमंद बनाकर रोजगार प्रदान करने के साथ ही देश के रोजगार बाजार में कुशल कामगारों की कमी को दूर करने का भी काम कर रही है।

डी.डी.यू–जी.के.वाई. देश के तमाम हिस्सों में लागू है। फिलहाल यह योजना 33 राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों के 610 जिलों में क्रियान्वयित की गई है। इसमें 50 से अधिक क्षेत्रों से जुड़े 250 से अधिक ट्रेडों को शामिल करते हुए 202 परियोजना कार्यान्वयन एजेंसियों के साथ साझेदारी की गई है, जो युवाओं को विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षण दे रही हैं। खास बात है कि वर्ष 2004–05 से लेकर 30 नवंबर 2014 तक कुल 10.84 लाख उम्मीदवारों को प्रशिक्षित किया गया है और कुल 8.51 लाख उम्मीमदवारों को रोजगार प्रदान किया गया है।

सुपौल जिले में भी ग्रामीण युवाओं का कौशल विकास करने के लिए प्रशिक्षण एवं नियोजन सेवा प्रदान करने वाली एजेंसी कार्य कर रही है। यहाँ युवाओं के लिए निःशुल्क प्रशिक्षण की सुविधा है। इसके अलावा प्रशिक्षण के उपरान्त उन्हें रोजगार भी उपलब्ध कराया जा रहा है। सुपौल में प्रशिक्षण केंद्र का विवरण निम्न है –

आइडियल एजुकेशन प्राइवेट लिमिटेड

सुपौल के चकला निर्मली में स्थित स्टेट बैंक भवन के ऊपर 'आइडियल एजुकेशन प्राइवेट लिमिटेड' प्रशिक्षण केंद्र दीन

दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना के अंतर्गत जुलाई 2015 शुरू हुआ है। इस प्रशिक्षण केंद्र में तीन ट्रेडों –

1. बेड साइड पेशेंट अटेंडेंट,
2. कस्टमर रिटेल सेल्स (सीआरएस) और
3. इलेक्ट्रिकल में प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है,

यह पूर्णतः निशुल्क है। सभी ट्रेडों के लिए प्रत्येक बैच की अवधि 3 महीने है और इस दौरान छात्रों के लिए पूर्णतः निःशुल्क आवासीय एवं भोजन की सुविधा उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त प्रशिक्षणार्थियों को मुफ्त पोषाक और शिक्षण सामग्रियां उपलब्ध कराई जाती हैं। केंद्र में शुरुआत से अब तक कस्टमर रिटेल सेल्स (सी.आर.एस.) ट्रेड में 65 युवाओं का प्रशिक्षण पूर्ण हो चुका है तथा फिलहाल 32 युवा प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। साथ ही बेड साइट पेशेंट अटेंडेंट में 64 छात्र–छात्राओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किए। इसके अतिरिक्त अभी इलेक्ट्रिकल ट्रेड में 35 युवाओं का नामांकन किया गया है। प्रशिक्षण प्राप्त इन युवाओं में से 59 युवाओं को रोजगार उपलब्ध करवाया गया है।

ग्रामीण परिवेश एवं आर्थिक रूप से कमजोर इन युवाओं को प्रशिक्षण एवं रोजगार के उपरान्त भी उसके मानदेय के अतिरिक्त कुछ समय तक सरकार की ओर से आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। अपने जिला में रोजगार प्राप्त होने पर सरकार ऐसे युवाओं को 2 महीने तक 1–1 हजार रुपये प्रति माह अतिरिक्त सहायता देती है। वहीं जिले के बाहर और राज्य के अंदर रोजगार पाने की स्थिति में उन्हें 3 माह तक 1–1 हजार रुपये और राज्य के बाहर रोजगार मिलने की स्थिति में सरकार उन्हें अतिरिक्त सहायता के रूप में 6 महीने तक 1,000–1,000 रुपये प्रदान करती है ताकि उन्हें रोजगार के शुरूआती दिनों में किसी तरह का आर्थिक संकट का सामना न करना पड़े।

प्राशिक्षण के उपरान्त रोजगार पाने वाले युवा संबंधित क्षेत्र में न केवल बना रहे बल्कि इस क्षेत्र में दक्षता के साथ तरक्की करे, इसके लिए अगले 1 साल तक उन पर खास निगरानी रखी जाती है ताकि कार्य के दौरान उन्हें किसी भी प्रकार की समस्याओं का सामना न करना पड़े। इस तरह की निगरानी के माध्यम से यह सुनिश्चित किया जाता है कि नियोक्ता कंपनी की ओर से इन युवाओं को तय शर्तों के मुताबिक वेतन व अन्य सुविधाएं मिलती रहे। इसका मुख्य उद्देश्य यह है कि रोजगार प्राप्त इन युवाओं को वाजिब मेहनताना एवं अन्य सुविधाएं ससमय प्राप्त हो सकें और युवा भी अपने कार्य में दक्षता हासिल करते हुए अपने कॅरियर को आगे बढ़ा सकें।

स्पार्क ऑल सिक्यूरिटी एंड अलायड सर्विस प्राइवेट लिमिटेड

स्पार्क ऑल सिक्यूरिटी एंड अलायड सर्विस प्राइवेट लिमिटेड ने दीन दयाल उपाध्याय कौशल योजना के अंतर्गत सुपौल के राघोपुर में 8 नवंबर 2014 को एक प्रशिक्षण केंद्र शुरू किया।

इस प्रशिक्षण केंद्र के माध्यम से 82 ग्रामीण युवाओं को सुरक्षा गार्ड में प्रशिक्षण प्रदान किया गया। यह केंद्र गैर आवासीय था जबकि यहाँ में छात्रों के लिए प्रशिक्षण पूर्णतः निःशुल्क था।

अभिभावकों के साथ बैठक

प्रशिक्षण उपलब्ध कराने वाली एजेंसियां और जीविका समय–समय पर कौशल प्रशिक्षण करने वाले युवाओं के अभिभावकों के साथ बैठक करती हैं, जिससे उन्हें उनके बच्चों के भविष्य के बारे में बताया जा सके। इससे बच्चों के कैरियर को लेकर अभिभावकों में विश्वास का माहौल कायम होता है।

जीविका के माध्यम से रोजगार पाने वाले युवा

प्रशिक्षण के योग्य चिह्नित युवाओं की संख्या	**14988**
रोजगार प्राप्त करने वाले युवाओं की संख्या (सीधा रोजगार)	364
प्रशिक्षण उपलब्ध कराने वाली एजेंसियों के माध्यम से रोजगार प्राप्त करने वाले युवाओं की संख्या	120
प्रशिक्षित युवाओं की संख्या	161

रोजगार आपके द्वार

जीविका सुपौल की मदद से अब तक कुल 964 युवाओं को विभिन्न कंपनियों में सीधे रोजगार उपलब्ध कराया गया है। जिले के विभिन्न प्रखंडों के इन कम पढ़े–लिखे युवाओं को श्री राजस्थान सिंटेक्स लिमिटेड, डूंगरपुर राजस्थान और महाराजा श्री उमेद सिंह मिल्स, पाली राजस्थान में मशीन ऑपेरटर के पद पर रोजगार प्रदान किया गया, जिससे उनके और उनके परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ। इसके अलावा जीविका में ही डाटा एंट्री ऑपेरटर और ग्रामवार्ता एक्जीक्यूटिव आदि पदों पर भी यहाँ के गरीव युवाओं को रोजगार प्रदान किया गया।

ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान

सुपौल जिले के अग्रणी बैंक स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के द्वारा ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान चलाया जा रहा है, जहाँ ग्रामीण युवक–युवतियों को अलग–अलग ट्रेडों में प्रशिक्षण प्रदान कर स्वरोजगार के अवसर प्रदान किये जा रहे हैं। इसमें जीविका सुपौल भी पूरा सहयोग दिया है। अभी तक रोजगार साधन सेवी के सहयोग से जीविका परिवार के 70 युवाओं को पशुपालन विषय पर प्रशिक्षण उपलब्ध कराया गया।

रोजगार शिविर : रोजगार आपके द्वार

जिले में समय–समय पर जीविका द्वारा रोजगार शिविर का आयोजन किया जाता है। इसका उद्देश्य गांव के कम पढ़े–लिखे युवा बेरोजगार सीधे तौर पर शिविर में भाग लेकर अपनी योग्यता के अनुरूप रोजगार का चयन कर सकें। इस आयोजन में बिहार एवं दूसरे राज्यों की चुनिंदा कंपनियों के प्रतिनिधि अपने मापदंडों के आधार पर युवाओं का चयन करते हैं। रोजगार शिविर का आयोजन जिला मुख्यालय और प्रखंड मुख्यालयों में किया जा रहा है जहां बड़ी संख्या में इच्छुक ग्रामीण युवा हिस्सा लेकर रोजगार पा रहे हैं। देखा जाए तो रोजगार शिविर ग्रामीण युवाओं के लिए रोजगार पाने का सबसे बेहतर मंच है। इन रोजगार शिविरों के माध्यम से सुपौल में अब तक 1006 युवाओं को विभिन्न कंपनियों में रोजगार प्राप्त हुआ है।

बचत से महिलाओं में आई आर्थिक आत्मनिर्भरता

भविष्य में आर्थिक सुरक्षा और जरूरतों की पूर्ति के लिए बचत करना बहुत जरूरी है। साथ ही किसी की आर्थिक तरक्की का अंदाजा भी उसकी बचत की स्थिति से लगाया जा सकता है। अगर आमदनी ज्यादा हो तो जाहिर है कि उसकी बचत भी ज्यादा होगी। कम आय वाले भी छोटी ही सही मगर नियमित बचत करने की आदत डालें तो कुछ समय के बाद वे अच्छी–खासी रकम जमा कर सकते हैं।

बचत करना, आवश्यक क्यों?

बचत मुसीबत के समय में किसी भी व्यक्ति को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करती है। इसके अलावा यह भविष्य में आर्थिक जरूरतों की पूर्ति करने में मददगार होती है। महिलाओं के लिए तो बचत और भी जरूरी है क्योंकि हमारे ग्रामीण समाज में आज भी महिलाओं के पास वित्तीय स्वायत्तता नहीं है लेकिन बचत कर वह कुछ पैसे जमा कर लेती हैं तो इससे उनकी आर्थिक आत्मनिर्भरता बढ़ती है और घर–परिवार में भी उनका सम्मान बढ़ता है। वह अपने और अपने परिवार के लिए वित्तीय निर्णय लेने में सहायता दे सकती हैं इसलिए महिलाओं के लिए बचत पर विशेष ध्यान दिया जाता है। परियोजना ने स्वयं सहायता समूह के माध्यम से गाँव की गरीब महिलाओं को अपनी आय में से खर्च होने वाली राशि की कटौती कर प्रति सप्ताह कुछ पैसे बचत करने के लिए प्रोत्साहित किया है। इसका परिणाम यह हुआ कि जीविका समूह से जुड़ने वाली सभी महिलाएँ समान रूप से नियमित बचत करती हैं। समूह के पास हर सप्ताह सामूहिक बचत के तौर पर बड़ी धनराशि जमा होती है।

सुपौल में समूह की गरीब महिलाएँ प्रति माह कर रहीं करीब 50 लाख रुपये बचत

बिहार जैसे पिछड़े राज्य में आज ग्रामीण क्षेत्र की लाखों महिलाएँ नियमित रूप से साप्ताहिक बचत कर रही हैं। इसी तरह सुपौल में मई 2016 तक यहाँ कुल 11,548 स्वयं सहायता समूहों का गठन हो चुका है। आंकड़ों के मुताबिक इन समूहों से कुल 1,34,557 महिलाएँ जुड़ी हैं। ये महिलाएँ नियमित रूप से हर सप्ताह औसतन 10 रुपये बचत कर रही हैं। इस तरह से सुपौल जिले में ग्रामीण स्तर पर हर सप्ताह तकरीबन 15 से 16 लाख रुपये की बचत हो रही है। इस आधार पर सुपौल की गरीब महिलाएँ हर महीने अनुमानतः 55 से 60 लाख रुपये तक की बचत कर रही हैं। इस तरह जून 2016 तक सुपौल जिले में

समूह की महिलाओं के द्वारा की गई बचत की कुल राशि 13 करोड़ रुपये से ज्यादा हो चुकी है। सुपौल जैसे जिले के लिए यह आंकड़ा और भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ आय का कोई स्थायी स्रोत नहीं है। खासकर महिलाएँ, जिनके पास रोजगार के स्थायी साधन नहीं है, फिर भी वे अपने रोजमार्रा के खर्चों में कटौती कर छोटी बचत से यह रकम जमा कर रही हैं।

नियमित बचत करने की आदत ने महिलाओं के जीवन में उल्लेखनीय बदलाव लाया है। उनमें यह बदलाव सामाजिक एवं आर्थिक दोनों स्तर पर देखने को मिल रहा है। समूह में जुड़ने से उनमें बचत की भावना जगी। अब वह किसी भी तरह साप्तहिक बचत के लिए पैसों का इंतजाम कर रही हैं। चूंकि बचत की राशि में एकरूपता होती है, इससे समूह की महिलाओं में समान स्वामित्व की भावना विकसित हुई है जिस कारण समूह में वित्तीय निर्णयों में उनकी समान सहभागिता होती है। इसके अलावा वे सामाजिक स्तर पर आपसी जान–पहचान बढ़ी है। अब उनकी पहचान उनके नाम से होने लगी है जबकि पहले वह महज अपने पति या बच्चों के नाम से जानी जाती थीं। किसी भी जरूरत के वक्त अब उन्हें किसी अन्य के सामने हाथ फैलाने नहीं जाना पड़ता बल्कि वे समूह से पैसे उधार लेकर अपनी जरूरतें पूरी कर लेती हैं। बचत करने की वजह से महिलाओं को समूह के माध्यम से बैंक से भी आसानी से ऋण मिल जाता है, जिसे लेकर उन्होंने अपना छोटा–मोटा रोजगार शुरू करती है। इससे उनके घर की आमदनी बढ़ी है और उनके घर–परिवार का जीवन स्तर सुधरा है।

बचत की आदत

चार साल पहले की बात है। छातापुर प्रखंड के निर्मला देवी मजदूरी कर किसी तरह अपने परिवार का पेट पाल रही थी। घर के खर्चों को पूरा करना ही उसकी सबसे बड़ी चुनौती थी। ऐसी स्थिति में भविष्य के लिए कुछ पैसे बचा कर रखने की बात वह सोच भी नहीं सकती थी। लेकिन वर्ष 2010 में श्रीराम जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ने और जीविका के प्रोत्साहन से उसमें बचत करने की भावना जागृत हुई। इसके बाद उसने हर सप्ताह अपने जरूरी खर्चों में से ही कुछ पैसे बचा कर रखना शुरू कर दिया। वह समूह के लिए हर सप्ताह 10–10 रुपये बचत करने लगी। बचत की इस आदत ने उसे और भी पैसे बचाने के लिए प्रेरित किया। निर्मला देवी बताती है कि बेटी की शादी के लिए उसने कुछ पैसे बचाकर रखना शुरू कर दिया। यही कारण था कि दो साल बाद जब वह अपनी बेटी की शादी करने लगी तो उसके पास कुछ पैसे जमा हो चुके थे। इसके अलावा कुछ पैसे उसने समूह से भी कर्ज लिया। वह कहती है कि अगर वह बचत नहीं करती तो उसके पास पैसे जमा नहीं होते और न ही वह समूह से कर्ज ले पाती। समूह की बदौलत उसने बेटी की शादी के लिए पैसों का इंतजाम कर लिया। शादी में लिए कर्ज वापस करने के बाद निर्मला देवी ने समूह से दोबारा 10,000 रुपये कर्ज लेकर घर के आगे पान–बिस्कुट व नमकीन की दुकान खोली। यह दुकान वह खुद चलाती है। निर्मला देवी साप्ताहिक बचत नियमित रूप से कर रही है। इसके अलावा वह कर्ज के किस्तों का भुगतान करने के बाद घर के खर्चों में से कुछ राशि अपने लिए बचा कर रखती है ताकि जरूरत के वक्त काम आए।

नाम : निर्मला देवी
समूह : श्रीराम जीविका महिला स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन : रोशन जीविका महिला ग्राम संगठन
सीएलएफ : गरिमा महिला जीविका संकुल स्तरीय संघ
ग्राम : चकला
पंचायत : डहरिया
प्रखंड : छातापुर, सुपौल
कार्य : जीविका के समूह में बचत के पैसे और थोड़ा कर्ज लेकर शुरू की पान की दुकान

- **बचत की राशि से निर्मला देवी को बेटी की शादी के वक्त मिला सहारा**
- **समूह से कर्ज लेकर खोली पान की दुकान**
- **समूह में नियमित बचत करने के अलावा घर पर भी अलग से कर रही बचत ताकि यह भविष्य में आए काम**

नियमित बचत

त्रिवेणीगंज प्रखंड में जदिया पंचायत की सुलेखा देवी दो साल पहले ऋतु समूह से जुड़ी थी। तब से वह हर सप्ताह 10–10 रुपये बचत करती आ रही है। वह बताती है कि समूह में जुड़ने और लगातार बचत करने से उन्हें कई फायदे हुए। सबसे पहले तो समूह से कर्ज लेकर उसने रहने के लिए छोटा सा घर बनाया। धीरे–धीरे यह पैसा लौटा देने के बाद उसने समूह से दोबारा 20,000 रुपये कर्ज लिया और इस पैसे से उसके पति ने बर्तन का व्यवसाय शुरू किया।

नाम : सुलेखा देवी

समूह : ऋतु जीविका स्वयं सहायता समूह

ग्राम संगठन : सावन महिला जीविका ग्राम संगठन

ग्राम/पंचायत : जदिया

प्रखंड : त्रिवेणीगंज, सुपौल

कार्य : बचत के पैसे से इकट्ठा कीं अच्छी खासी रकम और पढ़ा रहीं बच्चों को

सुलेखा देवी के पति रंजीत राम साइकिल पर गाँव–गाँव घूमकर बर्तन बेचते हैं। इससे होने वाली आमदनी से परिवार का खर्च चलता है। वह बताती है किसी भी जरूरत के वक्त वह अपने समूह से आसानी से पैसे ले लेती है।

समूह में एक सामन बचत करने से इसमें सबकी बराबर भागीदारी है। वह कहती है कि अगर वह बचत नहीं करती तो उन्हें आसानी से ऋण भी नहीं मिलता, जिससे आज उसने अपना व्यवसाय भुरू किया है। सुलेखा देवी का घर पहले केवल मजदूरी से चलता था। लेकिन अब बर्तन का व्यवसाय घर में आमदनी का प्रमुख स्रोत है। इसी पैसे से वह अपने 5 बच्चों, जिसमें 3 बेटी और 2 बेटे हैं, को पढ़ा रही है। बड़ी बेटी इन्टर की पढ़ाई कर रही है। वह मानती है कि छोटी बचत की आदत ने उसके परिवार को बड़ा आधार दिया है। वह केवल समूह में नियमित बचत के अलावा घर में भी अलग से कुछ पैसे बचा कर रखती है ताकि भविष्य में काम आए।

- ध10–10 रुपये की छोटी बचत से जमा कर ली बड़ी धनराशि
- धसमूह की महिलाएं बचत की राशि का करती हैं लेनदेन
- धसुलेखा देवी ने भी समूह से कर्ज लेकर पति को शुरू कराया रोजगार

समूह की महिलाएँ कर रहीं खातों का लेखांकन

लेखांकन दो या दो से अधिक व्यक्तियों या संस्थाओं के बीच वित्तीय लेन–देन को सुचारु रूप से चलाने और आपसी विश्वास बनाए रखने के लिए बेहद अहम है। लेखांकन से हम यह जान पाते हैं कि किसी संगठन या संस्था के पास रोजाना कितने रुपये की आमदनी हुई, कितने खर्च हुए और अंत में कितने रुपये हाथ में शेष बचे हैं। साथ ही इससे यह जानकारी भी प्राप्त होती है कि संस्था के पास कुल कितनी संपत्ति है और कुल कितना देयता है। संगठन/संस्था के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय निर्णय लेने या भविष्य के लिए योजना तैयार करने में आसानी होती है।

लेखांकन अब तक महज संगठित क्षेत्रों यथा सरकारी प्रतिष्ठानों, बड़े–बड़े संस्थानों, कॉरपोरेट जगत एवं प्रतिष्ठित गैर सरकारी संगठनों आदि का ही हिस्सा रहा है। लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित छोटे संगठनों या संस्थाओं अथवा छोटे निजी उद्यमों में अभी भी लेखांकन की सही पद्धति नहीं अपनाई जाती है, जिससे यहाँ वित्तीय लेन–देन एवं आय–व्यय का सही तरीके से हिसाब रखना मुश्किल होता है। ऐसा नहीं होने से इन संस्थानों या उद्यमों को पेशेवर नहीं कहा जा सकता है।

महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों में उनका वित्तीय लेन–देन का हिसाब–किताब लेखांकन पद्धति के अनुसार रखा जाता है। इसके लिए समूह की महिलाओं को लेखांकन पद्धति का प्रशिक्षण दिया जाता है। इस कार्य को पूरा करने के लिए परियोजना कर्मियों एवं सामुदायिक संगठकों को प्रशिक्षण के माध्यम से क्षमतावान बनाया जाता है। लेखांकन को जीविका के स्वयं सहायता समूहों एवं ग्राम संगठनों का अनिवार्य हिस्सा बनाया गया है। जीविका के पंचसूत्र में भी इस बात का उल्लेख है कि समूहों के वित्तीय लेनदेन का पूरा हिसाब–किताब लेखांकन पद्धति के अनुसार करना अनिवार्य होगा।

परियोजना के अंतर्गत स्वयं सहायता समूह का लेखांकन जीविका मित्र यानी कम्युनिटी मोबलाइजर (सी.एम.) द्वारा किया जाता है वहीं ग्राम संगठन में लेखांकन का काम बुक कीपर करते हैं। इसी तरह संकुल स्तरीय संघ (सी.एल.एफ.) में सभी तरह के खातों का लेखांकन मास्टर बुक कीपर के द्वारा किया जाता है। सामुदायिक कैडर के तौर पर काम कर रहीं अधिकांश महिलाएँ 8वीं से 12वीं तक पढ़ी लिखी हैं। जीविका ने सामान्य पढ़ी–लिखी महिलाओं को न केवल उनके घर में रोजगार उपलब्ध कराया है बल्कि प्रशिक्षण देकर इन्हें क्षमतावान भी बनाया है, जिससे उन्हें अपना भविष्य संवारने में भी मदद मिली है।

जीविका में बड़ी संख्या में सामुदायिक कैडर काम कर रहे हैं। इसमें कुल प्रशिक्षित सीएम की संख्या 1070 एवं प्रशिक्षित बुक कीपर 128 हैं। इसके अलावा प्रशिक्षित मास्टर बुक कीपर की संख्या 11 है। इन सभी पर स्वयं सहायता समूह से लेकर सीएलएफ स्तर तक सभी तरह की वित्तीय गतिविधियों का हिसाब–किताब लेखांकन पद्धति के अनुसार रखने की जिम्मेदारी होती है। इसके लिए इन्हें अलग–अलग तरह के बुक्स ऑफ रिकॉर्ड में लेखांकन करने की आवश्यकता होती है। इसमें प्रमुख रूप से रोकड़ बही, खाताबही, बचत पुस्तिका, ऋण पुस्तिका एवं अन्य सहायक पुस्तिकाएं जरूरत के अनुसार उपयोग में लायी जाती हैं। हालांकि समूह में रोकड़ बही के स्थान पर लेन–देन प्रपत्र यानी एल.डी.पी. उपयोग में लाए जाते हैं। चूंकि समूह की महिलाएँ आमतौर पर कम पढ़ी–लिखी होती हैं, ऐसे में रोकड़ बही में कुछ मूलभूत परिवर्तन किए गए हैं ताकि समूह स्तर पर लेखांकन करने में सी.एम. को कम से कम कठिनाई का सामना करना पड़े। इसीलिए इसका नाम रोकड़ बही न रखकर लेन–देन प्रपत्र रखा गया है।

सांगठनिक स्तर पर बेहद कम पढ़ी–लिखी और ग्रामीण परिवेश वाली महिलाओं के द्वारा इन तमाम बुक्स ऑफ रिकॉर्ड का लेखांकन अच्छी तरह किया जा रहा है। सामान्यतया वाणिज्य स्नातक भी इतने सुंदर तरीके से बुक्स ऑफ रिकॉर्ड का लेखांकन नहीं कर पाते हैं। लेकिन जीविका ने लगातार प्रशिक्षण दे कर इन महिलाओं को इतना क्षमतावान बनाया है कि ये न केवल समूह से लेकर सी.एल.एफ स्तर के बुक्स ऑफ रिकॉर्ड का लेखांकन कर रही हैं बल्कि किसी भी संस्था या संगठन के खातों का भी कुशल तरीके से लेखांकन करने में सक्षम हो गई हैं। सुपौल जिले में सीएम या बुक कीपर के तौर पर काम करने वाली ये महिलाएँ अधिकांशतः 8वीं से इन्टर तक पढ़ी–लिखी हैं। इसके बावजूद वे कुशलता से अपनी जिम्मेदारी निभा रही हैं।

लेखांकन में कार्यकुशलता

त्रिवेणीगंज प्रखंड के जदिया पंचायत में सीएम के तौर पर काम कर रहीं 22 वर्षीया कंचन कुमारी 11 स्वयं सहायता समूहों के लेखांकन का काम देखती है। जिस समय उसने जीविका में सीएम के तौर पर कार्य की शुरुआत की थी तब वह महज इन्टर पास थी। उन्हें लेखांकन के बारे में जरा भी अनुभव नहीं था। वह वाणिज्य विषयों से भी दूर रही थी। लेकिन जीविका में जुड़ने के बाद उन्हें लेखांकन का प्रशिक्षण दिया गया। इसके उपरान्त वह स्वयं सहायता समूह से जुड़ी सभी लेखांकन पुस्तिकाओं का लेखांकन करने में सक्षम हो गई है। आज वह कुशलतापूर्वक 11 समूहों का लेखांकन कार्य करती है।

कंचन कुमारी कहती है कि जीविका ने उन्हें इतना क्षमतावना बना दिया है कि वह न केवल जीविका के समूहों का बल्कि अन्य संस्थानों में भी लेखांकन का कार्य करने में सक्षम है। जीविका में जुड़ने के बाद उसमें आर्थिक आत्मनिर्भरता आई है। सीएम के तौर पर काम करने के बदले उसे जो मेहनताना मिलता है उससे वह अपनी आगे की पढ़ाई कर रही है। इस समय वह स्नातक दूसरे वर्ष की छात्रा है। स्नातक करने के बाद वह प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करना चाहती है। वह बताती है कि जीविका से मिल रहे पैसे से उसकी पढ़ाई का खर्च निकल जाता है।

लेखांकन के साथ संवारा भविष्य

त्रिवेणीगंज प्रखंड की सुचिता फ्रांसिस पिछले दो साल से जीविका में सीएम के पद पर कार्य़ कर रही है। वह प्ररेणा ग्राम संगठन के 11 स्वयं सहायता समूहों का लेखांकन कर रही है। सुचिता बताती है कि उन्हें पहले खाता–बही के लेखांकन का बिल्कुल अनुभव नहीं था। जिस समय वह जीविका से जुड़ी थी उस समय उसने कला विषयों से इन्टर तक की पढ़ाई की थी। ऐसे में उन्हें खातों के लेखांकन के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। लेकिन जीविका में प्रशिक्षण के बाद वह इस काम में दक्ष हो गई है। अब वह समुहों से जुड़ी ऋण पुस्तिका, बचत पुस्तिका, कार्यवाही पुस्तिका और लेनदेन प्रपत्र का लेखांकन आसानी से कर लेती है। फिलहाल वह इतिहास विषय से स्नातक कर रही है। उन्हें पढ़ाई के खर्च के लिए अब सोचना नहीं पड़ता है क्योंकि सीएम के तौर पर काम करने के बदले उन्हें हर महीने मानदेय मिलता है। इसी पैसे से वह आगे की भी पढ़ाई पूरी करेगी। वह कहती हैं कि जीविका में जुड़ने से उन्हें रोजगार के साथ–साथ बहुत कुछ सीखने का भी मौका मिला, जो भविष्य में उसके लिए काफी उपयोगी साबित हो सकती है।

लेखांकन कार्य में आयी दक्षता

त्रिवेणीगंज प्रखंड में जदिया पंचायत की चंपा कुमारी जून 2012 में बतौर सीएम जीविका से जुड़ी थी। वह दौलत जीविका महिला ग्राम संगठन के 11 स्वयं सहायता समूहों के लेखांकन का कार्य देखती है। जिस समय वह जीविका से जुड़ी उस समय वह महज 10वीं तक पढ़ी थी। वह बताती है कि पहले उन्हें लेखांकन का विल्कुल ज्ञान नहीं था। उन्हें वित्तीय लेनदेन का हिसाब–किताब रखने का भी कोई अनुभव नहीं था। लेकिन जीविका में सीएम के पद पर चयन के उपरान्त उन्हें क्रमानुसार सभी तरह का प्रशिक्षण प्राप्त हुआ। समूह के पंचसूत्र की जानकारी के अलावा इसके बैंठक की प्रक्रिया एवं नियमों की जानकारी मिली। इसके बाद समूह की तमाम गतिविधियों को दर्ज करने की विधि भी बताई गई। इस तरह की गतिविधियों में समूह की बैठक के अलावा हर तरह के वित्तीय लेनदेन का हिसाब–किताब रखना होता है। खास बात यह है कि ये हिसाब किताब लेखांकन पद्धति के अनुसार दर्ज करना होता है। चंपा भी पर्याप्त प्रशिक्षण के बाद लेखांकन कार्य करने में सक्षम हुई है। अब वह समूह से जुड़ी कार्यवाही पुस्तिका, बचत पुस्तिका, ऋण पुस्तिका, लेनदेन प्रपत्र आदि में सही ढंग से अंकों को दर्ज कर रही है। उन्हें यह काम करने में कोई दिक्कत नहीं होती। अब तो वह इतना सक्षम है कि वह किसी अन्य संस्थानों में भी लेखांकन का कार्य कर सकती है। जीविका से जुड़ने के बाद ही उन्होंने यह काम सीखा।

सामुदायिक स्वास्थ्य एवं पोषण सेवा केन्द्र (सी.एच.एन.सी.सी.)

प्रतापगंज और बसंतपुर प्रखंड में सी.एच.एन.सी.सी.

स्वस्थ समाज का निर्माण तभी हो सकता है जब महिलाएँ एवं बच्चे स्वस्थ होंगे। इसके लिए उन्हें कुपोषणमुक्त करना बेहद जरूरी है। लेकिन ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं एवं बच्चों में कुपोषण एक बड़ी समस्या के रूप में उभरकर सामने आई है। दरअसल उनके लिए भरपेट भोजन तक उपलब्ध नहीं हो पाता है तो फिर पोषक आहार मिल पाना तो दूर की बात है। इन्हीं चुनौतियों को देखते हुए जीविका के सहयोग से ग्राम संगठन के स्तर पर सामुदायिक स्वास्थ्य एवं पोषण सेवा केंद्र (सी.एच.एन.सी.सी.) खोले जा रहे हैं। यहाँ जीविका के स्वयं सहायता समूह से जुड़ी गर्भवती एवं धात्री महिलाओं और 07 से 24 माह तक के बच्चों को संतुलित एवं पोषक आहार उपलब्ध कराया जा रहा है।

सुपौल जिले में प्रतापगंज प्रखंड के भवानीपुर दक्षिण पंचायत में 25 मार्च 2015 को 2 सीएचएनसीसी केंद्रों का उद्घाटन करने के साथ ही गरीब महिलाओं व बच्चों को स्वस्थ बनाने की दिशा में कार्य किया जा रहा है। इन केंद्रों का उद्घाटन जीविका, सुपौल के जिला परियोजना प्रबंधक और प्रतापगंज की प्रखंड विकास पदाधिकारी के द्वारा किया गया। इसके बाद 27 एवं 31 मार्च को भी प्रखंड के सुरजापुर पंचायत के परसा बिरबल गाँव और गोंविंदपुर पंचायत के नारारी गाँव में 2–2 केंद्र शुरू किए गए। इस तरह प्रतापगंज और बसंतपुर में कुल मिलाकर 18 सी.एच.एन.सी.सी खुल चुके हैं।

तीन समय का भोजन

इन केंद्रों पर स्वयं सहायता से जुड़े लाभार्थियों को सुबह का नाश्ता समेत दोपहर एवं रात का भोजन उपलब्ध कराया जाता है। एक महिला को दिया जाने वाला सुबह का नाश्ता, दिन का भोजन एवं रात के खाने का औसतन खर्च 47 रुपये पड़ता है।

इसमें से 32 रुपये जीविका की ओर से और 5 रुपये ग्राम संगठन की ओर से अनुदान मिलता है। वहीं लाभार्थियों को भी 10 रुपये अंशदान करना होता है। गाँव की इन गर्भवती महिलाओं को महज 10 रुपये में तीन समय पोषक आहार उपलब्ध कराया जा रहा है। प्रत्येक केंद्र पर औसतन 30–40 महिलाओं का इसका लाभ मिल रहा है।

सीएचएनसीसी केंद्र खोलने का उद्देश्य

सी.एच.एन.सी.सी. केंद्र का मुख्य उद्देश्य गरीब समुदाय खासकर महिलाओं और बच्चों को कुपोषणमुक्त करना है। इसके तहत गर्भवती एवं बच्चों को दूध पिलाने वाली गरीब महिलाओं के लिए बेहद सस्ती दर पर पोषक आहार उपलब्ध कराया जाता है। इसके अलावा उन्हें स्वास्थ्य से जुड़ी अहम जानकारियां उपलब्ध कराई जाती हैं। बच्चों के टीकाकरण के आलावा स्वास्थ्य संबंधी सरकारी योजनाओं के प्रति उन्हें जागरूक करना भी इसके उद्देश्यों में शामिल है। जीविका सहेली सी.एच.एन.सी.सी. पर आने वाली महिलाओं को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करती है।

संचालन

सी.एच.एन.सी.सी. ग्राम संगठन की देख–रेख में काम करता है। दो ग्राम संगठन मिलाकर एक सी.एच.एन.सी.सी. खोले जाते हैं। इसमें से एक नोडल ग्राम संगठन होता है तो दूसरा सहायक। जीविका सहेली की निगरानी में केंद्र पर प्रत्येक दिन भोजन का इंतजाम किया जाता है। प्रत्येक केंद्र पर 02 रसोइये की भी नियुक्ति की गई है, जिन पर समय पर खाना तैयार करने की जिम्मेदारी होती है। इसमें लाभार्थियों की सूची ग्राम संगठन की बैठक में तय की जाती है। ग्राम संगठन को ही सूची में लाभार्थियों का नाम जोड़ने या घटाने का अधिकार होता है।

`खुले में शौच मुक्त` अभियान

हर घर में हो रहा शौचालय का निर्माण

ग्रामीण क्षेत्र को 'खुले में शौच मुक्त करने' के लिए अन्नपूर्णा जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ, सूखानगर प्रतापगंज ने जिला जल एवं स्वच्छता समिति के साथ एकरारनामा किया है। इसके तहत सूखानगर क्लस्टर के अंतर्गत तीन पंचायतों – सूखानगर, चिलौनी उत्तर, चिलौनी दक्षिण के सभी गाँवों के प्रत्येक परिवार के घर शौचालय का निर्माण किया जा रहा है। यह एकरारनामा अगस्त 2015 में किया गया था और इसके मुताबिक 11 महीने की अवधि में करीब 6071 व्यक्तिगत शौचालय का निर्माण करने का लक्ष्य है। अन्नपूर्णा जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ द्वारा जून 2016 तक चिलौनी उत्तर पंचायत में 668 परिवारों के घर शौचालय का निर्माण किया जा चुका है। इसके अलावा अन्य पंचायतों में शौचालय निर्माण का कार्य जोरों पर है।

अन्नपूर्णा जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ के अंतर्गत प्रत्येक ग्रामीण समुदाय के घर शौचालय के निर्माण का लक्ष्य है और इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए जीविका पूरे प्रयास के साथ काम कर रही है।

ऐसे सदस्य जिसके घर शौचालय का निर्माण किया जा चुका है, वे काफी उत्साहित हैं और गंदगी से मुक्ति पाने के अभियान में शामिल हो गए हैं। चिलौनी दक्षिण पंचायत में ज्यादातर घरों में पहले शौचालय नहीं था और घर के सभी सदस्यों को शौच के लिए बाहर का रुख करना पड़ता था। लेकिन इस गाँव में जीविका के प्रयास से शौचालय का निर्माण हो जाने से अब उन्हें घर के बाहर खुले मैदान में शौच के लिए नहीं जाना नहीं पड़ता। निश्चित रूप से इन परिवारों के लिए यह किसी वरदान से कम नहीं है। जीविका इस दिशा में काफी गंभीरतापूर्वक काम कर रही है और बिहार को स्वच्छ बनाने में अहम भूमिका निभा रही है।

जिन परिवारों के घर शौचालय का निर्माण किया गया, उनमें से कुछ तस्वीरें यहाँ प्रस्तुत की जा रही है।

`हमारा गाँव हमारी योजना'

ग्रामीणों की सहभागिता से बन रही गाँवों के विकास की योजना

ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार ने इस वर्ष आई.पी.पी.ई (सघन सहभागी नियोजन अभ्यास)–2 का आयोजन राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (जीविका), मनरेगा, इंदिरा आवास एवं पंचायती राज विभागों के साथ मिलकर किया। इस नियोजन अभ्यास के अन्तर्गत 10 जनवरी से 5 फरवरी 2016 तक सुपौल जिले के प्रत्येक गाँव में वार्ड स्तर पर वार्ड सभा का आयोजन किया गया। वार्ड सभा में बड़ी संख्या में ग्रामीण एकत्रित हुए और उन्होंने अपनी जरूरतों तथा प्राथमिकता के आधार पर गाँवों के समग्र विकास हेतु योजनाओं का चयन किया है। वार्ड सभा में चयनित इन योजनाओं को पंचायत स्तर पर ग्राम सभा द्वारा और उसके बाद प्रखंड स्तर पर पंचायत समिति द्वारा एवं जिला स्तर पर जिला परिषद् द्वारा पारित कर उपलब्ध संसाधनों को ध्यान में रखते हुए 5 वर्ष के लिए दीर्घकालिक और तत्काल 2 वर्ष के लिए वार्षिक योजना तैयार की गई।

दरअसल आई.पी.पी.ई–2 का मूल उद्देश्य गांवों के विकास के लिए योजना तैयार करना है। साथ ही यह सुनिश्चित करना है कि अपने–अपने गांव के लिए बन रही योजनाओं में प्रत्येक व्यक्ति एवं समुदाय सहभागी हों और वे अपनी जरूरतों के मुताबिक परियोजनाओं का चयन कर सकें ताकि उनका समुचित विकास हो सके। इस योजना के अन्तर्गत मनरेगा का श्रम बजट तैयार करने के अलावा गाँवों में जलापूर्ति, स्वच्छता, सड़कों पर रोशनी, कौशल विकास, आजीविका, वृद्धा पेंशन, विधवा पेंशन, विकलांग पेंशन, इंदिरा आवास, स्थानीय निकाय की सड़क, पौधारोपण, नाले का निर्माण आदि के लिए योजनाओं का चयन कर प्राथमिकता सूची के आधार पर वित्तीय वर्ष 2016–17 के लिए बजट निर्धारित किया गया है। इन योजनाओं के आधार पर ग्राम पंचायतों में बुनियादी सेवाओं को सुदृढ़ करने हेतु 14वें वित्त आयोग की अनुशंसा के आलोक में प्रत्येक पंचायतों को राशि उपलब्ध कराई जाएगी, जो गाँवों के विकास में अहम भूमिका निभाएगी।

सुपौल जिले में इस कार्यक्रम का सफल क्रियान्वयन हुआ है। जिले के सभी 11 प्रखंडों की 181 ग्राम पंचायतों में एक साथ सघन सहभागी नियोजन अभ्यास शुरू किया गया। इसके लिए प्रखंड स्तर पर प्रखंड नियोजन दल (बीपीटी) का गठन किया गया। आईपीपीई–2 के लिए पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के

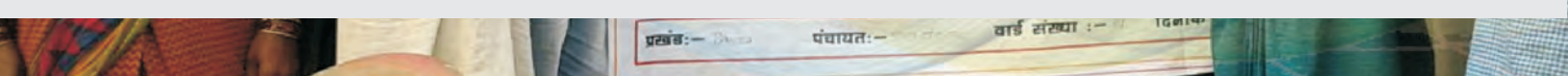

मुताबिक नियोजन अभ्यास हेतु पंचायतों के सभी वार्डों को कई चरणों में विभक्त किया गया। प्रत्येक चरण में सभी पंचायतों के 2–2 वार्डों में शामिल करते हुए तीन–तीन दिन नियोजन अभ्यास कार्यक्रम निर्धारित किया गया था।

निर्धारित कार्यक्रम के अनुरूप 10 जनवरी 2016 से जिले की सभी पंचायतों के वार्ड नंबर 1 एवं 2 में नियोजन अभ्यास की विधिवत शुरुआत कर दी गई। इस दिन बीपीटी सदस्यों ने दोनों वार्डों में परिभ्रमण करते हुए रिसोर्स मैपिंग और सोसल मैपिंग का काम पूरा किया। वार्ड में परिभ्रमण के दौरान बीपीटी सदस्यों द्वारा वार्डवासियों को ''हमारा गाँव, हमारी योजना'' की जानकारी देते हुए यह बताया गया कि गाँव के विकास हेतु योजनाओं के चयन में उनकी भूमिका सर्वोपरी है। इस

कार्यक्रम के माध्यम से ग्रामीण अपनी जरूरत के मुताबिक योजनाओं का निर्माण कर सकेंगे। दूसरे दिन यानी 11 जनवरी को बीपीटी सदस्यों के द्वारा संबंधित वार्ड में सार्वजनिक प्रपत्र भरने और सर्वे का कार्य किया गया। इसके बाद तीसरे दिन 12 जनवरी को सभी पंचायतों के वार्ड नंबर 1 एवं 2 में वार्ड सभा का आयोजन किया गया। इसमें बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने शिरकत की और योजनाओं के चयन में भागीदारी दिखाई।

इसी तरह 14 जनवरी से 16 जनवरी तक पुनः वार्ड संख्या 3 एवं 4 में नियोजन अभ्यास का कार्यक्रम शुरू हुआ। इस तरह 5 फरवरी तक जिले की सभी पंचायतों के सभी वार्डों में सघन सहभागी नियोजन अभ्यास कार्यक्रम पूरा कर लिया गया।

जीविका

बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति

विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, टैली/फैक्स : +91–612–250 4980/60